Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 15 अंक 46
लखनऊ, मंगलवार, 3 दिसम्बर 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ, नगर संस्करण

Established 1865

पायनियर

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

राष्ट्रीय 10

कर संग्रह में दखलंदाजी कम करने का प्रयास हो

संविधान पर चर्चा के लिए विपक्ष और सरकार सहमत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, अमित शाह, नितिन गडकरी, जेपी नड्डा और अन्य के साथ नई दिल्ली में संसद भवन में फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' की स्क्रीनिंग के दौरान।

दीपक कुमार झा। नई दिल्ली

पिछले सप्ताह संसद के शीतकालीन सत्र के शुरू होने के बाद से एक सप्ताह तक चली तीखी नोकझोंक के बाद, सोमवार को विपक्ष और सत्ता पक्ष ने गतिरोध को तोड़ने और 'सुचारू कामकाज के लिए काम करने' का संकल्प लिया है, जब तक कि किसी भी पक्ष की ओर से कोई नया उकसावा न दिया जाए। जिस दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सांसदों के एक समूह ने एनेक्सी में बॉलीवुड फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' की विशेष स्क्रीनिंग देखी, उस दिन दोनों पक्षों के नेता संविधान को अपनाए जाने के 75वें वर्ष के अवसर पर संसद में चर्चा के साथ गतिरोध को तोड़ने के करीब पहुंच गए।

यह सफलता स्पीकर ओम बिरला की विभिन्न दलों के नेताओं के साथ बैठक में मिली। विपक्षी दलों ने संविधान सभा द्वारा संविधान को अपनाए जाने की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर संसद के दोनों सदनों में चर्चा की मांग की थी। बैठक में शामिल हुए कई विपक्षी नेताओं ने भी इसी तरह की भावनाओं को दोहराया। कांग्रेस ने कहा कि मोदी सरकार ने संविधान पर दो दिवसीय विशेष चर्चा के लिए उसके अनुरोध को स्वीकार कर लिया है और उम्मीद है कि अब वह 'दोनों सदनों को काम करने देगी।' बिरला की अध्यक्षता में हुई बैठक में कांग्रेस के गौरव गोगोई, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) के टीआर बालू और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के कल्याण बनर्जी के अलावा संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू और मंत्रालय में उनके डिप्टी अर्जुन राम मेघवाल शामिल हुए। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने विश्वास जताया कि मंगलवार से दोनों सदनों में सुचारू रूप से काम होगा। सूत्रों ने बताया कि लोकसभा 13 और 14 दिसंबर को संविधान को अपनाने के 75वें वर्ष के अवसर पर चर्चा करेगी और राज्यसभा 16 और 17 दिसंबर को। विपक्ष द्वारा संभल हिंसा और मणिपुर जैसे अन्य मुद्दे उठाए जाने के बारे में पूछे जाने पर रिजिजू ने कहा कि नियमों के अनुसार निर्णय लिया जाएगा। कांग्रेस ने कहा कि मोदी सरकार ने संविधान पर दो दिवसीय विशेष चर्चा के लिए उसके अनुरोध को स्वीकार कर लिया है और उम्मीद है कि अब वह 'दोनों सदनों को काम करने देगी।' पार्टी ने आरोप लगाया कि सरकार नहीं चाहती कि संसद चले क्योंकि वह अडानी अभियोग, संभल हिंसा और मणिपुर अशांति जैसे मुद्दों पर चर्चा से भाग रही है।

अडाणी अभियोग विवाद, उत्तर प्रदेश के संभल में हाल ही में हुई हिंसा और अन्य मुद्दों पर विपक्षी सदस्यों के विरोध के बीच सोमवार को दोनों सदनों की कार्यवाही एक और दिन के लिए स्थगित कर दी गई। कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्ष ने नियमित संसदीय कार्यवाही को फिर से शुरू करने पर सहमति जताने से पहले संविधान सहित वांछित चर्चा के लिए तारीखों की आधिकारिक घोषणा की मांग की, वहीं समाजवादी पार्टी ने संभल का मुद्दा उठाने को कहा और टीएमसी लोकसभा में बांग्लादेश (शेष पृष्ठ 9)

एनसीआर में ग्रैप 4 अभी लागू रहेगा: सुप्रीम कोर्ट

राजेश कुमार। नई दिल्ली

दिल्ली में बीएस-3 पेट्रोल या बीएस-4 डीजल कार चलाने पर प्रतिबंध बृहस्पतिवार तक जारी रहेगा, क्योंकि सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने वायु गुणवत्ता सूचकांक के उच्च स्तर के बीच ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) के तहत प्रतिबंधों में ढील देने से इनकार कर दिया। अदालत ने पाया कि वायु गुणवत्ता के खतरनाक स्तर के बावजूद, जीआरएपी चरण 4 के तहत उल्लिखत उपायों के गंभीर प्रवर्तन की कमी रही है, जो तब शुरू होता है जब वायु गुणवत्ता खतरनाक स्तर तक गिर जाती है। कोर्ट बृहस्पतिवार को वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग द्वारा ढील के प्रस्ताव पर फैसला लेगा। कोर्ट ने दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु प्रदूषण के मुद्दे का स्थायी समाधान खोजने पर जोर देते हुए कहा कि हर साल अक्टूबर और दिसंबर के बीच ऐसी ही स्थिति पैदा होती है। इसने दिल्ली पुलिस को उन कोर्ट कमिश्नरों को सशस्त्र सुरक्षा प्रदान करने का निर्देश दिया जो दिल्ली-एनसीआर में जीआरएपी IV उपायों के कार्यान्वयन की निगरानी जारी रखना चाहते हैं।

विशेष रूप से, दिल्ली की वायु गुणवत्ता में सोमवार को लगातार दूसरे दिन मामूली सुधार हुआ, भले ही सुबह 280 के वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) के साथ यह खराब गुणवत्ता वाली रही। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी में रविवार को 285 एक्यूआई दर्ज किया गया, जो खराब श्रेणी में सुधार है, और लगातार 32 दिनों तक 'बहुत खराब' और 'गंभीर' वायु गुणवत्ता (400 से ऊपर एक्यूआई) के बाद एक स्वागत योग्य राहत है। जस्टिस अभय एस ओका और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने एनसीआर राज्यों के मुख्य सचिवों को 5 दिसंबर को वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश होने का निर्देश दिया, ताकि यह बताया जा सके कि प्रतिबंधों के कारण बिना काम के रहने वाले निर्माण श्रमिकों को कोई निर्वाह भत्ता दिया गया था या नहीं। पीठ ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में राज्यों द्वारा निर्माण श्रमिकों को मुआवजा देने में विफलता को गंभीरता से लिया, जिनकी आजीविका राष्ट्रीय राजधानी में वायु प्रदूषण संकट (शेष पृष्ठ 9)

महाराष्ट्र में सीएम के नाम की घोषणा कल

टीएन रघुनाथ। मुंबई

महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में महायुति को शानदार जीत दिलाने के बाद कई दिनों तक अनिश्चितता के माहौल के बाद सत्तारूढ़ भाजपा ने आखिरकार सोमवार को अपने काम को एक साथ करना शुरू कर दिया है। उसने अगले दिन होने वाले शपथ ग्रहण समारोह से पहले 4 दिसंबर को अपने विधायक दल की बैठक बुलाई है, जिसमें उसका नेता चुना जाएगा। हालांकि भाजपा ने अभी तक औपचारिक रूप से मुख्यमंत्री पद के लिए अपने उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है, लेकिन पार्टी के अनौपचारिक सूत्रों ने बताया कि पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने राज्य में शीर्ष पद के लिए अपने वरिष्ठ नेता और पूर्व सीएम देवेंद्र फडणवीस के नाम पर अपनी मुहर लगा दी है। महाराष्ट्र विधान भवन के केंद्रीय कक्ष में 4 दिसंबर को सुबह 10 बजे होने वाली बैठक में, फडणवीस को भाजपा विधायक दल (भाजपाएलपी) का नेता चुना जाएगा, जिससे 5 दिसंबर को महाराष्ट्र के अगले मुख्यमंत्री के रूप में उनके शपथ लेने का रास्ता साफ हो जाएगा।

भाजपा संसदीय बोर्ड गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री और पंजाब के लिए पार्टी के प्रभारी विजय रूपाणी और वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण को भाजपा एलपी बैठक के लिए केंद्रीय पर्यवेक्षक के रूप में भेज रहा है। भाजपा एलपी बैठक के बाद, सत्तारूढ़ महायुति के नेता - जिसमें भाजपा, शिवसेना (एकनाथ शिंदे) और एनसीपी (अजित पवार) शामिल हैं - महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से मिलेंगे और राज्य में नई सरकार बनाने का औपचारिक दावा पेश करेंगे।

भाजपा संसदीय बोर्ड गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को केंद्रीय पर्यवेक्षक के तौर पर भेज रहा है।

महाराष्ट्र पार्टी अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने 4 दिसंबर को भाजपा-एलपी नेता के चुनाव की पुष्टि करते हुए घोषणा की कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 5 दिसंबर को शाम 5 बजे ऐतिहासिक आजाद मैदान में आयोजित भाजपा-नीत महायुति सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद रहेंगे। भाजपा शपथ ग्रहण समारोह के लिए विभिन्न क्षेत्रों की प्रमुख हस्तियों को आमंत्रित कर रही है।

शपथ ग्रहण समारोह से पहले, फडणवीस, शिवसेना (ईएस) के एकनाथ शिंदे और अजित पवार (एपी) 4 दिसंबर की दोपहर को नई सरकार की बारीकियों पर चर्चा और औपचारिकता के लिए बैठक कर सकते हैं। शपथ ग्रहण समारोह में मुख्यमंत्री और दो उपमुख्यमंत्री पद और गोपनीयता की शपथ लेंगे, लेकिन यह अभी तय नहीं है कि 5 दिसंबर को होने वाले समारोह में भाजपा, शिवसेना (ईएस) और एनसीपी (एपी) से कितने मंत्री शपथ लेंगे। चूंकि महायुति घटकों के बीच कैबिनेट पोर्टफोलियो आवंटन से संबंधित मुद्दे हैं, जिन्हें सुलझाए जाने की आवश्यकता है, इसलिए तीनों नेताओं के शपथ ग्रहण समारोह के तुरंत बाद मिलने और मंत्रालय आवंटन को औपचारिक रूप देने की उम्मीद है। चूंकि महाराष्ट्र विधानसभा में 288 सदस्य हैं, इसलिए राज्य मंत्रिमंडल में अधिकतम 43 मंत्री हो सकते हैं - यह संख्या राज्य विधानमंडल के निचले सदन में कुल सदस्यों का 15 प्रतिशत है।

महायुति घटकों के बीच प्रमुख विभागों को हथियाने के लिए संघर्ष शुरू हो गया है। गृह, वित्त और योजना, राजस्व और शहरी विकास जैसे मंत्रालय राज्य मंत्रिमंडल में प्रमुख विभाग हैं। इन चार प्रमुख विभागों के अलावा, कृषि, उद्योग, जल संसाधन, वन, ग्रामीण विकास, ऊर्जा, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, महिला एवं बाल विकास तथा बहाना जैसे अन्य महत्वपूर्ण विभागों को लेकर महायुति के घटकों के बीच काफी सौदेबाजी होगी। अपनी ओर से, शिंदे राज्य के महत्वपूर्ण गृह मंत्रालय की मांग कर रहे हैं, एक ऐसा विभाग जो फडणवीस के पास था, जब वे पिछली एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली सरकार में उपमुख्यमंत्री थे। हालांकि, मुख्यमंत्री बनने के बाद भी फडणवीस गृह विभाग छोड़ने के लिए (शेष पृष्ठ 9)

सेंथिल बालाजी की कैबिनेट में वापसी पर सुप्रीम कोर्ट नाराज

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने डीएमके नेता वी सेंथिल बालाजी को तमिलनाडु में कैबिनेट मंत्री के रूप में बहाल करने पर चिंता व्यक्त की, कैश-फॉर-जॉब घोटाले से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में जमानत देने के कुछ ही दिनों बाद, और मामले में गवाहों की स्वतंत्रता पर आशंका जताने वाली याचिका की जांच करने पर सहमति व्यक्त की। जस्टिस अभय एस ओका और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की बेंच ने बालाजी की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी से पूछा, हमने आपको जमानत दी और कुछ दिनों बाद आप मंत्री बन गए। कोई भी इस धारणा के तहत बाध्य होगा कि अब वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री के रूप में आपकी स्थिति के कारण गवाह दबाव में होंगे। क्या हो रहा है? हालांकि, बेंच ने बालाजी को जमानत देने के सुप्रीम कोर्ट के 26 सितंबर के आदेश में हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया, जिसे रद्द करने की मांग करने वाली शिकायतकर्ताओं में से एक द्वारा दायर याचिका पर दिया गया था। पीठ ने स्पष्ट किया कि वह आदेश वापस नहीं लेगी क्योंकि सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्धारित कानून कई अन्य व्यक्तियों को लाभ पहुंचा रहा है। न्यायमूर्ति ओका ने आगे कहा कि अदालत इस मामले में कोई नोटिस जारी नहीं करेगी, लेकिन जांच का दायरा इस बात तक सीमित रखेगी कि क्या गवाहों पर मामले में गवाही देने के लिए 'दबाव' डाला गया था। पीठ ने अपने आदेश में लिखा, आशंका यह है कि दूसरे प्रतिवादी (बालाजी) के खिलाफ आरोपों की गंभीरता को देखते हुए, गवाह दूसरे प्रतिवादी के खिलाफ गवाही देने के मूड में नहीं हो सकते हैं, जो कैबिनेट मंत्री का पद संभाल रहे हैं। यह एकमात्र पहलू है जिस पर हम प्रथम दृष्टया आवेदन पर विचार करने के लिए इच्छुक हैं, और यह स्पष्ट करते हुए कि आवेदन के गुण-दोष और न्यायनिर्णयन पर निर्णय में हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं है, हम उपरोक्त तक ही सीमित हैं। इसके बाद इसने बालाजी के वकील राम शंकर से निर्देश प्राप्त करने को कहा और मामले की अगली सुनवाई 13 (शेष पृष्ठ 9)

एक होनहार जीवन का दुखद अंत

पीएनएस। हसन (कर्नाटक)

पुलिस ने सोमवार को बताया कि हसन जिले में अपनी पहली पोस्टिंग लेने जा रहे एक युवा भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) अधिकारी की दुर्घटना में मौत हो गई। उन्होंने बताया कि हर्ष वर्धन (26) कर्नाटक कैडर के 2023 बैच के आईपीएस अधिकारी थे और मध्य प्रदेश के रहने वाले थे। पुलिस ने बताया कि दुर्घटना रविवार शाम को हुई, जब हसन

तालुक के किट्टाने के पास पुलिस वाहन का टायर फट गया, जिसके बाद चालक ने नियंत्रण खो दिया और वाहन सड़क किनारे एक घर और एक पेड़ से टकरा गया। पुलिस के अनुसार, वर्धन होलेनरसीपुर में परिवीक्षाधीन सहायक पुलिस अधीक्षक के रूप में ड्यूटी पर रिपोर्ट करने के लिए हसन जा रहे थे। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि वर्धन के सिर में गंभीर चोटें आईं और इलाज के दौरान अस्पताल में उनकी मौत हो गई, जबकि (शेष पृष्ठ 9)

अकाल तख्त ने बादल को 'तनखैया' घोषित किया

पीएनएस। चंडीगढ़

अकाल तख्त पर सिख धर्मगुरुओं ने सोमवार को सुखबीर सिंह बादल को 2007 से 2017 तक पंजाब में शिरोमणि अकाली दल और उसकी सरकार द्वारा की गई 'गलतियों' के लिए 'तनखा' (धार्मिक दंड) सुनाया और उन्हें अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में 'सेवा' करने, बर्तन और जूते साफ करने का निर्देश दिया। अमृतसर में अकाल तख्त के 'फसील' (मंच) से आदेश सुनाते हुए सिखों की सर्वोच्च धार्मिक पीठ के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंह ने शिरोमणि अकाली दल (एसएडी) की कार्यसमिति को पार्टी प्रमुख के रूप में सुखबीर बादल का इस्तीफा स्वीकार करने के अलावा छह महीने के भीतर एसएडी अध्यक्ष और पदाधिकारियों के पद के लिए चुनाव कराने के लिए एक समिति बनाने का भी निर्देश दिया।

जत्थेदार ने सुखबीर बादल के पिता पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय प्रकाश सिंह बादल को दी गई 'फख्र-ए-कौम' की उपाधि वापस लेने की भी घोषणा की। पांचों सिंह साहिबानों ने 2007 से 2017 के दौरान अकाली मंत्रिमंडल में मंत्री रहे अन्य सिख नेताओं को भी धार्मिक दंड देने की घोषणा की। ज्ञानी रघबीर सिंह ने कहा कि पैर में फ्रैक्चर के कारण व्हीलचेयर पर बैठे सुखबीर बादल और बागी नेता सुखदेव सिंह ढींडसा को दो दिनों तक एक-एक घंटे के लिए सेवादारों की वेशभूषा में स्वर्ण मंदिर के बाहर बैठने को कहा गया है। वे तख्त केसगढ़ साहिब, तख्त दमदमा साहिब, मुक्तसर में दरबार साहिब और फतेहगढ़ साहिब में भी दो-दो दिन सेवा करेंगे। सुखबीर बादल और सुखदेव ढींडसा दोनों को एक घंटे तक स्वर्ण मंदिर में श्रद्धालुओं के बर्तन और जूते साफ करने और 'कीर्तन' सुनने को कहा गया है। आदेश सुनाए जाने से पहले सुखबीर बादल ने अपनी गलतियों को स्वीकार किया, जिसमें अकाली दल के शासनकाल के दौरान 2007 में ईशनिंदा मामले में डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह को माफ़ करना भी शामिल है। यह सजा सुखबीर बादल को अकाल तख्त द्वारा 'तनखैया' (धार्मिक दुराचार का दोषी) घोषित किए जाने के लगभग तीन महीने बाद आई है। जत्थेदार ने अकाली नेताओं सुच्चा सिंह लंगाह, हीरा सिंह गाबड़िया, बलविंदर सिंह भूंदर, दलजीत सिंह चीमा और गुलज़ार सिंह रानिके को स्वर्ण मंदिर में एक घंटे तक शौचालय साफ़ करने और फिर स्नान करने के बाद सामुदायिक रसोई में बर्तन साफ़ करने का निर्देश दिया। जत्थेदार ने कहा कि वे एक घंटे तक 'कीर्तन' भी सुनेंगे। बीबी जागीर कौर, प्रेम सिंह चंदूमाजरा, सुरजीत सिंह रखड़ा, बिक्रम सिंह मजीठिया, महेश इंदर सिंह ग्रेवाल, चरणजीत सिंह अटवाल और आदेश प्रताप सिंह कैरों समेत अन्य अकाली नेताओं को भी स्वर्ण मंदिर में एक घंटे तक शौचालय साफ करने को कहा गया। जत्थेदार ने 2007 से 2017 तक के पूरे अकाली मंत्रिमंडल, पार्टी की कोर कमेटी और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की 2015 की आंतरिक कमेटी को तलब किया था। चंदूमाजरा, कौर और अन्य सहित बागी पार्टी नेताओं द्वारा एक जुलाई को अकाल तख्त के समक्ष पेश होने और 2007 से 2017 के बीच शिअद शासन के दौरान की गई चार 'गलतियों' के लिए माफी मांगने के बाद बादल को 'तनखैया' घोषित कर दिया गया था, जिसमें 2015 की बेअदबी की घटनाओं के लिए जिम्मेदार लोगों को दंडित करने में विफलता और 2007 के ईशनिंदा मामले में गुरमीत राम रहीम सिंह को माफ करना शामिल है।

अकाल तख्त द्वारा 'तनखैया' मामले की सुनवाई के दौरान सुखबीर सिंह बादल और अन्य नेता।

पाक नेवी को मजबूत बना रहा चीन : एडमिरल त्रिपाठी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने सोमवार को कहा कि भारतीय नौसेना पाकिस्तान की नौसेना की 'आश्चर्यजनक वृद्धि' से अवगत है, जिसका लक्ष्य चीन की मदद से अगले दशक में 50 जहाजों वाली नौसेना बनना है। उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान ने अपने लोगों के कल्याण के बजाय हथियारों को चुना है। यहां यह दावा करते हुए नौसेना प्रमुख ने कहा कि अपनी अर्थव्यवस्था की स्थिति को देखते हुए पाकिस्तान अपनी नौसेना को मजबूत कर रहा है। उन्होंने कहा, पाकिस्तान ने अपने लोगों के कल्याण के बजाय हथियारों को चुना है, और चुटकी लेते हुए कहा, 'उन्हें शुभकामनाएं।' उन्होंने कहा, 'हम पाकिस्तानी नौसेना की आश्चर्यजनक वृद्धि से अवगत हैं, जिसका लक्ष्य 50 जहाजों वाली नौसेना बनना है।'

चीन द्वारा पाकिस्तान की समुद्री शक्ति को बढ़ाने में मदद करने पर नौसेना प्रमुख ने कहा कि यह उस देश को सैन्य रूप से मजबूत बनाने में बीजिंग की रुचि को दर्शाता है। उन्होंने कहा, चीनी समर्थन से पाकिस्तानी नौसेना के कई युद्धपोत और पनडुब्बियां बनाई जा रही हैं, जो दर्शाता है कि चीन पाकिस्तानी नौसेना

पत्रकारों को संबोधित करते नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी। फोटो: रंजन डिमरी

को मजबूत बनाने में रुचि रखता है। एडमिरल त्रिपाठी ने कहा, उनकी आठ नई पनडुब्बियों में पाकिस्तानी नौसेना के लिए महत्वपूर्ण युद्ध क्षमता होगी, लेकिन हम उनकी क्षमताओं से पूरी तरह अवगत हैं। इसलिए हम अपने पड़ोसियों से सभी खतरों से निपटने में सक्षम होने के लिए अपनी अवधारणाओं में बदलाव कर रहे हैं। चीन की बढ़ती शक्ति पर उन्होंने कहा कि उसने अपनी सही जगह घोषित कर दी है और उसके पास विश्व शक्ति बनने के लिए प्रयास करने के लिए संसाधन हैं। नौसेना प्रमुख ने कहा कि एक बार ऐसा होने पर, मौजूदा विश्व शक्तियों के साथ टकराव होता है और यह पहले से ही चल रहा है, उन्होंने कहा कि यह प्रशांत क्षेत्र में प्रकट होगा। हिंद महासागर क्षेत्र के संबंध में उन्होंने कहा कि (शेष पृष्ठ 9)

दिल्ली एयरपोर्ट कोहरे से निपटने को तैयार

राजेश कुमार। नई दिल्ली

इस सर्दी में कोहरे को देखते हुए दिल्ली एयरपोर्ट ने पहली बार यात्रियों के लिए विशेष व्यवस्था की है। यात्रियों की फ्लाइट में देरी होने की स्थिति में उनके आराम के लिए विशेष लाउंज बनाए गए हैं। दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (डायल), जो तीन (टी1, टी2, टी3) टर्मिनलों के साथ इंदिरा गांधी इंटरनेशनल (आईजीआई) एयरपोर्ट का संचालन और प्रबंधन करता है, ने तीन घंटे से अधिक देरी से आने वाली फ्लाइट से उतरने वाले यात्रियों के लिए विशेष लाउंज बनाए हैं, ताकि वे अपनी संबंधित फ्लाइट में जल्दी से जल्दी वापस आ सकें। डायल के

अनुसार, ये बाड़े टर्मिनल 3 में बस बोर्डिंग गेट और कुछ एयरोब्रिज, टर्मिनल 2 में ट्रांसफर एरिया और टर्मिनल 1 में बस बोर्डिंग गेट पर लगाए जाएंगे। ये सुविधाएं घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों यात्रियों को मिलेंगी। नई योजना यात्रियों को अलग लाउंज में रहने की अनुमति देगी, जिससे समय की बचत होगी और यात्रियों और एयरलाइन कर्मचारियों दोनों के लिए परेशानी कम होगी।

सरकार ने हवाई अड्डों पर सुरक्षा प्रोटोकॉल में ढील दी है, ताकि कोहरे, मौसम या तकनीकी समस्याओं के कारण तीन घंटे से अधिक देरी से चलने वाली या रद्द की गई उड़ानों के यात्रियों को विमान से उतरने और टर्मिनल पर वापस लौटने की अनुमति मिल सके। डायल ने एक बयान में कहा, 250 से 450 वर्ग मीटर तक के इन लाउंजों में एक बार में 55 से 120 यात्री रह सकेंगे। इनका उद्देश्य सुरक्षा जांच की सुविधा प्रदान करना है, जिससे यात्री टर्मिनल के सुरक्षा होल्ड एरिया (एसएचए) में आसानी से प्रवेश कर सकें। इन बाड़ों में जहाँ भी संभव हो, शौचालय और वेंडिंग मशीन जैसी आवश्यक सुविधाएँ होंगी। बाड़ों का उपयोग केवल सुरक्षा प्रसंस्करण लाउंज के रूप में किया जाएगा, जिसके बाद यात्री एसएचए में प्रवेश करेंगे, जिससे यात्रियों को वहाँ उपलब्ध सभी सुविधाओं तक पहुँच प्राप्त होगी। सुरक्षा कारणों से केवल फंसे हुए विमानों से यात्रियों को ले जाने वाले एयरलाइन कर्मचारियों को ही लाउंजों में प्रवेश करने की अनुमति होगी। सुरक्षा और संरक्षा बनाए रखने के लिए, कर्मियों को लाउंजों में तैनात किया जाएगा, ताकि विलंबित या फंसे हुए विमानों से लौटने वाले यात्रियों की जांच की जा सके, इससे पहले कि उन्हें एसएचए में अन्य जांचे गए यात्रियों के साथ जाने की अनुमति दी जाए। इसके अतिरिक्त, निजी सुरक्षा एजेंसी के कर्मचारी कोहरे/के मौसम या तकनीकी समस्याओं (शेष पृष्ठ 9)

पार्किंग विवाद के खुन्नस में फूंकी कार

सौम्या शुक्ला। नई दिल्ली

दक्षिण-पूर्वी दिल्ली के लाजपत नगर में एक नियमित पार्किंग विवाद ने आगजनी की एक चौंकाने वाली घटना को जन्म दिया, जब एक व्यक्ति की कार में आग लगा दी गई, कथित तौर पर उसके बहुत दोस्ताना पड़ोसी ने। पुलिस ने राष्ट्रीय राजधानी से 600 किलोमीटर दूर उत्तर प्रदेश के अमेठी में 28 वर्षीय संदिग्ध को खोज निकाला। पीड़ित के अनुसार, यह उग्र हमला धमकियों के सिलसिले का नतीजा था, और उसका मानना है कि अगर वह घटनास्थल पर होता, तो उसकी जान भी खतरे में पड़ सकती थी।

पीड़ित 48 वर्षीय रंजीत सिंह, एक उर्दू कवि, पाकिस्तान से शांति पुरस्कार विजेता और सांस्कृतिक

संगठन 'जश्न-ए-अदब' के संस्थापक के अनुसार, आरोपी पिछले दो वर्षों से उसे परेशान और धमका रहा है। सिंह ने बताया कि पुलिस को कई शिकायतें करने के बावजूद अधिकारी आरोपी राहुल भसीन को जमानत पर रिहा कर देते थे। यह मामला तब गरमाया जब इलाके के कुछ लोग सिंह से खुश नहीं थे क्योंकि उन्होंने पुलिस से शिकायत की थी कि वे रात में शराब पीकर इलाके में घूमते हैं। सिंह ने बताया, 'मैं इस इलाके में करीब दो दशक से रह रहा हूं और आरोपी दो साल पहले यहां आया था। उसके मकान मालिक और अन्य लोगों ने उसे मेरे खिलाफ भड़काया। उन्होंने उसे अपनी कार मेरे सामने पार्क करने को कहा। जब मैं 13 जुलाई को आया तो पार्किंग में मेरी कार उसकी कार से थोड़ी सी टकरा गई। हालांकि, उसके भाई ने जल्दी ही मेरे साथ इस मामले को सुलझा लिया और मैं किसी भी तरह के नुकसान की भरपाई करने के लिए भी तैयार हो गया।' हालांकि, इसके बाद घटनाक्रम तब और खराब हो गया जब भसीन ने सिंह की दो खड़ी कारों को रॉड से क्षतिग्रस्त कर दिया। उन्होंने बताया कि एफआईआर दर्ज की गई जिसके बाद उसे 14 अगस्त को गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन दो घंटे बाद (शेष पृष्ठ 9)

जल जीवन मिशन की परियोजनाओं का थर्ड पार्टी सत्यापन कराएं

● सीएम योगी ने कहा- हर प्रोजेक्ट पर नियुक्त हो नोडल अधिकारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जल जीवन मिशन के अंतर्गत हर घर नल से जल पहुंचाने की परियोजना के कार्यों के थर्ड पार्टी ऑडिट कराने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि हर परियोजना के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किये जायें जो स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ समन्वय बनाकर सभी काम समय से पूरा कराएं। सोमवार को हर घर जल योजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि जल जीवन मिशन जनहित से जुड़े इन कार्यों की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं होना चाहिए। जलापूर्ति के कार्यों के चलते खराब हुई सड़कों के रिस्टोरेशन का काम समय से कराया जाए और जनप्रतिनिधियों से भी आवश्यक मार्गदर्शन लिया जाए। इस आधार पर ही विभागीय अधिकारियों की जवाबदेही तय होगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि योजनाओं में क्वालिटी हर हाल में सुनिश्चित हो। इसका थर्ड पार्टी सत्यापन भी कराया जाए। साथ ही हर प्रोजेक्ट पर नोडल अधिकारी नियुक्त हों, जो कार्यों की क्वालिटी व समयबद्धता सुनिश्चित करे। जल जीवन मिशन के तहत परियोजना का उद्देश्य है कि लोगों को शुद्ध पेयजल प्राप्त हो, ऐसी सभी योजनाएं बिना रूकावट के अनवरत चलती रहनी चाहिए। बैठक में मुख्यमंत्री ने बुंदेलखंड व विंध्य क्षेत्र सहित पूरे प्रदेश में जल जीवन मिशन के कार्यों के बारे में जानकारी ली। बैठक में जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, राज्यमंत्री रामकेश निषाद आदि मौजूद रहे।

जल जीवन मिशन के तहत स्वीकृत हैं 40951 योजनाएं मुख्यमंत्री को जल जीवन मिशन के अंतर्गत सामुदायिक अंशदान के संबंध में अवगत कराया गया कि जल जीवन मिशन के तहत 40951 योजनाएं स्वीकृत हैं। इनकी कुल कार्य लागत 152521.82 करोड़ रुपये है। इसमें केंद्रांश 71714.68 व राज्यांश 71714.68 करोड़ रुपये है। इन विलेज इंफ्रास्ट्रक्चर की लागत के सापेक्ष सामुदायिक अंशदान 9092.42 करोड़ रुपये बनता है। अधिकांश योजनाओं को सोलर आधारित बनाए जाने के कारण कुल लागत में 13344 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है। इसके सापेक्ष केंद्रांश के रूप में 6338 करोड़ रुपये अतिरिक्त रूप से प्राप्त होगा।

अनुरक्षण व संचालन मद में राज्य सरकार की योजना काल में लगभग एक लाख करोड़ रुपये की बचत होगी। उत्तर प्रदेश में सौर ऊर्जा पर आधारित हैं 33229 योजनाएं मुख्यमंत्री को अवगत कराया गया कि उत्तर प्रदेश में 33229 योजनाएं सौर ऊर्जा पर आधारित हैं। इन पर लगभग 900 मेगावाट के सोलर पैनल लगाए गए हैं। केंद्र सरकार द्वारा इस इनोवेशन को बेस्ट प्रेक्टिसेज के रूप में चिह्नित किया गया है। सौर ऊर्जा आधारित योजनाओं के निर्माण के कारण प्रतिवर्ष लगभग 13 लाख मीट्रिक टन कार्बन डाई ऑक्साइड (सीओ 2) का उत्सर्जन कम होगा।

13 वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों के तबादले

लखनऊ। प्रदेश सरकार ने बड़ा फेरबदल करते हुए 13 वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों के तबादले कर दिए। एडीजी, आईजी और डीआईजी स्तर के अधिकारी शामिल हैं। डीजीपी के जीएसओ डॉ.एन रविन्दर को एडीजी भ्रष्टाचार निवारण संगठन, गृह सचिव एडीजी डॉ. संजीव गुप्ता को एडीजी स्थापना के साथ डीजीपी के जीएसओ का अतिरिक्त प्रभार मिला है। आईजी मेरठ नचिकेता झा को गृह सचिव बनाया गया है। आईजी बस्ती आरके भारद्वाज को आईजी भवन कल्याण, लखनऊ के जेसीपी क्राइम आकाश कुलहरि को आईजी लोक शिकायत पद पर भेजा गया है। लोक शिकायत के डीआईजी अमित पाठक को डीआईजी देवी पाटन रेंज, गोंडा बनाया गया है। डीआईजी अमरेन्द्र प्रसाद को डीआईजी अभिसूचना, गाजियाबाद के एसीपी दिनेश कुमार पी. को डीआईजी बस्ती, नोएडा के एसीपी मुख्यालय बबलू कुमार को जेसीपी क्राइम लखनऊ, आगरा के एसीपी केशव चौधरी को डीआईजी झांसी, डीआईजी अभिसूचना संजीव त्यागी को आगरा का एसीपी,डीआईजी झांसी कलानिधि नैथानी को डीआईजी मेरठ व 32वीं वाहिनी पीएसी लखनऊ के सेनानायक अजय कुमार को नोएडा का एसीपी मुख्यालय का प्रभारी बनाया है।

जीरो पावर्टी उप्र अभियान पूरे देश के लिये होगा मॉडल: मनोज कुमार सिंह

● मुख्य सचिव ने समस्त खण्ड विकास अधिकारियों एवं पंचायत सहायकों के साथ बैठक कर अभियान के बारे में जागरूक किया

लखनऊ। मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह ने वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से जीरो पावर्टी उत्तर प्रदेश अभियान के सम्बन्ध में प्रदेश के समस्त खण्ड विकास अधिकारियों (बीडीओ) एवं पंचायत सहायकों के साथ बैठक कर अभियान के बारे में जागरूक किया और आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। मुख्य सचिव ने जीरो पावर्टी उत्तर प्रदेश अभियान के बारे में जागरूक करते हुए कहा कि देश में पहली बार इस तरह का प्रयास किया जा रहा है। इस अभियान के सफलतापूर्वक क्रियान्वित होने पर यह पूरे देश के लिये मॉडल होगा। इस अभियान का प्रभाव पूरी ग्राम पंचायत पर पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि अभियान के तहत पात्र व्यक्तियों का चिन्हांकन हो और डाटा त्रुटिरहित हो इसके लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जा रहा है। एन्युमेरेशन का कार्य बगैर मौके पर जाये नहीं किया जा सकता है। एन्युमेरेटर द्वारा पोर्टल पर लाभार्थी के साथ उसके घर की फोटो भी अपलोड करनी होगी। उन्होंने कहा कि सभी एन्युमेरेटर द्वारा इस अभियान में अपेक्षित सहयोग किया जाये और एन्युमेरेशन का कार्य तेजी से पूरा कराया जाये। एन्युमेरेशन के दौरान लिये जाने वाले फोटोग्राफ्स की गुणवत्ता अच्छी होनी चाहिये। उन्होंने कहा कि सभी खण्ड विकास अधिकारियों द्वारा मोप अप एप के जरिए एन्युमेरेटर की गतिविधियों की निगरानी रखी जाये। माप अप एप का एक्सेस सभी खण्ड विकास अधिकारियों को दिया गया है। इसके जरिए वह प्रत्येक ग्राम पंचायत में अभियान के तहत कितना कार्य हुआ और कितना अवशेष हैं, देख सकते हैं। इस एप के द्वारा खण्ड विकास अधिकारी कार्य न करने वाले एन्युमेरेटर को सीधे कॉल भी कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि लगभग 01 लाख 22 हजार एन्युमेरेटर द्वारा पोर्टल पर लॉगिन किया जा चुका है और लगभग 20 हजार ग्राम पंचायतों में इनके द्वारा लगभग 42 हजार परिवारों को चिन्हित भी किया जा चुका है। लगभग 90 हजार परिवारों के चयन की कार्यवाही अलग-अलग स्तर पर प्रक्रियाधीन है। बैठक में प्रमुख सचिव पंचायतीराज नरेन्द्र भूषण, ग्राम्य विकास आयुक्त गौरी शंकर प्रियदर्शी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण आदि उपस्थित थे।

बांग्लादेश के ताजा घटनाक्रम पर केंद्र की चुप्पी पर प्रमोद तिवारी ने की मोदी सरकार की आलोचना

लखनऊ। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने बांग्लादेश में ताजा घटनाक्रम के तहत हिन्दू मंदिरों में तोड़फोड़ तथा हिंसा की घटना पर केन्द्र की मोदी सरकार की लगातार चुप्पी की तल्ख आलोचना की है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय के साथ अन्य अल्पसंख्यक भारतीय पूरी तरह से असुरक्षित है। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भाजपा की केन्द्र सरकार बांग्लादेश समेत हाल ही में कनाडा, ब्रिटेन तथा अमेरिका में भी हिंदू मंदिरों पर हमले के मामले में प्रतिरोध को लेकर कमजोर प्रदर्शन से विदेशों में रह रहे भारतीयों की रक्षा करने मं अक्षम साबित हो रही है। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि बांग्लादेश में लगातार हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियां तोड़ी जा रही है फिर भी मौजूदा केन्द्र सरकार भारतीयों की चिन्ता दूर करने को लेकर कोई भी ठोस प्रयास नहीं कर पा रही है। उन्होंने पीएम मोदी पर तंज कसा कि वह बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदूओं समेत भारतीयों को अपमान के कड़वे घूंट पीने की विवशता से बाहर निकालने के लिए इन्दिरा गांधी की समाधि पर जायें और उन्नीस सौ इकहत्तर के शौर्य से प्रेरणा लें। उन्होंने कहा कि इस काम के सन्यासी चिन्मय कृष्ण दास की अनुचित गिरफ्तारी को लेकर भी मोदी सरकार की कमजोर विदेशनीति के चलते वैश्विक समर्थन की प्रक्रिया मंद पड़ी हुयी है। वहीं राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कार्मिशयल गैस सिलेण्डर के दामों में फिर बढ़ोत्तरी को लेकर भी मोदी सरकार की तगड़ी घेराबंदी की है। उन्होंने कहा है कि पिछले कई माह से लगातार कार्मिशयल गैस सिलेण्डर के दामों में सरकार महंगाई में वृद्धि पर आमादा है। उन्होंने कहा कि कार्मिशयल गैस के दामों में ऊंची मूल्य बढ़ोत्तरी आम उपभोक्ताओं के समूह पर महंगाई का हमला है। उन्होंने कहा कि इससे व्यापार के क्षेत्र में भी महंगाई और बढ़ेगी तथा इसकी कीमत देश के आम वर्ग को चुकानी पड़ेगी।

विश्वास के साथ विकास करना सरकार की प्राथमिकता: केशव प्रसाद मौर्य

लखनऊ। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सोमवार को विकास कार्यों एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा बैठक आहूत की गई। विकास कार्यों की समीक्षा करते हुये अधिकारियों को उप मुख्यमंत्री द्वारा निर्देशित किया गया कि वह जनप्रतिनिधियो के साथ समय-समय पर बैठक कर एवं समन्वय बनाते हुये बताये गये कार्यों को प्राथमिकता दी जाये। प्रभारी मंत्री द्वारा की गई समीक्षा बैठक में दिये गये निर्देशो का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कराते हुये आख्या प्रस्तुत की जाये। उन्होने कहा कि विश्वास के साथ विकास करना हमारी सरकार की प्राथमिकता है, उसी के अनुरूप कार्यवाही की जाये। इस अवसर पर जनपद में समस्त विभागो द्वारा किये गये कार्यों की उप मुख्यमंत्री जी द्वारा सराहना की गई।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश का सर्वांगीण विकास हो रहा है।विश्वास के साथ विकास करना सरकार की प्राथमिकता है।उत्तर प्रदेश में प्रगति के नये आयाम स्थापित हो रहे हैं।सरकार प्रत्येक वर्ग के विकास हेतु पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। स्वच्छता अभियान के अंतर्गत विभागीय अधिकारी पहले एवं अंतिम रविवार को सफाई अभियान चलायें। नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रो में गरीब एवं पात्र लाभार्थियो को सरकार की योजनाओ का भरपूर लाभ दिलाया जाये।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार प्रत्येक वर्ग के विकास हेतु प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। कहा प्रधानमंत्री के द्वारा उल्लिखित समाज के चार वर्गों के उत्थान व विकास हेतु लगातार कार्यवाही की

जा रही है। समस्त अधिकारी इसको ध्यान में रखते हुये और अच्छा क्या हो सकता है, प्लॉनिंग बनाते हुये कार्यवाही सुनिश्चित करें। जनपद में सीएसआर फंड से समूह की महिलाओ द्वारा फूलो की खेती कराये जाने के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराते हुये बताया गया कि समूह दीदी को लखपति दीदी बनाया गया है, जिस पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि इस प्रकार की योजनाओ से महिला समूहो को सशक्त करने हेतु कार्यक्रम को आगे बढाया जाये तथा जनपद में किये गये इस प्रकार के नवाचार से शासन को रिपोर्ट भेजते हुये अवगत करायें।

उन्होंने कहा कि नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रो में गरीब एवं लक्षित लाभार्थियो को सरकार की योजनाओ का लाभ दिलाया जाये। पीएम आवास शहरी योजना की समीक्षा की जाये तथा लाभार्थियो को लाभ दिलाया जाये। यदि किसी भी स्तर पर गडबडी संज्ञान में आती तो जांच कर एंटी करप्शन टीम के माध्यम से कार्यवाही की जाये। शहरी एवं नगरीय क्षेत्र में अमृत सरोवर को पूर्व स्वरूप में लाया जाये, जहां भी अतिक्रमण है ,उस पर कार्यवाही की जाये। घरौनी वितरण कार्यक्रम के अंतर्गत कहीं पर भी गलती हुई है, तो उसको सुधारा जाये और इसके लिए जिम्मेदारी सुनिश्चित करें।

हर घर नल से जल योजना अंतर्गत पाईप लाईन बिछाये जाने के कार्य के पश्चात् सड़क मरम्मत ठीक से न करने की शिकायते मिलती रहती है, इसको गंभीरता से लेते हुये कार्यवाही की जाये। उन्होने कहा कि ऐसा कोई प्लॉन तैयार करें ,कि जो फर्म कार्य कर रही है, वह मरम्मत के लिए पैसा जिस विभाग की सड़क है उसको दें और वही विभाग उस सड़क को ठीक कराये। इस प्रकार के मॉडल की शुरूआत मेरठ से की जा सकती है, इस हेतु आवश्यक कार्यवाही की जाये। प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से देशव्यापी स्वच्छता अभियान लगातार चल रहा है तथा जनपद स्तर पर भी स्वच्छता कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित होते है, सभी विभागीय अधिकारी जनपद स्तर पर पहले एवं अंतिम रविवार को सफाई अभियान कार्यक्रम चलाये। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रयागराज के संगम तट पर दिव्य, भव्य एवं स्वच्छ महाकुंभ का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के नेतृत्व में महाकुंभ की समग्र रूप से तैयारी की जा रही है, जनपद से समूह दीदी एवं अन्य लोगो की सहभागिता सुनिश्चित कराने हेतु प्लॉनिंग की जाये तथा जनपद स्तर पर महाकुंभ का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाये। बैठक में जनपद की शांति एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा करते हुये आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिये।

भाजपा सरकार ने किसानों को धोखा दिया है:अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार ने किसानों को धोखा दिया है। किसानों से झूठे वादे किये, छल किया। भाजपा की नीतियां किसान विरोधी और पूंजीघरानों की पोषक हैं। अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने किसानों की जमीन और फसलों को लूटा है। किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई है। फसलों की सही कीमत भी नहीं मिल रही है। देश के विभिन्न भागों में तमाम योजनाओं के लिए किसानों की जमीनों का अधिग्रहण होता है लेकिन सरकार उन्हें बाजार के अनुसार लाभप्रद कीमत नहीं देती है। उन्होंने कहा कि भाजपा किसानों की जमीन छीन कर औद्योगिक घरानों को औने-पौने दामों पर दे देती है। यही दशा किसानों की फसलों की है। किसानों की फसल सस्ते में खरीद कर मुनाफा में ऊंची कीमत पर बेची जाती है। भाजपा सरकार अपने करीबी उद्योगपतियों और व्यापारियों को मुनाफा कमाने का अवसर प्रदान करती है। उत्तर प्रदेश में किसानों का बुरा हाल है। लगातार बढ़ती महंगाई से खेती की लागत बढ़ गयी हैं। सरकार किसानों को खाद और बीज भी नहीं दे पा रही है। पूरे प्रदेश में डीएपी खाद की भारी कमी है। इस कमी के लिए भाजपा सरकार जिम्मेदार है। प्रदेश के हर जिले में खाद की कालाबाजारी हो रही है। भाजपा नेताओं ने समितियों में अपना कब्जा कर खाद की कालाबाजारी और मुनाफाखोरी की। किसान लम्बी-लम्बी लाइनों में खड़े रहते है। फसलों की बुआई के लिए खाद नहीं मिली। भाजपा सरकार हर स्तर पर किसानों का शोषण कर रही है। जब किसान महंगी खाद, महंगी जुताई, महंगी बुआई, महंगी सिंचाई और महंगे कीटनाशक डाल कर फसल तैयार करता है तब उसकी फसल का लाभकारी मूल्य उसे नहीं मिलता है। अखिलेश ने कहा कि इन दिनों किसान धान को लेकर परेशान है। धान खरीद नहीं हो रही है। सरकार ने गन्ना मूल्य नहीं घोषित किया। भाजपा सरकार में किसान सबसे ज्यादा परेशान है। भाजपा की शोषणकारी नीतियों से त्रस्त किसान 2027 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से हटाकर अपने अपमान और शोषण का बदला लेने को संकल्पित है।

किसान पशुपालकों को उनके दुग्ध मूल्य का नियमित भुगतान किया जाए: धर्मपाल सिंह

● महाकुंभ मेला 2025 में पराग का स्टाल लगाया जाए

लखनऊ। पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि महाकुंभ मेला 2025 में पराग का स्टाल लगाया जाए और गौजन्य पदार्थों से निर्मित वस्तुओं का प्रचार-प्रसार भी किया जाए। सिंह ने कहा कि विभाग के लिए सुनहरा अवसर है महाकुंभ के पावन अवसर पर विभाग अपनी उपयोगिता की सार्थकता को सिद्ध करे और वहां के श्रद्धालुओं को पराग के शुद्ध और स्वादिष्ट दूध, दही, लड्डू, मक्खन और अन्य पदार्थ सुलभ करा सके। पराग के उत्पादों की पर्याप्त व्यवस्था की जाए। सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश को श्वेत क्रांति की ओर अग्रसर करना अब हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

पशुधन मंत्री ने ये निर्देश सोमवार को विधान भवन स्थित अपने कार्यालय कक्ष में विभागीय कार्यों के क्रियान्वयन की समीक्षा की। सिंह ने निर्देश दिए कि दुग्ध उत्पादन बढ़ाकर 05 लाख लीटर प्रतिदिन किया जाए। दुग्ध विकास विभाग का लक्ष्य प्रदेश की जनता को शुद्ध दूध उपलब्ध कराना है और दुग्ध उत्पादन से जुड़े किसानों, पशुपालकों को उनके दुग्ध मूल्य का नियमित रूप से भुगतान कराना प्राथमिकता है। सिंह ने विभागीय अधिकारियों को बंद पड़ी दुग्ध समितियों को पुन: चालू किये जाने और वर्तमान में संचालित समितियां किसी भी कारण से बंद न किये जाने पर विशेष बल दिया। सिंह ने कहा कि नन्द बाबा एवं गोकुल पुरस्कार के वित्तीय वर्ष 2023-24 के लाभार्थियों की चयन सूची तैयार कर उन्हें पुरस्कृत करने की कार्यवाही शीघ्र पूरी की जाए। दुग्ध विकास मंत्री ने कानपुर, गोरखपुर और कन्नौज डेयरी प्लांट का संचालन एनडीडीबी को दिये जाने के संबंध में हुई प्रगति की भी समीक्षा की और कहा कि जो भी औपचारिकताएं शेष या अपूर्ण हैं, उन्हें शीघ्र पूरा किया जाए।

भाजपा केवल सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीति नहीं करती: विनोद तावड़े

● प्रदेश चुनाव पर्यवेक्षकों की कार्यशाला में 30 दिसम्बर तक सभी जिलाध्यक्षों का चुनाव कराने पर बनी संहमति

लखनऊ। भाजपा संगठन पर्व-2024 की प्रदेश चुनाव पर्यवेक्षकों की कार्यशाला में उत्तर प्रदेश के केन्द्रीय पर्यवेक्षक और राष्ट्रीय महामंत्री विनोद तावड़े ने सोमवार को कहा कि, भाजपा संगठन के विस्तार एवं वैचारिक मजबूती का आधार निष्ठापूर्वक संगठन के चुनाव में अपनाये रखना है जिससे भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना किया जा सके। हमारा प्रयास रहे कि भाजपा का दर्शन, सिद्धांत एवं वैचारिक अधिष्ठान का आग्रह लोगों तक पहुंचे। भाजपा के संविधान के अनुसार नियमों के तहत आम सहमति से चुनावों में युवा वर्ग को संगठन विस्तार में अहम् भूमिका में लाया जाये। प्रदेश भाजपा मुख्यालय में आयोजित बैठक में विनोद तावड़े ने कहा कि हिंदुस्तान में एकमात्र भारतीय जनता पार्टी ऐसी पार्टी है जो 365 दिन 24 घंटे काम करती है।

भाजपा केवल सत्ता प्राप्ति के लिए राजनीति नहीं करती बल्कि एकमात्र ऐसी राजनीतिक पार्टी है जो राजनीति के साथ सेवा के लिये भी जानी जाती है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि, संगठन पर्व के पहले चरण में हमने जिलों में कार्यशालायें की इसके बाद मण्डल स्तर पर कार्यशालायें आयोजित की गईं। कार्यशालाओं के सफल संचालन के उपरांत बूथों पर संगठनात्मक बैठकें करके हम संगठन चुनाव को गति के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। आज के बाद संगठन के चुनावों की धुरी मण्डल और उसके बाद जिला सतर पर रहेगी। मण्डल कार्य का संगठनात्मक आधार है। मण्डल स्तर के चुनावों के लिए एक कार्ययोजना तय है जिसके बारे में आप सभी को बताया जायेगा कि क्या और कैसे करना है।

संभल जाने से रोके जाने के बाद धरने पर बैठे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

● संभल हिंसा सरकार की लापरवाही और बदनियती का परिणाम: अजय राय

लखनऊ। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय कुमार राय के नेतृत्व में कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल को हिंसा प्रभावित संभल जिले का दौरा करने से रोके जाने के बाद सोमवार को लखनऊ में यूपी कांग्रेस कार्यालय के बाहर पुलिस और कांग्रेस नेताओं के बीच तीखी झड़प हो गई। जिसके बाद अजय राय धरने पर बैठ गए। कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करते हुए हंगामा किया। कांग्रेस प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष, अजय राय के नेतृत्व में 2 दिसंबर 2024 को जनपद संभल पहुंचकर हिंसा में मृतकों के परिजनों से मिलकर संवेदना व्यक्त करने तथा घटना की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से जनपद संभल जाना था। मगर एक दिन पूर्व ही शाम को प्रतिनिधिमंडल के सदस्य-नेता कांग्रेस विधानमंडल दल आराधना मिश्रा मोना एवं पूर्व मंत्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी सहित प्रदेश के प्रमुख नेताओं को हाऊस अरेस्ट कर लिया गया।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने 1 तारीख की शाम को ही आकर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर रूक गये और यहीं से उन्होंने संभल जाने की घोषणा कर दी। पूरी रात प्रदेश अध्यक्ष स्वयं संभल जाने की तैयारियों का जायजा लेते रहे। इस दौरान कांग्रेस मुख्यालय को पुलिस छावनी में तब्दील कर दिया गया। अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पूर्व सांसद पीएल पुनिया दल-बल के साथ बाहर निकले जहां पुलिस ने उन्हें बलपूर्वक रोकने का प्रयास किया। जिस दौरान कांग्रेसजनों एवं पुलिस प्रशासन के बीच धक्का-मुक्की के साथ तीखी नोक-झोंक भी हुई। तद्पश्चात प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय कांग्रेस मुख्यालय के मुख्य द्वार से बाहर निकलकर रोड पर धरने पर बैठ गए। पुलिस प्रशासन ने कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष को जनपद संभल जाने से रोक दिया। मौके पर उपस्थित मीडिया से बात करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि हम प्रतिबद्ध हैं संभल जाने के लिए और अगर सरकार ने अपनी हठ धर्मिता नहीं छोंड़ी तो हम पूरे प्रदेश में आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे।

निजीकरण के विरोध में यूपी के बिजली कर्मचारियों को हरियाणा से पंजाब तक समर्थन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

यूपी में बिजली वितरण समेत अन्य सेक्टरों को निजी कंपनियों के हवाले करने की तैयारी का विरोध शुरू हो चुका है। यूपी के बिजली कर्मचारियों और इंजीनियरों को दूसरे राज्यों के बिजली इंजीनियरों का भी समर्थन मिलने लगा है। हरियाणा और पंजाब के बिजली कर्मचारियों ने भी यूपी के समर्थन में आंदोलन की धमकी दे दी है। राष्ट्रव्यापी भी बनाने की चेतावनी दी गई है। सोमवार को पीएसईबी इंजीनियर्स एसोसिएशन पंजाब स्टेट पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड और पंजाब स्टेट ट्रांसमिशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड में इंजीनियर-इन-चीफ से लेकर सहायक इंजीनियरों तक के 2000 से अधिक इंजीनियरों के दल ने यूपी के कर्मचारियों को समर्थन का ऐलान किया।कहा कि यह बेहद अफसोसजनक है कि राज्य सरकार ने इंजीनियरों और कर्मचारी संघों के साथ सार्थक चर्चा किए बिना बिजली क्षेत्र के निजीकरण का एकतरफा निर्णय लिया है। यह निर्णय रुपये की बकाया राशि की वसूली न होने के चिंताजनक मुद्दे को भी नजरअंदाज करता है। यह निर्णय निजी कंपनियों की पिछली विफलताओं को नजरअंदाज भी करता है। विशेष रूप से आगरा का उदाहरण सबक होना चाहिए था। कहा कि पीएसईबी इंजीनियर्स एसोसिएशन यूपी इंजीनियरों और कर्मचारियों के विरोध प्रदर्शन के फैसले को पूरी तरह से उचित मानता है। हम 6 दिसंबर 2024 से शुरू होने वाले आंदोलन को भी पूरा समर्थन देते हैं। यह भी कहा कि एसो. उप्र सरकार से राज्य के बिजली क्षेत्र और उसके नागरिकों के सर्वोत्तम हित में बिजली क्षेत्र के निजीकरण के अपने फैसले की तत्काल समीक्षा करने और उसे वापस लेने का आग्रह भी करता है। निजी कंपनियों के टेक ओवर करते ही कार्य बहिष्कार होगा शुरूउधर, नेशनल कोआर्डिनेशन कमेटी आफ इलेक्ट्रिसिटी एम्पलाइज एंड इंजीनियर (एनसीसीओईईई) ने चंडीगढ़ बिजली विभाग के निजीकरण और उत्तर प्रदेश सरकार के वाराणसी व आगरा डिस्कॉम को निजी हाथों में सौंपने के फैसलों के खिलाफ छह दिसंबर को देशभर में विरोध प्रदर्शन करने का फैसला लिया है। इलेक्ट्रिसिटी एम्पलाइज फेडरेशन ऑफ इंडिया (ईईएफआई) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं एनसीसीओईई के वरिष्ठ सदस्य सुभाष लांबा ने सोमवार को कहा कि अगर निजीकरण के खिलाफ शांतिपूर्ण एवं लोकतांत्रिक तरीके से किए जा रहे विरोध प्रदर्शनों की अनदेखी करके किसी जल्दबाजी में निजीकरण के फैसले को अमलीजामा पहनाने का प्रयास किया गया तो अंजाम बुरा होगा। जिस दिन निजी कंपनी टेक ओवर करेगी उसी दिन कर्मचारी और इंजीनियर कार्य बहिष्कार कर सड़कों पर उतरने पर मजबूर होंगे। इसकी पूरी जिम्मेदारी उप्र सरकार व चंडीगढ़ प्रशासन की होगी। ईईएफआई के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं ऑल हरियाणा पावर कारपोरेशनज वर्कर यूनियन के राज्य प्रधान सुरेश राठी ने कहा कि हरियाणा के बिजली कर्मचारी भी प्रदर्शनों में शामिल होंगे। लांबा ने कहा कि उप्र सरकार घाटे का बहाना बनाकर वाराणसी व आगरा डिसकॉम को निजी हाथों में सौंपने की तैयारी में है लेकिन चंडीगढ़ बिजली विभाग तो प्रति वर्ष सैकड़ों करोड़ का मुनाफा कमा रहा है। उसका निजीकरण क्यों किया जा रहा है?उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार की नीति कारपोरेट घरानों को लाभ पहुंचाने के लिए निजीकरण करने की है, इसलिए निजीकरण किया जा रहा है। बिजली बोर्ड का गठन मुनाफा कमाने के लिए नहीं किया गया था, उनका उद्देश्य नो प्रोफिट नो लॉस में सभी वर्गों के उपभोक्ताओं को बिजली देकर देश का विकास करना था। उन्होंने उत्तर प्रदेश व चंडीगढ़ के निजीकरण के खिलाफ सभी जन प्रतिनिधियों को आवाज बुलंद करने और बिजली कर्मचारियों एवं इंजीनियर के चल रहे आंदोलन का समर्थन करने की अपील भी की है। उप्र के संदर्भ में कहा कि विभिन्न वर्गों के उपभोक्ताओं को दी जाने वाली सब्सिडी को घाटे की राशि से निकल दिया जाए और बिजली बकाया राशि की वसूली की जाए तो घाटा बराबर हो जायेगा। निजीकरण के खिलाफ शांतिपूर्ण एवं लोकतांत्रिक तरीके से चल रहे आंदोलन के नेताओं को दी जा रही धमकियों की कड़ी भर्तसना की।

पायनियर वर्गीकृत

सूचना

मैंने अपना नाम सौद अहमद से बदलकर सऊद अहमद पुत्र मकसूद अहमद कर लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए। ऊलाचुपुर कोखराज कौशाम्बी।

सूचना

मेरी पुत्री अभिश्री भट्ट (Abhishree Bhatt) जन्मतिथि 07/10/2019 के आधार कार्ड नंबर 262268369953 में नाम सेकंड बेबी ऑफ जाग्रति भट्ट अंकित है । जो सही नहीं है। मेरी पुत्री का सही नाम अभिश्री भट्ट है, और यही नाम जन्म प्रमाण पत्र में भी दर्ज है। पुष्पेंद्र प्रताप भट्ट पुत्र प्रताप नारायन भट्ट निवासी ग्राम 158, सरायगली सरायमीरा, कन्नौज

पायनियर
लखनऊ, मंगलवार, 3 दिसम्बर 2024

शहर की सरकार की बैठक में जलनिगम की कार्यशैली से नाराज पार्षदों ने काटा हंगामा

● जल निगम के विरुद्ध जिम्मेदारों पर कार्रवाई की मांग

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शहर की सरकार की तरफ से सोमवार को बुलाई गयी कार्यकारिणी की बैठक में वार्डों की समस्याओं की चर्चा के दौरान जल निगम की अनदेखी और लापरवाही पर नाराज पार्षदों ने जमकर हंगामा किया। वेल में आए पार्षदों द्वारा धरना प्रदर्शन कर नारेबाजी की गयी। पार्षदों द्वारा एक स्वर में जलकल के जिम्मेदार अफसरों पर कार्रवाई की मांग की गयी। बैठक में फ्लाईओवर के नीचे से अतिक्रमण हटाकर स्टील की रेलिंग लगाने की मांग रखी गयी। साथ ही जियामऊ क्षेत्र में सीवरलाइन का घरों से कनेक्शन करने का कार्य छह माह में कराने का निर्णय लिया गया है। महापौर सुषमा खर्कवाल की अध्यक्षता में कार्यकारिणी (कामकाजी कार्यकारिणी) की बैठक नगर निगम मुख्यालय स्थित राजकुमार हॉल में नगर निगम कार्यकारिणी के सदस्यों एवं नगर निगम के अधिकारियों की मौजूदगी में की। बैठक में शहर के विकास से संबंधित 15वें वित्त से होने वाले विकास कार्यों पर चर्चा हुई। कार्यकारिणी की बैठक में मौलवीगंज के पार्षद मोंटी ने जल निगम के खिलाफ नाराजगी व्यक्त करते हुए महापौर को बताया कि कई महीनों से सीवर और वाटर लाइन कनेक्शन का कार्य चला रहा है, जिसमें अधिकारियों की लापरवाही का खामियाजा पूरे इलाके को भुगतना पड़ रहा है। यहां खुदाई के बाद अधूरे कार्य को छोड़कर दूसरे कार्य में जल निगम व्यस्त हो जाता है। धूल से पूरे इलाके के लोग परेशान है। जल निगम के एक्शियन से शिकायत करने पर भी कोई सुनवाई नहीं होती है। पार्षद ने बताया कि उल्टे एक्शियन ने कहा मुझे चार जूते मार लो, इस पर मैं कुछ नहीं कर सकता। इस मुद्दे पर कालीजी वार्ड के पार्षद अनुराग मिश्र, बाबू जगजीवन राम वार्ड के पार्षद भृगुनाथ शुक्ला और मनकामेश्वर वार्ड के पार्षद रंजीत सिंह ने भी समर्थन किया। हालांकि इस मुद्दे पर नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह ने जवाब देने का प्रयास किया। पार्षद सहमत नहीं हुए। आधा दर्जन से अधिक पार्षद कार्यकारिणी के समक्ष आकर धरना प्रदर्शन करना शुरू किया। नारेबाजी करते हुए महापौर से जिम्मेदार अफसरों पर कार्रवाई की मांग की। महापोर ने जल निगम से रोड काटी गई है उनको कितने दिन में बनाएंगे इसका जवाब मांगा है। वहीं रूम कटिंग करते समय जो वायु प्रदूषण फैलता है उसे रोकने के लिए रोज पानी डलवाए जाने की बात कही जिससे प्रदूषण न फैलने पाए। नगर में व्याप्त अवैध अतिक्रमण के विरुद्ध सघन अभियान चलाए जाने के निर्देश दिए। नगर के फ्लाईओवरों के नीचे व्याप्त अतिक्रमण पर असंतोष व्यक्त कर महापौर ने जिम्मेदारों से जवाब तलब किया। नगर आयुक्त ने प्रभावित क्षेत्रों के जोनल अधिकारी एवं एक्ससीएन को तत्काल प्रभाव से जगह चिन्हित कर कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिए। महापौर ने ऐसे प्रभावित क्षेत्रों के संबंध में जोनल अधिकारियों को 15 दिवस के भीतर कार्यवाही पूर्ण करने के उपरांत एक शपथ पत्र भेजने के आदेश भी दिए। इसके अतिरिक्त नगर में अवैध अतिक्रमण कर्ताओं के विरुद्ध चालान कोर्ट के माध्यम से किये जाने के निर्देश भी दिए।

जियामऊ में छह महीने में होंगे सीवर कनेक्शन

कार्यकारिणी की बैठक में सदस्यों एवं पार्षदों ने अपने अपने वार्डों की जन समस्याओं से भी अवगत कराया। पेय जल, सीवर लाइन एवं समर सेबल की मरम्मत जैसी समस्याएं शामिल रही। जियामऊ में सीवर कनेक्शन पर चर्चा की। चर्चा के दौरान महापौर ने जियामऊ में सीवरलाइनों का कनेक्शन छह महीनों के अंदर करने के निर्देश महापौर ने दिया है। सीवर कनेक्शन से सैकड़ों लोगों को राहत मिलेगी। सीवर कनेक्शन के लिए अधिकारियों को निदेर्शित भी किया है।

कार्तिक मेले पर जिम्मेदारों पर होगी कार्रवाई

राजधानी में हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा में नहान के बाद कार्तिक का मेला लगाया जाता था, लेकिन इस वर्ष देरी पर नाराज हुए पार्षदों ने महापौर से लापरवाही पर कार्रवाई की मांग की थी। महापौर ने कहा कि यह हमारी आस्था से जुडा मुद्दा है। कार्तिक पूर्णिमा पर लगने वाले मेले में एक माह के विलंब होने पर जिम्मेदारों की फटकार लगाते हुए जवाबदेही तय किये जाने की बात कही।

ई वेतन से मिलेगा कर्मियों को वेतन

बैठक में समस्त कर्मचारियों का वेतन महीने की 7 से 10 तारीख तक आने के मामले पर महापौर द्वारा इस प्रक्रिया को अमल में लाये जाने के निर्देश दिए। जिस पर मुख्य वित्त एवं लेखाधिकारी ने कहा कि ई.वेतन को क्रियान्वित करने के लिए कार्यदायी संस्था को अपने कर्मचारियों का आधार कार्ड, बैंक डिटेल वगैरा देना होगा और हम इसके माध्यम से डायरेक्ट कर्मचारी के खाते में वेतन भेज सकते हैं। इससे हम यह भी देख सकते है कि वेतन पहुंचा या नहीं। हम अगले महीने तक यह प्रक्रिया शत.प्रतिशत क्रियान्वित कर लेंगे। इसके अतिरिक्त मृत व रिटायर्ड कर्मचारियों के कटआफडिसाइड करने को आवश्यक बताते हुए सहमति जाहिर की गई इसका निर्णय जोनवार कमेटी बनाकर किया जाएगा।

बोर्ड, तारबाड़ लगाकर रिपोर्ट भेजने का निर्देश

नगर निगम की भूमियों पर कब्जा का मामला कार्यकारिणी में उठा। कब्ज़ा मुक्त करवाने के बाद पुन: कब्ज़ा किये जाने की शिकायतों पर महापौर ने अपर नगर आयुक्त पंकज श्रीवास्तव को एक माह के भीतर ऐसी भूमियों पर दोबारा नगर निगम का बोर्ड एवं तारबाड़ लगाकर विस्तृत रिपोर्ट भेजने के निर्देश दिए।

विद्यालयों में स्मार्ट स्क्रीन पर जल्द लेंगे

कार्यकारिणी में नगर निगम के विद्यालयों में स्मार्ट स्क्रीन लगाए जाने के सवाल पर जानकारी दी गयी कि इस लिए टेंडर की प्रक्रिया पूर्ण हो गयी है जल्द ही स्क्रीन लगवा दी जाएगी। इस सराहनीय कार्य के लिए सदस्यों द्वारा महापौर को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। महापौर द्वारा सदन में पास किये जा चुके जेम पोर्टल से संबंधित निर्णय पर असंतोष व्यक्त किया और जेम पोर्टल से की जा रही खरीद फरोख्त का विवरण कार्यकारिणी के समक्ष रखे जाने के निर्देश दिए।

सौ दुकानें वेंडिंग जोन में करने के निर्देश

बैठक नगर में वेंडिंग ज़ोन बनाये जाने की धीमी प्रगति पर महापौर जी द्वारा नाराजगी जाहिर की गई। नगर में सभी जोन के जोनल अधिकारीयों को अपने अपने ज़ोन में कम से कम 100 दुकाने वेण्डिंग जोन मे बनाने के निर्देश अधिशासी अभियंता पीके सिंह को दिए गए। वेंडिंग जोन सुव्यवस्थित हो जाए और शहर को अतिक्रमण मुक्त कर स्वच्छ और बनाया जा सके।

जांच कर रिपोर्ट भेजने के निर्देश

बैठक में कार्यकारिणी सदस्य अनुराग मिश्रा ने कूड़ा घरों से पत्नी छटान के लिए रैमकी के बगैर वेतन के कर्मचारियों से कार्य कराया जा रहा है, जिस पर रैमकी के जिम्मेदारों ने इस बात से इनकार जताया।

दुग्ध संघों में हर स्तर पर तय की जाए जवाबदेही, सभी कर्मियों के तय किये जाएं टॉरगेटः मुख्यमंत्री

● मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में प्रादेशिक कोआपरेटिव डेयरी फेडरेशन का किया गया प्रस्तुतिकरण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में आज उनके सरकारी आवास पर प्रादेशिक कोआपरेटिव डेयरी फेडरेशन का प्रस्तुतिकरण किया गया। मुख्यमंत्री जी ने निर्देशित किया कि दुग्ध सहकारी समिति से जुड़े कर्मियों का उचित प्रशिक्षण कराया जाये और उन्हें आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराये जाएं। प्रदेश में दुग्ध सहकारी समितियों और दुग्ध संघों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित की जाए। इसके लिए प्रत्येक गांव व किसानों से दुग्ध सहकारी समितियां संवाद स्थापित कर अपने कार्यों को बेहतर तरीके से आगे बढ़ाएं। किसानों को दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए बेहतर नस्ल के दुधारू पशुओं के पालन के लिए जागरुक किया जाए। साथ ही किसानों को दुधारु पशुओं के पालन-पोषण के लिए वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षित किया जाए। इससे डेयरी संघों में दुग्ध उत्पादकता में वृद्धि होगी और किसानों की आय भी बढ़ेगी। इन सभी कार्यों में आधी आबादी की महत्वपूर्ण भूमिका है। डेयरी क्षेत्र महिलाओं की आत्मनिर्भरता को बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम साबित हुआ है। बुंदेलखंड क्षेत्र में बलिनी मिल्क प्रोड्यूसर इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। दुग्ध सहकारी समितियों और दुग्ध संघों में महिलाओं की भागीदारी को और बढ़ावा दिया जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दुग्ध संघों में हर स्तर पर जवाबदेही तय करते हुए कार्य के टॉरगेट तय किये जाएं। दूध के संग्रह की क्षमता बढ़ाते हुए दूध की गुणवत्ता परीक्षण के कार्यों को बेहतर किया जाए। डेयरी क्षेत्र को किसानों के लिए अधिक फायदेमंद बनाने के लिए डेयरी फेडरेशन बेहतर मॉडल विकसित करे। डेयरी क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाए। गोबर से कंप्रेस्ड बायो गैस के प्लांट स्थापित किये जाएं। इनकी स्थापना के लिए भूमि प्रदेश सरकार उपलब्ध कराएगी।

बैठक में अधिकारियों ने अवगत कराया कि इस वर्ष प्रदेश में संचालित डेयरी प्लांट्स अपनी स्थापित क्षमता के सापेक्ष लगातार अच्छा करने का प्रयास कर रहे हैं। गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष दुग्ध उपार्जन, दुग्ध बिक्री में बढ़ोतरी रही है। दुग्ध सहकारी समितियों के माध्यम ने उत्पादकों से सीधे दुग्ध संग्रह का कार्य किया जा रहा है। दूध का उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को तकनीकी सुविधाएं मुहैया कराई जा रही है। शहरी उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर अच्छी गुणवत्ता का दूध उपलब्ध कराने के लिए लगातार कार्य किये जा रहे हैं।

ज्ञातव्य है कि प्रदेश में इस समय 18 क्लस्टर दुग्ध संघ कार्य कर रहे हैं। पीसीडीएफ द्वारा बरेली, प्रयागराज, मुरादाबाद, झांसी, आजमगढ, अयोध्या, लखनऊ, मेरठ, कन्नौज, गोरखपुर व कानपुर में डेयरी प्लांट्स का संचालन किया जा रहा है। एनडीडीबी द्वारा वाराणसी में डेयरी प्लांट्स संचालित किया जा रहा है। कन्नौज, गोरखपुर व कानपुर में एनडीडीबी के माध्यम में डेयरी प्लांट्स के संचालन की कार्रवाई प्रक्रियाधीन है।

बॉक्स ऑफ़ हैप्पीनेस में विद्यार्थी शिक्षक सभी कर सकेंगे समुदाय हेतु दान

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग ने सोमवार से पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ तथा अभ्युदय गुल्लक पाठशाला फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में बॉक्स आफ हैप्पीनेस सप्ताह के रूप में एक अनोखी पहल की शुरुआत की है। सप्ताह की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय द्वारा समुदाय के बच्चों में गर्म कपड़े वितरित करके की गई। प्रोफेसर राय ने अभ्युदय गुल्लक पाठशाला की संस्थापक सलोनी को विश्वविद्यालय व समाज कार्य विभाग की तरफ से हैप्पीनेस बॉक्स देते हुए उन्हें समुदाय के बीच बच्चों में वितरित करने की अपील की। प्रोफेसर राय ने इस सप्ताह की बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से यह अपील है कि वह समुदाय के लोगों में सहयोग हेतु अपने स्वेच्छा अनुरूप गर्म कपड़े कॉपी किताब व पाठ्य सामग्री सेनेटरी पैड इत्यादि विश्वविद्यालय में स्थापित हैप्पीनेस बॉक्स में रख सकते हैं। लोगों के योगदान से इस मुहिम को सफल बनाया जाएगा।

उक्त सप्ताह के विषय मे प्रो. राकेश द्विवेदी विभागाध्यक्ष समाज कार्य विभाग ने बताया कि 2 दिसंबर से 9 दिसंबर तक लखनऊ विश्वविद्यालय के मुख्य एवं द्वितीय परिसर में चिन्हित पांच-पांच स्थानों पर हैप्पीनेस बॉक्स रखे जाएंगे। इस सप्ताह को मनाए जाने का मुख्य उद्देश्य अपने संस्थागत सामुदायिक उत्तरदायित्व के निर्वहन हेतु जाड़े के मौसम में समुदाय में रहने वाले बच्चों को सर्दियों से बचाना है । कोई भी व्यक्ति अपने 5 वर्ष से 60 वर्ष तक के लोगों के उपयोग में आने वाले कपड़े पाठ्य सामग्री सेनेटरी पैड इत्यादि बॉक्स ऑफ़ हैप्पीनेस में रख सकता है ड्ड आपने दान कर्ताओं से विशेष अपील की कि दान किए जाने वाले वस्त्र स्वच्छ एवं पहनने योग्य होने चाहिए। सप्ताह के अंत में सभी एकत्रित सामग्रियां समुदाय के सदस्यों में वितरित कर दी जाएगी।

यूपी टूरिज्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के अधिकारियों को सजा

● लाखों की धोखाधड़ी का मामला

लखनऊ (विधि संवाददाता)। धोखाधड़ी व कुटरचना के जरिए लाखों का गबन करने के मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की विशेष अदालत ने यूपी टूरिज्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के तत्कालीन मुख्य लेखाधिकारी राधेश्याम जायसवाल, कनिष्ठ लेखाकार संजय सिंह व कैशियर राजेश मिश्रा को दोषी करार दिया है। विशेष जज सत्येन्द्र सिंह ने आरोपी राधेश्याम जायसवाल को आठ वर्ष की सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही इस पर तीन लाख 10 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। उन्होंने आरोपी संजय सिंह व राजेश मिश्रा को छह वर्ष की सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। इन दोनों पर अलग अलग एक लाख 30 हजार रुपए का जुर्माना भी ठोका है। विशेष लोक अभियोजक लक्ष्मी पांडेय व विजय त्रिपाठी के मुताबिक लाखों के गबन का यह मामला वर्ष 2005-06 का है।

अस्टियोपोरोटिक वर्टीब्रल कंप्रेशन फ्रैक्चर का इलाज बिना ऑपरेशन भी सम्भव

लखनऊ। कुशीनगर निवासी अस्टियोपोरोटिक वर्टीब्रल कंप्रेशन फ्रैक्चर से पीड़ित एक मरीज को ठीक करने में किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी के डॉक्टरों ने सफलता हासिल की है। ट्रीटमेंट के बाद मरीज को काफी आराम है। कुशीनगर निवासी रामचन्द्र, 64 वर्ष बीते सितम्बर 2024 को केजीएमयू की पेन क्लीनिक में कमर दर्द की शिकायत के साथ ओपीडी में दिखाने आये थे। इसके पूर्व मरीज ने कई जगह दिखाया लेकिन इनको कही पर भी आराम नही मिला तब ये केजीएमयू के पेन क्लीनिक की ओपीडी में आये थे। जहा पर पेन क्लीनिक की प्रभारी डॉ. सरिता सिंह के निर्देशन में इनकी खुन की जॉच के साथ साथ कमर के एक्सरे एवं एमआरआई कराई गयी। जिसमें यह पाया गया कि इनकी रीड की एक हडडी (एल1) काफी दबी हुई है जिसको चिकित्सकीय भाषा में वर्टिवल आस्टियो प्रोक्टिक कम्प्रेशन फ्रैक्चर कहते है। जिसके बाद मरीज को उपचार के दौरान मिनिमली इनवैसिव स्पाइन प्रोसेड्यूर के द्वारा एक विशेष विधि से दबी हडडी को बैलून पीएमएमए के द्वारा सही स्थिति में लाने तथा उसमें एक विशेष प्रकार का पदार्थ पीएमएमए को हडडी में डाल कर सामान्य स्थिति में लाने के साथ साथ मजबूती भी प्रदान किया। इस प्रोसिजर के कुछ ही घंटो के बाद मरीज को कमर का दर्द में आराम मिल गया तथा मरीज 3-4 घंटे में चलने फिरने लगा। इस प्रोसिजर को करने में कुल 1 घंटा लगा। यह प्रोसिजर सरकार द्वारा चलाये गये आयुष्मान योजना के तहत किया गया। यह प्रोसिजर विभागाध्यक्ष के दिशानिर्देश में पेन मेडिसिन यूनिट कि इंचार्ज प्रो सरिता सिंह प्रो अजय चौधरी प्रो मनीष कुमार सिंह एवं डॉ मुख्तदीर जमाल के द्वारा किया गया तथा टीम जिसमें शिवम पटेल पंकज, नर्स सुधा, नर्स अंजली, वार्ड ब्वय सतीश पाण्डे एवं अनुज शामिल रहे।

'संवाद श्रृंखला-4' का आयोजन, छात्र छात्राओं ने यूपी 112 की जनोपयोगी सेवाओं को जाना

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश के करोड़ों नागरिकों को यूपी 112 की विभिन्न सेवाओं के बारे में जागरूक करने के लिए 'एक पहल' अभियान के अंतर्गत 'संवाद श्रृंखला-4' का आयोजन सोमवार को हुआ। पूर्वांचल इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंसेज में आयोजित कार्यक्रम में छात्र छात्राओं के साथ संस्थान के शिक्षकों और कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यूपी 112 के अधिकारियों ने आह्वान किया कि अपने साथ साथ दूसरों की मदद के लिए आगे आएं और आपात सहायता के लिए यूपी 112 मिलाएं। कार्यक्रम के आरम्भ में पुलिस अधिकारियों द्वारा 'एक पहल' के उद्देश्य को बताते हुए सभी को 112 की सेवाओं के बारे में जागरूक किया 7 कार्यक्रम का उद्देश्य नागरिकों को 112 की सेवाओं से जागरूक करते हुए सजग शहरी बनाना है। इस मौके पर विद्यार्थियों को बताया गया कि भीड़भाड़ वाले स्थानों, बाजार, रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन सहित अन्य सार्वजनिक स्थानों पर कहीं भी कोई संदिग्ध व्यक्ति या वस्तु दिखे तो उसे अनदेखा न करें, इसकी जानकारी तत्काल यूपी 112 को दें। आप का एक छोटा सा प्रयास किसी बड़ी घटना को रोकने में सहायक होगा।

यूपी 112 ऐसे जागरूक नागरिकों को समय समय पर सम्मानित भी करता है।यूपी-112 पर कॉल कर के सिर्फ पुलिस सहायता ही नहीं बल्कि आग लगने, दुर्घटना, प्राकृतिक आपदा, ट्रेन में भी आपात स्थिति में सहायता प्राप्त कर सकते है। यूपी-112 का फायर, एम्बुलेंस, जीआरपी सहित विभिन्न सरकारी एजेंसियों के साथ एकीकरण के बाद नागरिकों के लिए मदद का दायरा और बढ़ गया है। यूपी 112 मीडिया सेल प्रभारी करुणा शंकर सिंह ने बताया कि सहायता के लिए कॉल करने वाले नागरिक का नाम, पता, फोन नंबर सहित सभी जानकारी गुप्त रखी जाती है। उन्होंने नागरिकों से अपील की है कि अपने साथ साथ दूसरों की मदद के लिए भी बेझिझक आगे आएं और यूपी 112 पर कॉल मिलाएं। गौरतलब है कि 'एक पहल' अभियान का शुभारंभ पुलिस महानिदेशक महोदय द्वारा किया गया है। जिसके अंतर्गत प्रत्येक जनपद में नागरिकों को यूपी 112 की विभिन्न योजनाओं से अवगत कराया जा रहा है।

एनजीटी की अवहेलना करने पर एफआईआर की तहरीर

लखनऊ। गोमतीनगर में कूडा जलाने पर शख्स के खिलाफ नगर निगम द्वारा विधिक कार्रवाई की गयी। बीते 26 नवंबर को जयपुरिया कैम्पस में कूड़ जलाने का संज्ञान लेने पर नगर निगम ने गोमती थाने पर तहरीर देकर मुकदमा पंजीकृत करने के लिए कहा गया। सोमवार को नगर निगम लखनऊ क्षेत्र के जयपुरिया कैम्पस के रहने वाले रमजान अली के विरुद्ध एनजीटी के नियमों की अवहेलना कर प्रदूषण फैलाने के चलते सुसंगत धाराओं में मामला पंजीकृत कर लिया गया है। रमजान अली ने बीती 26 नवंबर 2024 की शाम को भारी मात्रा में कूड़े में आग लगा दी थी, जिससे स्थानीय लोगों को काफी समस्या हुई। प्रदूषण का स्तर इस हद तक बढ़ गया था कि क्षेत्रवासियों को सांस लेने में तकलीफतक होने लगी थी। उक्त मामले की शिकायत स्थानीय लोगों द्वारा वीडियो के साथ प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में कई गयी।

आठ माह से दौड़ा रहे थे अफसर एमडी के आदेश पर सुधारा बिल

● चाट दुकानदार को आखिरकार मिला न्याय 85 हजार से घटाकर 10 हजार बनाया गया बिल

संवाददाता। मोहनलालगंज

आठ माह से बिजली विभाग के अफसरों के चक्कर काट रहे चाट दुकानदार को मध्यांचल प्रबन्धन के आदेश पर आखिरकार न्याय मिल गया। एक्सईएन के नाराजगी जताने के बाद मीटर सेक्शन से एमआरआई रिपोर्ट भी आ गई और एसडीओ ने आनन फानन बिल भी रिवाइज कर दिया। जिसके बाद दुकानदार का बिजली बिल 85 हजार से घटाकर 10 हजार बनाया गया है। मोहनलालगंज के भसंडा निवासी चाट दुकानदार रंजू के घर का बिजली बिल विभाग ने 85 हजार बना दिया था।

आठ माह तक मीटर सेक्शन के अधिकारी और एसडीओ पीड़ित रंजू को दौड़ाते रहे लेकिन किसी ने उसकी समस्या का निदान नही किया। जिसे लेकर पायनियर में प्रमुखता से खबर प्रकाशित होने के बाद एमडी मध्यांचल भवानी सिंह खंगरौत ने मामले का संज्ञान लेकर मातहतों को कार्रवाई के निर्देश दिए। एमडी के आदेश पर एक्सईएन श्रवण कुमार सिंह ने मीटर सेक्शन के एई और एसडीओ से नाराजगी जताकर उपभोक्ता की समस्या का तुरन्त निराकरण करने के निर्देश दिए। जिसके बाद मीटर सेक्शन के एई ने एमआरआई रिपोर्ट में मीटर रीडिंग को डिफेक्टिव करार दिया। जिसके आधार पर एसडीओ ने चाट दुकानदार रंजू के घर का बिल घटाकर 10926 रुपए कर दिया है।

तीन माह से दौड़ा रहे अफसर बकाए पर कनेक्शन काटा

बिजली बिल की शिकायतें निपटाने में अधिकारियों की लापरवाही उपभोक्ताओं को दर्द दे रही हैं। मोहनलालगंज में वेल्डिंग दुकानदार कुलदीप द्विवेदी ने बताया उन्होंने 5 किलोवाट का बिजली कनेक्शन ले रखा है। अचानक बिजली बिल काफी बढ़कर आने की शिकायत पर अधिकारियों ने उनकी दुकान में चेक मीटर लगवा दिया। इसी बीच दुकान पर लगा पुराना मीटर खराब हो गया तब से कुलदीप लगातार एसडीओ दफ्तर और मीटर सेक्शन की परिक्रमा कर रहे हैं। लेकिन उनका बिल तीन माह में भी ठीक नही किया जा सका है। अलबत्ता बकाया बढ़ने पर सोमवार को अधिकारियों ने उनकी दुकान का कनेक्शन काटकर कारोबार भी ठप करा दिया। कुलदीप ने बताया वह तुरंत बिल जमा करने को तैयार हैं लेकिन अधिकारी दुकान का बिल दुरुस्त करने में दिलचस्पी नही ले रहे हैं। एक्सईएन श्रवण कुमार सिंह ने बताया मामले की जानकारी मिली है। मीटर सेक्शन से एमआरआई रिपोर्ट मंगवाई गई है। एसडीओ को रिपोर्ट के आधार पर फौरन बिल दुरुस्त करने के लिए कहा गया है।

5 मृतक आश्रितों को महापौर ने वितरित किये नियुक्ति पत्र

● 17 सेवानिवृत्त कर्मचारियों को विदाई देकर दी शुभकामनाएं

लखनऊ। नगर निगम मुख्यालय में महापौर द्वारा मृतक आश्रितों को नियुक्ति पत्र बांटा गया। महापौर द्वारा उन्हें नयी ि जम्मेदारी संभालने पर शुभकामनाएं दी गयी। 17 अधिकारी व कर्मियों को सेवानिवृत्त हुए, जिन्हें महापौर द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट कर विदाई दी गयी। महापौर द्वारा उन्हें उनकी सेवा के लिए नगर निगम सदैव आभारी रहने की बात भी कही गयी। सोमवार को नगर निगम में 5 मृतक आश्रितों ने नई जिम्मेदारी की शुरुआत की। कार्यक्रम में महापौर सुषमा खर्कवाल, उपसभापति गिरीश गुप्ता, पार्षद मुकेश कुमार मोंटी एवं नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह सहित अपर नगर आयुक्त पंकज श्रीवास्तव एवं ललित कुमार ने आयोजन में मौजूद नवनियुक्त कर्मचारियों को शुभकामनाएं भेजी। नगर निगम विभिन्न संवर्गो में सेवारत कर्मचारियों की आकस्मिक रूप से देहान्त होने की दशा में मृतक आश्रित के जीवन यापन में सहायता के लिए सेवा में लिये जाने का प्राविधान है। प्राविधानो के तहत प्राप्त आवेदन एवं समस्त औपचारिकताएं व नियमो का पूर्ण अनुपालन करते हुए कर्मियों को सेवा में लिये जाने की स्वीकृति प्रदान की गयी है। मुख्यालय स्थित राजकुमार हॉल में आयोजित कार्यक्रम में महापौर सुषमा खर्कवाल ने मृतक आश्रितों को नियुक्ति पत्र का वितरण किया। उमर जुबैर पुत्र स्व मो. जुबैर हारून, रवि सागर पुत्र स्वर्गीय दयाराम, गुलशन जहाँ पत्नी स्व मो शफ ीक, अंजली पत्नी स्व गिन्नी लाल, कौशल कश्यप पुत्र स्व देवी प्रसाद को नियुक्ति पत्र दिया। मृतक आश्रितों को नियुक्ति पत्र वितरित कर उनके व उनके परिवार के प्रति संवेदना भी व्यक्त की। महापौर के हाथों से नियुक्ति पत्र पाकर सभी आश्रितों के चेहरे खुशी से खिल उठे और सभी ने महापौर का आभार भी व्यक्त किया। विभिन्न पदों पर रह कर पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने वाले कर्मचारियों के सेवानिवृत्त होने के बाद उनकी विदाई भी धूमधाम से की। अधिशाषी अभियंता सुरेश चंद सिंह, कर अधीक्षक अवधेश कुमार, ज्ञान चंद, चौकीदार राम शंकर मिश्रा, प्रधान माली उमेश चंद्र, सफाई कर्मी दिनेश, गैंग कुली राजेंद्र कुमार, सफाई कर्मी विमला, प्रेम, गुड्डी, अशोक, चंदनलाल, मेसन राजा राम, बेलदार रूपलाल, सफाई कर्मी कमला, सुशीला, शीला रही। अशोक सिंह प्रभारी अधिकारी (अधिष्ठान), डॉ पीके श्रीवास्तव नगर स्वास्थ्य अधिकारी के साथ.साथ तमाम वरिष्ठ अधिकारी एवं नरेश वाल्मीकि, आनंद वर्मा, राजेश सिंह, केसर रजा, सुनील धानुक, शशि मिश्रा व अन्य कर्मचारी संगठनों के पदाधिकारियों सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

वायरल ऑडियो को लेकर सचिव पर एक्शन की तैयारी, डीपीआरओ को भेजा पत्र

● अफसरों के साथ तीन घंटे चली मीटिंग के बाद माने प्रधान गोवंश की बेहतर देखरेख का दिया भरोसा

मोहनलालगंज। निराश्रित गोवंश आश्रय केन्द्र खुज्ञौली में चारा सप्लाई को लेकर ऑडियो वायरल होने के बाद बीडीओ ने सचिव पर कार्रवाई के लिए डीपीआरओ को पत्र भेजा है। सोमवार को बीडीओ और डीपीआरओ के साथ तीन घंटे तक चली मीटिंग के बाद प्रधान संघ ने गोवंश आश्रय केन्द्रों का संचालन करने की सहमति दी है। मोहनलालगंज की ग्राम पंचायत खुज्ञौली के निराश्रित गोवंश आश्रय केन्द्र में चारा सप्लाई को लेकर शनिवार को पूर्व प्रधान पति चंद्रशेखर ने दो ऑडियो वायरल कर चारा सप्लाई में कमीशनखोरी का आरोप लगाया था। जिसे लेकर मचे हड़कंप के बाद बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव ने मामले में ग्राम पंचायत सचिव पर कार्रवाई के लिए डीपीआरओ हिमांशु शेखर ठाकुर को पत्र भेजा है। बीडीओ ने बताया मामले में डीपीआरओ ही आगे की कार्रवाई करेंगे। उधर सोमवार को डिप्टी सीवीओ कुलदीप द्विवेदी के साथ बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव और डीपीआरओ हिमांशु शेखर ठाकुर ने ब्लॉक पहुंचकर प्रधान संघ के साथ तीन घंटे तक मीटिंग की। तीखी नोकझोंक के बाद आखिरकार प्रधान संघ के तेवर नरम पड़े जबकि अधिकारियों ने भी हरसंभव सहयोग का भरोसा देकर ग्राम प्रधानों को गोवंश आश्रय केन्द्रों का संचालन करने के लिए राजी कर लिया। बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव ने बताया ग्राम प्रधानों को जिला प्रशासन द्वारा निर्धारित दर से कम दाम पर किसानों से चारा खरीदने की छूट दी गई है। लेकिन इसके साथ ही आश्रय केन्द्रों में हरा चारा उपलब्ध न होने पर गोवंश के लिए साइलेट और चूनी चोकर देना अनिवार्य है।

अधूरी सड़क जल्द बनाने के निर्देश भुगतान में होगी कटौती

सिसेंडी में एक माह बाद भी अधूरी पड़ी इंटरलॉकिंग रोड का कार्य तीन दिन में पूर्ण करने का अल्टीमेटम दिया गया है। पायनियर में सोमवार को प्रमुखता से खबर प्रकाशित होने के बाद बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव ने जेई रवीन्द्र कुमार को अपनी निगरानी में रोड के सभी कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिए हैं। जबकि रोड जहां जहां भी उखड़ रही है वहां इंटरलॉकिंग ईंट उखाड़कर दुरुस्त करने की हिदायत दी गई है।

बकाया वसूली के लिए जागे अफसर बकाएदारों को नोटिस जारी

मोहनलालगंज में लखपति बकाएदारों पर बिजली विभाग ने शिकंजा कस दिया है। सोमवार को पायनियर में प्रमुखता से खबर प्रकाशित होने के बाद एक्सईएन श्रवण कुमार सिंह ने जेई और एसडीओ की मीटिंग लेकर एक लाख से अधिक के सभी बकाएदारों को सेक्शन 3 की नोटिस देकर बकाया नही चुकाने पर कनेक्शन काटने के निर्देश दिए। एक्सईएन ने बताया बकाया चुकाए बिना किसी भी बड़े बकाएदार का कनेक्शन चालू मिलने पर सम्बन्धित जेई और एसडीओ का उत्तरदायित्व तय किया जाएगा। गौरतलब है कि मोहनलालगंज खण्ड में एक लाख से अधिक के छह सौ से अधिक बकाएदार चिन्हित किए गए हैं।

पायनियर
लखनऊ, मंगलवार, 3 दिसंबर, 2024

भाजपा भी मुफ्त बिजली-पानी और परिवहन में छूट देगी : बिधूड़ी

● सांसद बोले, घोषणा पत्र के लिए भाजपा करेगी रायशुमारी, पार्टी ने दिल्ली फतह करने के लिए बनाई नई रणनीति

विस चुनाव घोषणा पत्र में रायशुमारी के लिए ईमेल आईडी, व्हाट्सएप नंबर जारी करते भाजपा नेता। फोटो : रंजन डिमरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

विधानसभा चुनाव को लेकर सियासत हलचल तेज हो गई है। भाजपा, कांग्रेस और आम आदमी पार्टी मतदाताओं को रिझाने और नए लोगों को अपने साथ जोड़ने की कोशिश में जुट गई है। इस बीच दिल्ली भाजपा विधानसभा चुनाव के लिए अपने संकल्प पत्र बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। पार्टी ने वादा किया है कि अगर वह दिल्ली की सत्ता पर काबिज होती है तो दिल्ली वालों को मुफ्त बिजली और पानी मिलता रहेगा। इसके अलावा सभी समाजिक योजनाएं और परिवहन में छूट की सुविधा पहले से बेहतर होंगी और उनको जनता के नये वर्गों तक पहुंचाया जायेगा।

दिल्ली भाजपा संकल्प पत्र समिति के संयोजक व दक्षिणी दिल्ली से सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने सोमवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा राष्ट्रीय राजधानी में भाजपा की सरकार बनने पर दिल्ली वालों को निश्चित रूप से बिजली-पानी की मुफ्त सुविधा मिलती रहेगी। संकल्प पत्र बनाने के लिए पांच दिसंबर से समिति सभी वर्गों के साथ विधानसभा, जिला स्तर और प्रदेश स्तर पर बैठक कर सुझाव मांगेगी।

मुफ्त बिजली-पानी के नाम पर गुमराह कर रही आप :आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल मुफ्त बिजली-पानी के नाम पर गुमराह करने का आरोप लगाते हुए बिधूड़ी ने का कि केजरीवाल की मुफ्त बिजली योजना का दूसरा काला चेहरा यह है की मध्यम वर्ग 9 से 10 रुपये यूनिट की तो व्यपारी 16 से 18 रूपए यूनिट की बिजली खरीदने को मजबूर हैं। नि:शुल्क के नाम पर जो पानी आ रहा है वह बेहद गंदा है जहरीला है बीमारी का कारण बन रहा है। दिल्ली भाजपा का संकल्प है सब सुविधाएं बनी रहेंगी पर उनका स्तर आज से बहुत बेहतर होगा।

बिधूड़ी ने कहा कि वह संकल्प पत्र निर्माण करने के दूसरे चरण में हैं जिसके अंतर्गत समाज के विभिन्न वर्गों से विशेषकर युवाओं, महिलाओं एवं बुजुर्गों, नागरिक, व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थाओं से, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं और पत्रकारों से सम्पर्क बैठकें करेंगे। इस कार्य में दिल्ली भाजपा के विभिन्न मोर्चों एवं प्रकोष्ठों का भी सहयोग लेंगे। संकल्प पत्र के लिये जन सुझाव लेने की टैगलाइन है मेरी दिल्ली मेरा संकल्प बीजेपी है। भाजपा सांसद ने कहा कि दिल्ली के लोग Email ID MeriDelhiMeraSankalpBJP @gmail.com के साथ ही वाट्सअप नम्बर 99 5870 2025 पर भी अपने सुझाव भेज सकते हैं। सोशल मीडिया पर हैशटैग रहेगा #BJPSankalp2025 दिल्ली भाजपा का वीडियो वैन और जिला कैम्पेन शनिवार से शुरू होगा और समाज के विभिन्न वर्गों के साथ बैठकें 5 से प्रारम्भ होंगी।

सभी संसदीय क्षेत्रों में दो-दो वीडियो वैन जिनमें संकल्प पत्र सुझाव पेटिका भी रखी होगी भेजेंगे और प्रत्येक संसदीय क्षेत्र के लिये अपनी समिति के सदस्यों की एक टीम भी गठित की है जो संसदीय क्षेत्र में जाकर भी समाज के विभिन्न वर्गों से और वीडियो वैन के माध्यम से सुझाव एकत्र करेंगे।

नए वकीलों को मिलेगा 10 लाख का स्वास्थ्य बीमा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● आप सरकार हर साल वकीलों की बेहतरी के लिए चीफ मिनिस्टर एडवोकेट वेलफेयर स्कीम को 50 करोड़ रुपये देती है : आतिशी

आम आदमी पार्टी की सरकार चीफ मिनिस्टर एडवोकेट वेलफेयर स्कीम के तहत 3220 नए वकीलों को 5 लाख रुपये का परिवार स्वास्थ्य बीमा और 10 लाख रुपये का टर्म इंश्योरेंस देने का फैसला किया है। योजना के लिए वकील का बार काउंसिल ऑफ दिल्ली में पंजीकृत होना और दिल्ली का मतदाता होने चाहिए।

इस निर्णय को मुख्यमंत्री आतिशी ने मंजूरी दे दी है। वर्तमान में 27,000 से ज्यादा वकीलों को 10 लाख का टर्म इंश्योरेंस और 5 लाख का स्वास्थ्य बीमा दे रही है। अब ये संख्या बढ़कर लगभग 31,000 हो जाएगी। इस महत्वपूर्ण निर्णय पर मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा, आम आदमी पार्टी सरकार ने हमेशा वकीलों की बेहतरी के लिए काम किया है और करती रहेगी। वकीलों का व्यवसाय सबने महत्वपूर्ण, संविधान को साक्षात रूप में उतारकर लोगों को न्याय दिलवाते है। उन्होंने कहा कि, वर्ष 2019 में दिल्ली सरकार ने वकीलों की बेहतरी के लिए चीफ मिनिस्टर एडवोकेट वेलफेयर स्कीम की शुरुआत की, और सालाना इसमें 50 करोड़ रुपये का फण्ड देती है। इसके तहत पंजीकृत सभी वकीलों को 10 लाख रुपये की टर्म इंश्योरेंस और अब 5 लाख तक का हेल्थ इंश्योरेंस मिलता है। जब इस स्कीम की शुरुआत हुई उसके तुरंत बाद कोरोना के दौरान ये स्कीम वकील साथियों के लिए बहुत मददगार साबित हुआ। हजारों वकीलों और उनके परिवारों ने मेडिकल इंश्योरेंस का लाभ उठाया। मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि एक सरकार के रूप में हम वकीलों के प्रति अपनी सभी जिम्मेदारी निभाते आये है और आते रहेंगे। हम हमेशा वकीलों की बेहतरी के लिए काम करते रहेंगे।

कैग रिपोर्ट की याचिका पर नौ को होगी सुनवाई

नई दिल्ली। उच्च न्यायालय नौ दिसंबर को भाजपा के विधायकों की उस याचिका पर सुनवाई करेगा जिसमें आबकारी शुल्क, प्रदूषण और वित्त से संबंधित नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट विधानसभा में पेश करने के निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। न्यायमूर्ति संजीव नरूला ने सोमवार को याचिका पर सुनवाई स्थगित करते हुए कहा कि मामले में दलीलें पूरी नहीं हुई हैं।

बिना तैयारी के सरकार ने बुलाया विधानसभा का सत्र : विजेंद्र

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● तीन दिन की घोषणा के बावजूद केवल एक दिन ही चली सदन की कार्यवाही, बिना कारण बताये ही 2 और 3 दिसम्बर का सत्र स्थगित कर दिया गया

नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने आम आदमी पार्टी सरकार पर आरोप लगाया है कि दिल्ली सरकार ने बिना तैयारी के विधानसभा का सत्र बुला लिया और उसमें किसी भी जनहित के मुद्दे पर चर्चा नहीं की गई। तीन दिन के सत्र की घोषणा के बावजूद 29 नवंबर को सत्र के पहले दिन कार्यवाही को चंद घंटों में ही समेट दिया गया और एक दिन चली कार्यवाही में सिर्फ केंद्र सरकार की आलोचना को ही कार्यवाही का हिस्सा बना दिया गया।

विजेंद्र गुप्ता ने एक वीडियो संदेश जारी कर कहा कि विधानसभा का यह अंतिम सत्र तीन दिन यानी 29 नवंबर, 1 दिसंबर और 2 दिसंबर तक चलेगा, लेकिन अचानक 29 नवंबर की शाम 4 बजे ही सदन को स्थगित कर दिया गया। न तो प्रश्नकाल रखा गया, न ही अल्पकालिक चर्चा और ध्यानाकर्षण का प्रावधान किया गया। उन्होंने कहा कि बड़ी हैरानी की बात है कि घोषणा के बावजूद सरकार ने एक और 2 दिसंबर को सत्र का आयोजन ही नहीं किया। सरकार ने संशोधित बजट अनुमान को गृह मंत्रालय से मंजूरी लेने के लिए गृह मंत्रालय को भेजा हुआ है, जिसके चलते ही 2 दिसंबर को सत्र नहीं बुलाया गया। गुप्ता ने सवाल किया कि यदि सरकार को 'संशोधित बजट अनुमान' मंजूर करवाना था तो इससे पहले ही गृह मंत्रालय को भेजा जाना चाहिए था, लेकिन सरकार ने जानबूझकर ऐसा नहीं किया और बिना तैयारी के ही औपचारिकता पूरी करने के लिए सत्र बुला लिया गया। विपक्ष की मांग के बावजूद सरकार कैग की लंबित 14 रिपोर्ट्स को सदन में पेश नहीं कर रही है।

केजरीवाल समेत कई विधायक सुरक्षित सीटों की तलाश में जुटे : देवेंद्र यादव

● बोले, भ्रष्टाचार के प्रति लोगों के गुस्से और हार का डर अब सताने लगा है

दिल्ली न्याय यात्रा के दौरान जनता का अभिवादन स्वीकार करते देवेंद्र यादव।

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि दिल्ली न्याय यात्रा को जनता के भरपूर समर्थन मिल रहा है। लोगों को धोखा देकर और भ्रम फैलाकर सत्तासीन हुए अरविन्द केजरीवाल को अब हार का डर सताने लगा है। विधानसभा चुनाव में हार के डर के कारण जहां आम आदमी पार्टी के बड़े नेता अपनी सीट बदल कर सुरक्षित सीटों की तलाश कर रहे है वहीं अरविन्द केजरीवाल भी हार के डर से अपनी नई दिल्ली विधानसभा सीट को बदल कर चुनाव लड़ेंगे।

आम आदमी पार्टी पर निशाना साधते हुए यादव ने कहा कि दिल्ली में 11 वर्षों के कुशासन, भ्रष्टाचार, निष्क्रियता और जनता की अनदेखी करना आम आदमी पार्टी को भारी पड़ रहा है। केजरीवाल सहित उनके मंत्री और विधायकों ने अपने कार्यकाल में जनता की समस्याओं पर कभी गौर नहीं किया और सत्ता से पहले हर चुनाव में जो वादे किए थे उनको निभाने में विफल रहे है। राजधानी में बदलता माहौल इतना गरमरा गया है कि चुनावी सभाओं में केजरीवाल सहित इनके मंत्रियों और नेताओं का बहिष्कार किया जा रहा है। केंजरीवाल को लगातार जनता के विरोध का सामना करना पड़ रहा है।

जनता के पैसे को भ्रष्टाचार की भेट चढ़ाकर अपने चुनावों में इस्तेमाल करने वाली आम आदमी पार्टी का चेहरा बेनकाब हो चुका है।

दिल्ली दंगों में हत्या के मामले के पांच आरोपी दोषी करार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

● घातक हथियारों से लैस दंगाई भीड़ ने 25 फरवरी 2020 कर दी थी युवक की हत्या

राष्ट्रीय राजधानी की एक अदालत ने वर्ष 2020 के उत्तर-पूर्वी दिल्ली दंगा मामले में पांच व्यक्तियों को गैर इरादतन हत्या और गैर कानूनी तरीके से एकत्र होने का दोषी करार दिया। इस घटना में, भीड़ ने एक व्यक्ति की बर्बरता से हत्या कर दी थी।

अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पुलस्त्य प्रमाचला सात आरोपियों के खिलाफ दयालपुर पुलिस थाने में दर्ज मामले की सुनवाई कर रहे हैं। दिल्ली पुलिस की ओर से विशेष लोक अभियोजक मधुकर पांडे पेश हुए। अदालत ने गत शनिवार को 63 पन्नों के फैसले में सबूतों पर गौर किया और कहा कि यह स्थापित हो गया है कि हथियारों से लैस दंगाई भीड़ ने 25 फरवरी 2020 को चांद बाग इलाके में पीर बाबा मजार के पास मोहसिन की हत्या की थी। अदालत ने कहा, मामले में विवाद की मुख्य वजह इस सवाल के इर्द-गिर्द है कि क्या आरोपी व्यक्ति दंगाइयों में शामिल थे, जिन्होंने मोहसिन पर बर्बरता से हमला किया जिससे उसकी मौत हो गई। अदालत ने कहा कि अभियोजन पक्ष के चार गवाहों की गवाही में कोई संदेह नहीं है कि पांच आरोपी - अरुण, अमन कश्यप, आशीष, प्रदीप राय और देवेंद्र कुमार - उस दंगाई भीड़ का हिस्सा थे, जिसने मोहसिन पर हमला किया था। अदालत ने कहा कि लेकिन यह साबित करने के लिए कोई सबूत नहीं है कि इन पांच आरोपियों ने मोहसिन पर हमला किया था।

कोचिंग शिक्षक अवध ओझा आप में शामिल

● ओझा ने कहा, बच्चों के भविष्य पर केंद्रित विचारधारा के कारण जुड़े

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

सिविल सेवा कोचिंग शिक्षक और प्रेरक वक्ता अवध ओझा सोमवार को आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए और पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल तथा वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया की उपस्थिति में उनका स्वागत किया गया। ओझा ने कहा कि वह पार्टी की बच्चों के भविष्य पर केंद्रित विचारधारा से जुड़े हैं और उन्होंने शिक्षा के विकास को अपनी सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा बताया।

चर्चा है कि अवध ओझा पटपड़गंज से विधानसभा क्षेत्र चुनाव लड़ सकते हैं, जहां से मनीष सिसोदिया विधायक हैं। इस सीट पर ब्राह्मण और गुर्जर वोटरों का दबदबा है। सूत्रों के अनुसार सिसोदिया इस बार जंगपुरा से चुनाव लड़ सकते हैं।

अवध ओझा को पार्टी में शामिल करते आप संयोजक अरविंद केजरीवाल।

ओझा ने पार्टी में शामिल होने के बाद कहा, मैं अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने मुझे राजनीति के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में काम करने का मौका दिया। केजरीवाल ने कहा कि आप, शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही है और ओझा के पार्टी में शामिल होने से शिक्षा को मजबूत करने के प्रयासों में तेजी आएगी तथा इससे हमारा राष्ट्र मजबूत होगा।

सिसोदिया ने कहा कि यह एक विशेष दिन है और ओझा शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा काम कर रहे हैं, जिसके लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है। दिल्ली में अगले साल फरवरी में विधानसभा चुनाव होने हैं। आप ने वर्ष 2020 में 70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा में 62 सीट जीती थी और अब पार्टी लगातार तीसरी बार जीत की उम्मीद कर रही है।

व्यापारियों के लिए पार्टियां अलग से बनाएं मैनिफेस्टो : सीटीआई

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

विधानसभा चुनाव फरवरी में होना है, ऐसे में सभी दल अपनी-अपनी तैयारी में जुटे हैं। अलग-अलग संगठनों ने भी अपने मुद्दे राजनीतिक दलों तक पहुंचाने शुरू कर दिए हैं। इसी कड़ी में चैंबर ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री की नेशनल कोर कमिटी की भी कल मीटिंग हुई। बैठक में तय हुआ कि सीटीआई चुनाव से पहले मार्केट एसोसिएशन्स, इंडस्ट्री एसोसिएशन्स , ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन्स, होटल-रेस्टोरेंट और बैंक्वेट एसोसिएशन्स के व्यापारियों के साथ 100 से ज्यादा मीटिंग करेगी, जिसमें व्यापारियों के मुद्दों को समझकर 10 पॉइंट का एजेंडा तैयार किया जाएगा। इन मांगों को सभी पार्टियों को भेजा जाएगा और जो पार्टी व्यापारियों के मुद्दों को अपने घोषणा पत्र में शामिल करेगी, व्यापारी उसका साथ देंगे।

सीटीआई के चेयरमैन बृजेश गोयल ने बताया कि दिल्ली में 9 लाख दुकानें, 2 लाख फैक्ट्रियां, रेस्टोरेंट, बैंक्वेट, ट्रांसपोर्ट, सैलून, बुटीक आदि को मिलाकर 20 लाख से ज्यादा व्यापारी हैं, ऐसे में व्यापारियों के लिए अलग घोषणा पत्र होना चाहिए। इसी को ध्यान में रखते हुए बैठक की थी और अब आने वाले दिनों में व्यापारियों से मिलकर उनकी मांगों को सुना जाएगा।

मनीष सिसोदिया की याचिका पर ईडी से मांगा जवाब

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

उच्च न्यायालय ने आम आदमी पार्टी के नेता मनीष सिसोदिया की उस याचिका पर प्रवर्तन निदेशालय से सोमवार को जवाब मांगा, जिसमें कथित आबकारी नीति घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में दायर आरोप-पत्र पर संज्ञान लेने के अधीनस्थ अदालत के आदेश को चुनौती दी गई है।

न्यायमूर्ति मनोज कुमार ओहरी ने ईडी को नोटिस जारी किया और सिसोदिया की याचिका पर सुनवाई के लिए 20 दिसंबर की तारीख निर्धारित की। इसी तारीख पर आप प्रमुख अरविंद केजरीवाल की इसी तरह की याचिका भी आगे की सुनवाई के लिए सूचीबद्ध है। पूर्व उपमुख्यमंत्री ने अधीनस्थ अदालत के आदेश को रद्द करने के वास्ते उच्च न्यायालय से निर्देश देने के अनुरोध के लिए यह तथ्य रखा कि विशेष न्यायाधीश ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए कोई भी मंजूरी नहीं होने के बाद भी आरोप-पत्र पर संज्ञान लिया जबकि वह कथित अपराध के समय एक लोक सेवक थे। इस मामले में सिसोदिया जमानत पर हैं। सीबीआई और ईडी के अनुसार आबकारी नीति में संशोधन करते समय अनियमितताएं की गईं और लाइसेंस धारकों को अनुचित लाभ पहुंचाया गया। दिल्ली सरकार ने 17 नवंबर 2021 को नीति लागू की और भ्रष्टाचार के आरोपों के बीच सितंबर 2022 के अंत तक इसे रद्द कर दिया। आबकारी नीति लागू करने में कथित अनियमितताओं की जांच के लिए एलजी की सिफारिश के बाद सीबीआई ने मामला दर्ज किया और यह मामला इसी से संबद्ध हैं।

ईडी अमानतुल्लाह की रिहाई के खिलाफ हाईकोर्ट पहुंची

नई दिल्ली। ईडी ने दिल्ली वक्फ बोर्ड में कथित अनियमितताओं से संबंधित धन शोधन के एक मामले में आप विधायक अमानतुल्लाह खान के खिलाफ दाखिल आरोपपत्र पर संज्ञान लेने और उन्हें रिहा करने से इनकार करने के निचली अदालत के आदेश के खिलाफ उच्च न्यायालय में याचिका दायर की। न्यायमूर्ति मनोज कुमार ओहरी ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से मामले में निचली अदालत द्वारा पारित विभिन्न आदेशों को प्रस्तुत करने को कहा। न्यायमूर्ति ओहरी ने कहा, मंजूरी का मुद्दा आपके सामने है।

जगदीश टाइटलर के खिलाफ नौ को सुनवाई

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता जगदीश टाइटलर के खिलाफ 1984 के सिख विरोधी दंगों के मामले में गवाह के रूप में दो पूर्व पुलिस अधिकारियों के बयान दर्ज करने के लिए नौ दिसंबर की तारीख तय की। सीबीआई के मामलों की सुनवाई करने वाले विशेष न्यायाधीश जितेंद्र सिंह ने यह जानकारी मिलने के बाद सुनवाई टाल दी कि गवाह सोमवार को गवाही देने की स्थिति में नहीं हैं।

संक्षिप्त समाचार

लाला रामचरण अग्रवाल को दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। दिल्ली के प्रथम उपमहापौर व स्वतंत्रता सेनानी स्व. लाला रामचरण अग्रवाल की 107वीं जयंती पर उन्हें यादकर श्रद्धांजलि दी गई। उनके नाम से विख्यात रामचरण अग्रवाल चौक, आईटीओ उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम हुआ। जिसमें दिल्ली कांग्रेस प्रभारी काजी निजामुद्दीन, कांग्रेस सचिव दानिश अबरार, डेनी जी, पूर्व विधायक कुंवर करन सिंह, आसिफ, अनिल भारद्वाज, पूर्व निगम पार्षद महमूद जिया, निगम पार्षद अरीबा आदि मौजूद थे

दस करोड़ के गांजा के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली। सीमा शुल्क विभाग ने इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 10 करोड़ रुपए का गांजा कथित तौर पर तस्करी कर देश में लाने के मामले में दो भारतीय नागरिकों को गिरफ्तार किया गया है। गत 26 नवंबर को थाईलैंड के फुकेट से यहां पहुंचने पर आरोपियों को रोका गया था। सीमा शुल्क विभाग ने कहा कि उनकी ट्रॉली बैग की तलाशी लेने पर पॉलीथीन की 17 थैलियां मिलीं जिनमें हरे रंग का मादक पदार्थ था और संदेह है कि यह 9,979 ग्राम गांजा है। पदार्थ की जांच की जा रही है लेकिन प्रथम दृष्टया यह गांजा लगा, जिसकी कीमत करीब 10 करोड़ आंकी गई है।

एनडीएमसी बनाएगा दो भूमिगत जलाशय : चहल

नई दिल्ली। जल जीवन मिशन के तहत, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् अपने इलाके विनय मार्ग क्षेत्र में चौबीस घंटे जल आपूर्ति परियोजना का पहला चरण शुरू किया है। यह पायलट परियोजना मौजूदा जल पाइपलाइन ग्रिड नेटवर्क का उपयोग करके निरंतर फिल्टर्ड पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। गर्मी के दौरान जल की मांग को पूरा करने के लिए परिषद ने जल संकट को दूर करने के लिए दो नई भूमिगत जल भंडारण इकाइयों के निर्माण का प्रस्ताव किया है। एक नवयुग स्कूल, सरोजिनी नगर में और दूसरी तालकटोरा क्रिकेट ग्राउंड में स्थित होगी। इन अतिरिक्त इकाइयों से नई दिल्ली क्षेत्र में जल भंडारण क्षमता में वृद्धि होगी।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमलों के खिलाफ प्रदर्शन

नई दिल्ली। विश्व हिंदू परिषद की दिल्ली इकाई ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमलों के खिलाफ सोमवार को यहां जंतर-मंतर पर प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में हिस्सा लेने वाले बांग्लादेश में हिंदुओं की सुरक्षा की मांग करते हुए नारेबाजी की। प्रदर्शन का नेतृत्व विहिप की दिल्ली इकाई के प्रमुख कपिल खन्ना ने किया। बांग्लादेश में 17 करोड़ की आबादी में हिन्दुओं की आबादी आठ प्रतिशत है। इस्कॉन ने बांग्लादेश की घटनाओं के विरोध में कोलकाता में अपने अल्बर्ट रोड केंद्र पर विरोध स्वरूप कीर्तन किया था।

'आप' को स्वास्थ्य से ज्यादा शराब की बिक्री में रुचि : मांडविया

● केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने राजधानी दिल्ली में आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बीमा योजना को लागू नही करने पर आम आदमी पार्टी सरकार की आलोचना करते हुए साधा निशाना

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए।

केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया ने सोमवार को आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बीमा योजना को लागू नहीं करने के लिए आम आदमी पार्टी (आप) सरकार की आलोचना की और कहा कि उसे दिल्ली के नागरिकों के स्वास्थ्य से ज्यादा दिलचस्पी शराब की बिक्री में है।

मंत्री की टिप्पणी इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा दिल्ली के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसदों की आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) को लागू करने के अनुरोध वाली याचिका पर आप सरकार से जवाब मांगे जाने के एक सप्ताह बाद आई है।

मनसुख मांडविया ने सोमवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि दिल्ली और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बार-बार अनुरोध और इस आशय में केंद्र के पत्रों के बाद भी इस योजना को लागू नहीं कर रहे हैं। राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं लेकिन सभी के कल्याण के लिए भारत की संघीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के तहत लोक कल्याण कार्यों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

भारत सरकार ने दिल्ली सरकार को पत्र लिखकर इस योजना को लागू करने का आग्रह किया है, लेकिन दिल्ली सरकार की रुचि शराब की बिक्री और आबकारी नीति में अधिक है। उन्हें नागरिकों के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए और इसके लिए महत्वपूर्ण है कि इस योजना को राष्ट्रीय राजधानी में लागू किया जाए।

मांडविया ने कहा कि स्वास्थ्य बीमा का दायरा बढ़ाकर एबी-पीएमजेएवाई के तहत हर वर्ग के 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी लोगों को शामिल किया गया है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री के अनुसार, फिलहाल इलाज के लिए पांच लाख रुपए की बीमा सीमा को बढ़ाने की कोई योजना नहीं है। हालांकि, उन्होंने जोर देकर कहा कि इस योजना के तहत दी जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं की लगातार निगरानी की जाती है ताकि अधिक शुल्क वसूलने जैसी चीजों को रोका जा सके।

बैंकर्स रोजगारपरक योजनाओं में करें भरपूर सहयोग-बीएन सिंह

सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने कलेक्ट्रेट मीटिंग हाल में बैंकों की जिला स्तरीय समीक्षा बैठक की, बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि जो बैंकर्स जनमानस की सुविधा के अनुसार काम नहीं कर रहें हैं, वे अपने कार्य पद्धति में सुधार लायें अन्यथा उनके विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही हेतु उच्च स्तर पर पत्राचार किया जायेगा, जो बैंकर्स विभिन्न विभागों द्वारा योजनाओं से सम्बन्धित पत्रावलियों का ससमय निस्तारण सुनिश्चित नहीं कर रहे हैं और जनमानस को सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से लाभ नहीं मिल पा रहा है, ऐसे बैंकर्स अपने कार्यपद्धति में सुधार लायें, इस दौरान जिलाधिकारी ने एन0आर0एल0एम0 समूह के महिलाओं के खाता खोलने, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, पी0एम0 स्वनिधि योजना के प्रगति की समीक्षा की तो यह तथ्य संज्ञान में आया कि पत्रावलियों का निस्तारण समय से नहीं किया जा रहा है, उन्होंने पत्रावलियों के निस्तारण में तेजी लाने के निर्देश दियें। जिलाधिकारी ने कहा कि बैंकर्स रोजगार परक योजनाओं में सहयोग करते हुए स्थानीय रोजगार को बढ़ावा देने हेतु पत्रावलियों का ससमय निस्तारण करे। बैंकों की जिला स्तरीय समीक्षा के दौरान जिला विकास अधिकारी शेषनाथ चौहान एल0 डी0 एम0 सलन बागे के0के0 श्रीवास्तव कुमार कौशल कौश्विक हरिकृष्ण मिश्र आर0पी0 गौतम आनन्द कुमार पाण्डेय सौरभ श्रीवास्तव अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह सहित जिले के सम्बन्धित बैंक प्रतिनिधि उपस्थित रहें।

बीएसएफ जवान को दी श्रद्धांजलि

गाजीपुर। सीमा सुरक्षा बल ;बीएसएफद्ध में तैनात जवान रामवंत प्रसाद ;32द्ध की रविवार को पूर्वाह्न निधन हो गया। वह नगर के पावसगंज के निवासी थे। अपने पीछे पत्नी और दो बच्चों को छोड़ गए। उनके बड़े भाई जामवंत प्रसाद के अनुसार नगर क्षेत्र के पावसगंज निवासी रामवंत प्रसाद बीएसएफ में कार्यरत थे। जो वर्तमान समय में न्यू कूचबिहारए वेस्ट बंगाल में कुक के पद पर कार्यरत थे। जिनकी नियुक्ति वर्ष 2013 में हुई थी। विगत कुछ दिनों से छुट्टी पर घर आए हुए थे। रविवार को सुबह नाश्ता कर के बैठे की तबियत बिगड़ गई। आनन पानन में परिजन मेडिकल कालेज के अधीन जिला अस्पताल ले गए। जहां डाक्टरों ने जांच कर उन्हें मृत करार दिया। उनका विवाह वर्ष 2019 में हुआ था। अपने पीछे वह पत्नी गीताए पुत्री गर्विता ;3द्ध तथा पुत्र ऋषभ ;2द्ध को छोड़कर गए है। उनके माता पिता का निधन पहले ही हो चुका हैं। जिनका दाह संस्कार सोमवार को अपराह्न पावसगंज स्थित गंगा घाट पर किया गया। मुखाग्नि उनके बड़े भाई जामवंत प्रसाद ने दी। बीएसएफ के एसआई राजेश जी के नेतृत्व में आए हुए सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने पूरे सम्मान के साथ गार्ड ऑफ ऑर्नर दिया। उनके निधन पर पूर्व नपा अध्यक्ष विनोद अग्रवालए भाजपा जिलामंत्री धनेश्वर बिंदए राज्यसभा सांसद डॉण् संगीता बलवंत के प्रतिनिधि अरविंद कुमारए समासद अशोक मौर्यए दिग्विजय पासवानए इंद्रजीत चौधरीए अमित चौधरीए नगीनाए जोखनए आकाश चौधरी सहित सैकड़ों ने लोगों ने उपस्थित होकर श्रद्धांजलि दी।

राज्य विद्युत परिषद के अध्यक्ष चुने गए इ. मिथिलेश

गाजीपुर। राज्य विद्युत परिषद जूनियर इंजीनियर संगठन की अंधऊ स्थित संगठन भवन में निर्वाचन हुआ जिनमें जनपद सचिव इं इंद्रजीत पटेल एवं जनपद अध्यक्ष इंजीनियर मिथिलेश यादव को संगठन के सभी सदस्यों द्वारा निर्विरोध चुना गयाए जिसमें निर्वाचन अधिकारी क्षेत्रीय सचिव इं रोहित एवं क्षेत्रीय अध्यक्ष इं पंकज जयसवाल की उपस्थिति में हुआए विद्युत प्रबंधन के निजीकरण रवैया को देखते हुए राज्य विद्युत परिषद के जनपद अध्यक्ष मिथिलेश यादव ने बताया कि अभी तक जनपदीय कार्यकारिणी का चुनाव नहीं हुआ था चुनाव करवाना अत्यंत आवश्यक था क्योंकि इस विकट परिस्थिति में केंद्रीय संगठन द्वारा जो भी निर्देश प्राप्त होता है उसका संगठन के समस्त सदस्यों द्वारा कड़ाई से पालन करेंगे एवं हर परिस्थिति से संवैधानिक तरीके से आंदोलन करने हेतु प्रतिबद्ध रहेंगे। कार्यकारिणी के पदाधिकारियों में जनपद सचिव . इं इंदजीत पटेलए अध्यक्ष . इं मिथिलेश यादवए उपाध्यक्ष. इं इंदल रामए वरिष्ठ उपाध्यक्ष . इं कमलेश प्रजापतिए मंडल अध्यक्ष. इं शशिकांत पटेलए मंडल सचिव.इं रामप्रवेश चौहानए जनपद लेखा निरीक्षक .इं आशीष यादवए जनपद प्रचार सचिव.इं अनिल राव व जनपद वित्त सचिव.इं महबूब आलम चुने हुए पदाधिकारियों ने निजीकरण का भी विरोध किया।

पत्रकार को पितृ शोक, दी गई श्रद्धांजलि

सोनभद्र। दैनिक समाचार पत्र के पत्रकार विनय शंकर सिंह के पिता केशव सिंह का 88 वर्ष की आयु में सोमवार को जनपद मुख्यालय राबर्ट्सगंज स्थित आवास पर निधन हो गया है। वह पिछले कई माह से बीमार चल रहे थे। उनका अंतिम संस्कार देर रात वाराणसी स्थित मणिकर्णिका घाट पर किया गया। श्रमजीवी पत्रकार यूनियन उत्तर प्रदेश जनपद सोनभद्र द्वारा सोमवार को केशव सिंह के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। यूनियन के जिलाध्यक्ष ब्रजेश कुमार शुक्ल ने कहा कि उनका निधन समाज की आपूर्णिय क्षति है। वह जीवन पर्यंत धार्मिक कार्यों से जुड़े रहे। उनकी निगरानी में आस्था से जुड़े विभिन्न आयोजन हुए। इस मौके पर रामप्रसाद यादव गिरीश पांडेय मोनू गुप्ता संतोष सिंह चंदेल सुशील मिश्रा आशुतोष पांडेय विकास द्विवेदी अवधेश चौरसिया संतोष राजेंद्र पांडेय ओमप्रकाश कुशवाहा जुल्फेकार हैदर प्रशांत शुक्ल आदि रहे।

करणवीर ने अंधकासुर की भूमिका में की वापसी

वाराणसी। कलर्स के शिव शक्ति तप त्याग तांडव ने माइथॉलजी ड्रामा और अद्भुत किरदारों के मंत्रमुग्ध करने वाले ब्लेंड से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया है। अपनी मनोरंजक कहानी और बेहतरीन विजुअल कलात्मकता के लिए तारीफें पाने वाला यह शो दर्शकों को निरंतर रोमांचित करते हुए अच्छाई और बुराईए पाप और पुण्य भक्ति और चुनौती के बीच की शाश्वत लड़ाई को एक्सप्लोर करता है। अपनी मनोरंजक कहानी के साथए यह महागाथा अब एक बड़ा ट्विस्ट लेने के लिए तैयार है क्योंकि करणवीर बोहरा खतरनाक अंधकासुर की भूमिका में कदम रख रहे हैं एक राक्षस जिसने खुद भगवान शिव को चुनौती देने का साहस किया था।

सेवानिवृत्त कर्मियों के सम्मान में अभिनंदन समारोह

सोनभद्र। शनिवार को भारत सरकार की मिनीरत्न कंपनी नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड से नवंबर माह 33 कर्मी सेवानिवृत्त हुए। एनसीएल मुख्यालय से राकेश कुमार सिंह गौतम आशुतोष कुमार सिंह भगवान प्रसाद वर्मा सुनील राम सेवानिवृत्त हुए। कंपनी मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान एनसीएल सीएमडी बी. साईराम मनीष कुमार रजनीश नारायण जितेंद्र मलिक एवं मुख्यालय के विभागाध्यक्ष अन्य अधिकारी व कर्मचारी तथा सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों के परिजन उपस्थित रहे। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में सीएमडी ने सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों के कंपनी की सफलता में अभूतपूर्व योगदान हेतु आभार व्यक्त किया एवं उनके सुखद भविष्य की कामना की। इसके साथ ही निदेशक मण्डल ने भी सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों को जीवन की आगामी पारी में नयी उमंग के साथ बढ़ने का संदेश देते हुए उनके सुखी एवं स्वस्थ भविष्य की शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम के दौरान सेवानिवृत्त हो रहे कर्मीयों ने एनसीएल में अपने लंबे कार्यालयीन जीवन के अनुभवों को सभी के साथ साझा किया और अपनी उपलब्धियों का श्रेय एनसीएल को दिया।

उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए विशेष समाधान योजना

वाराणसी। दूर.संचार सेवा प्रदाता वी ने आज उपभोक्ताओं को स्पैम से सुरक्षित रखने की दिशा में महत्वपूर्ण घोषणा की है। आज से कंपनी एआई और एमएल द्वारा पावर्ड स्पैम मैनेजमेन्ट समाधान ला रही है। यह नया समाधान मशीन आधारित ऑटोमेटेड समाधान के माध्यम से संभावी स्पैम मैसेजेज़ को पहचान लेता है जिससे वी के यूज़र मोबाइल का सुरक्षित एवं सहज अनुभव पा सकते हैं। इस अवसर पर जगबीर सिंह सीटीओ वोडाफोन आइडिया लिमिटेड ने कहा कि आज के दौर में अधिक से अधिक उपभोक्ता डिजिटल कम्युनिकेशन को अपना रहे हैए ऐसे में स्पैम मैसेजेज़ और इनके ज़रिए धोखाधड़ी के मामले भी बढ़ रहे हैं। हम उपभोक्ताओं की इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए एआई.पावर्ड स्पैम डिटेक्शन टेक्नोलॉजी लेकर आए हैं।

गैंगेस्टर एक्ट में वांछित दो अभियुक्त गिरफ्तार

सोनभद्र। अपराध एवं अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में पन्नूगंज पुलिस द्वारा स्थानीय थाना पर गैंगेस्टर एक्ट समेत अन्य धाराओं में पंजीकृत मुकदमें में वांछित 02 अभियुक्त राजन उर्फराजा अली पुत्र तैय्यब अली उम्र लगभग 28 वर्ष निवासी ग्राम सेमरिया थाना रायपुर जनपद सोनभद्र, व संतोष मौर्या पुत्र स्व0 अवध बिहारी मौर्या उम्र लगभग 34 वर्ष निवासी ग्राम बगनियांव थाना पन्नूगंज जनपद सोनभद्र को सोमवार को कर्मनाशा पुल के पास से गिरफ्तार कर विधिक कार्रवाई करते हुए न्यायालय भेज दिया गया।

एप के माध्यम से ई रिक्शा और ई ऑटो भी बुक कर सकेंगे महाकुंभ आने वाले श्रद्धालु

मनमाना किराया वसूलने वाले रिक्शा चालकों से मिलेगी राहत, प्रति किमी के हिसाब से निश्चित होगा किराया-हर रिक्शा चालक का होगा वेरीफिकेशन, विदेशी श्रद्धालुओं से संवाद के लिए गूगल वॉइस असिस्टेंट का लिया जाएगा सहारा

प्रयागराज। महाकुम्भ मेला में आने वाले श्रद्धालुओं की सुगम सुरक्षित एवम सुविधाजनक यात्रा के लिए योगी सरकार कटिबद्ध है। सरकार के इस प्रयास को सार्थक बनाने के लिए तमाम प्रयास किए जा रहे हैं। जिसमें सरकारी परिवहन के साथ.साथ निजी परिवहन सेवा प्रदाता भी पूरी तरह सहयोग कर रहे हैं। इसी क्रम में महाकुम्भ हेतु प्रयागराज आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर लोकल ट्रांसपोर्ट की सुविधा देने के लिए ओला और उबर की तर्ज पर एप के माध्यम से ऑनलाइन ई रिक्शा और ई ऑटो बुकिंग की सुविधा का भी लाभ मिलने जा रहा है। इन ई व्हीकल्स के ड्राइवर्स पूरी तरह ट्रेन्ड और वेल बिहेव्ड होंगे। साथ ही इसमें पिंक टैक्सी की भी सुविधा प्राप्त होगी जिसमें महिलाएं चालक होंगी। सबसे खास बात कि श्रद्धालुओं को मनमाना किराया वसूलने वाले रिक्शा चालकों से छुटकारा मिलेगा। 15 दिसंबर से श्रद्धालु और पर्यटक इस सुविधा का लाभ उठा सकेंगे। महाकुम्भ से पहले इस तरह की पहल से श्रद्धालुओं को न सिर्फ सुविधाजनक और सस्ती लोकल राइड का लाभ मिलेगा बल्कि योगी सरकार के ग्रीन महाकुम्भ की अवधारणा को भी समर्थन मिलेगा। महाकुम्भ के दौरान प्रयागराज में 45 करोड़ श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। सरकार की ओर से इन श्रद्धालुओं को प्रयागराज लाने के लिए सात हजार से अधिक रोडवेज बसों और 550 शटल बसों के संचालन का निर्णय लिया गया है। जबकि रेलवे भी करीब एक हजार अतिरिक्त ट्रेनों के साथ ही कुल तीन हजार ट्रेनें चलाने जा रहा है। इसी क्रम में प्रयागराज में श्रद्धालुओं को लोकल ट्रांसपोर्ट की कमी न हो इसके लिए यूपी के स्टार्टअप कॉम्पमी ई मोबिलिटी ने ऑनलाइन ई रिक्शा और ई ऑटो बुकिंग की सुविधा प्रदान करने का निर्णय लिया है। 15 दिसंबर से शुरू हो रही इस सेवा में श्रद्धालु लोकल राइड के लिए ई व्हीकल्स को चुन सकेंगे। खास बात ये है कि सभी ड्राइवरों को अगंतुक से अच्छा व्यवहार करने की ट्रेनिंग दी जाएगी और जिन श्रद्धालुओ को हिंदी या अंग्रेजी भाषा में दिक्कत है उनकी सुविधा के लिए सभी ड्राइवरों को गूगल वॉइस असिस्टेंस की ट्रेनिंग भी दी जा रही है। यह ई व्हीकल्स रेलवे स्टेशन बस अड्डा हवाई अड्डा एवं सभी होटलों से आराम से उपलब्ध हो सकेंगे। इसमें महिला ड्राइवर के साथ पिंक सेवा का भी प्रावधान है। शुरुआत में तीस चालीस पिंक टैक्सी सुविधा प्रदान करने के लिए अवेलबल होंगी। कॉम्पमी ई मोबिलिटी की फाउंडर और डायरेक्टर मनु गुप्ता ने बताया कि महाकुम्भ मेले में देश और विदेश के कोने कोने से आने वाले श्रद्धालुओं को एक सुविधाजनक सुरक्षित एवं पर्यावरण हितैषी एप आधारित ई रिक्शा टैक्सी सेवा प्रदान की जाएगी। महाकुम्भ के दौरान श्रद्धालुओं को सुविधा देने के साथ ही सस्ती राइड उपलब्ध कराने के लिए किसी भी ड्राइवर से कमीशन नहीं लिया जाएगा। सुरक्षित राइड के लिए प्रत्येक ड्राइवर और व्हीकल के ओनर का वेरिफिकेशन कराया गया है। तीन सौ ई रिक्शा के साथ पूरे प्रयागराज एवं कुंभ मेला में इसकी शुरुआत की जा रही है। सभी ड्राइवर्स को आगंतुकों के साथ अच्छे व्यवहार की ट्रेनिंग दी जा रही है। सभी ई रिक्शा और ऑटो जीपीआरएस सिस्टम से ट्रैक किए जाएंगे। जबकि यह पूरी तरह फिट और कवर्ड भी होंगे। इसका किराया पूरी तरह ट्रांसपेरेंट होगा जो प्रति किमी के हिसाब से निर्धारित किया गया है। इससे ज्यादा किराया वसूलने वाले रिक्शा चालकों से भी मुक्ति मिलेगी। किसी भी तरह की असुविधा होने पर श्रद्धालु कॉल सेंटर पर शिकायत भी कर सकेंगे।

प्लास्टिक मुक्त महाकुंभ के लिए अभियान तेज

प्रयागराज। प्रयागराज का महाकुम्भ विश्व के सबसे बड़े सम्मेलनों में से एक है। सीएम योगी महाकुम्भ को दिव्य भव्य के साथ ग्रीन महाकुम्भ के तौर पर विकसित करने के निर्देश दिये हैं। सीएम योगी महाकुम्भ के वैश्विक सम्मेलन से प्लास्टिक मुक्त ग्रीन महाकुम्भ का संदेश पूरे विश्व में फैलाना चाहते हैं। उन्होंने महाकुम्भ को पूरी तरह पर्यावरण की शत्रु प्लास्टिक से मुक्त रखने का संकल्प लिया है। इस दिशा में नगर निगम प्रयागराज भी नगर आयुक्त सीएम गर्ग के निर्देशन में पूरे शहर में प्लास्टिक मुक्त प्रयागराज का अभियान चला रहा है। नगर निगम की टीमें इंफोर्समेंट व्हीकल के साथ शहर में प्लास्टिक मुक्त प्रयागराज के लिए लोगों को जागरूक कर रही हैं साथ ही नियमों का उल्लघंन करने वालों पर इंफोर्समेंट की कार्यवाही भी की जा रही है। मुख्यमंत्री आदित्यनाथ की मंशा के मुताबिक महाकुम्भ 2025 को स्वच्छ महाकुम्भ ग्रीन महाकुम्भ बनाने का प्रयास किया जा रहा। इस दिशा में जहां एक ओर मेला प्राधिकरण मेला क्षेत्र को पूरी तरह प्लास्टिक मुक्त रखने की कवायद कर रहा है तो वहीं नगर निगम प्रयागराज भी पूरे शहर को प्लास्टिक फ्री रखने का अभियान चला रहा है। नगर आयुक्त सीएम गर्ग के मार्गदर्शन और निर्देशन में पूरे शहर में बारह बारह सदस्यों की दो टीमें और छह इन्फोर्समेंट व्हीकल के साथ स्वच्छ प्रयागराज प्लास्टिक मुक्त प्रयागराज का अभियान चला रही है। उनके निर्देशों के मुताबिक पूरे शहर को तीन नोड और आठ जोन में बांटा गया है। दोनों टीमें पूरे शहर में प्लास्टिक मुक्त प्रयागराज का जागरूकता अभियान चला रही हैं। साथ ही सिंगल यूज्ड प्लास्टिक का उपयोग करने वालों गंदगी फैलाने वालों और नगर निगम के निर्देशों का उल्लघंन करने वाले दुकानदारों के साथ इन्फोर्समेंट की कार्यवाही भी की जा रही है। चेतावनी के बाद भी नियमों का उल्लघंन करने वालों से जबी और चलान वसूली भी की जा रही है।

जागरूकता के साथ इन्फोर्समेंट की भी की जा रही है कार्यवाही

प्रयागराज। प्रयागराज नगर निगम विशेष तौर पर महाकुम्भ के दौरान पूरी तरह प्लास्टिक मुक्त रखना चाहता है। ताकि महाकुम्भ से स्वच्छ हरित पर्यावरण का संदेश विश्व पटल तक पहुंचे। नगर निगम प्रयागराज के नागरिकों और दुकानदारों से पर्यावरण की शत्रु प्लास्टिक के प्रयोग को हतोत्साहित कर रहा है। प्लास्टिक के विकल्प के तौर पर कुल्हड़ दोने पत्तल ओर कपड़े और जूट के थैलों के प्रयोग को प्रोत्साहित कर रहा है। साथ ही नियमों का उल्लघंन करने वालों के साथ सख्त कार्यवाही भी की जा रही है। इसके लिये नगर निगम की जागरूकता और इंफोर्समेंट टीम

यादगार बनेगा आस्था का महाकुंभ

सीईओ आरके चौहान ने बताया कि कॉम्पमी ई मोबिलिटी स्टार्टअप इंडिया से मान्यता प्राप्त है। हमारा उद्देश्य अर्बन ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र में पर्यावरण के अनुकूल इलेक्ट्रिक वाहनों को टैक्सी के रूप में प्रस्तुत कर वायु प्रदूषण को कम करना और रोजगार के अवसरों को बढ़ाना है। प्रयागराज में होने जा रहे महाकुम्भ से इसकी शुरुआत की जा रही है ताकि इस महापर्व को लोगों के लिए एक यादगार अनुभव बनाया जा सके। महाकुम्भ 2025 में पूरे विश्व से सनातनियों के अलावा विभिन्न समुदाय के लोग हिंदू धर्म के सबसे बड़े अनुष्ठान को देखने और समझने के लिए प्रयागराज आएंगे। वह यहां महाकुम्भ के मंथन से निकलने वाले पर्यावरण संरक्षण के संदेश यहां की संस्कृति एवं अनुभव अपने साथ लेकर जाएंगे। इस आयोजन के बाद इस पहल को हम प्रदेश के अन्य शहरों में लेकर जाएंगे।

जिलाधिकारी ने सम्पर्क मार्ग का किया निरीक्षण

मीरजापुर। जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने 50 सैय्यायुक्त नेत्र चिकित्सालय रमईपट्टी को जाने वाले सम्पर्क मार्ग का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने पार्किंग स्थल के बाउंड्रीवाल निर्माण कार्य पूर्ण कराने तथा अस्पताल को जाने वाले सम्पर्क मार्गो के चैड़ीकरण हेतु सम्बन्धित अधिकारी को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि कराए जा रहे कार्यो की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि यदि कार्य की गुणवत्ता खराब पाई जाती है तो सम्बन्धित के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जाएगी। निरीक्षण के दौरान नगर मजिस्ट्रेट लाल बहादुर सिंहए अधिशासी अभियन्ता आवास विकासए सहायक अभियन्ताए अपर मुख्य चिकित्साधिकारीए एस0डी0ओ0 बी0एस0एन0एल0 उपस्थित रहें।

मेगा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

गाजीपुर। समस्त शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं के निदान हेतु कल मंगलवारए दिनांक 3 दिसंबर को विश्व विकलांग दिवस के अवसर पर निरूशुल्क मेगा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन नई आशा . मानसिक एवं व्यवहारिक परामर्शन एवं पुनर्वास केंद्रए स्टेशन रोडए लंकाए पर नई आशा केन्द्र के तत्वावधान में किया गया है। इस बात की जानकारी नई आशा केन्द्र की संचालिका डा ज्योति शर्मा ने बताया कि इस मेगा शिविर में वरिष्ठ एवं ख्यातिलब्ध चिकित्सक भाग लेंगे। इस मेगा कैंप का उद्घाटन प्रोफेसर डॉक्टर आनंद मिश्रा प्रिंसिपल मेडिकल कॉलेज के द्वारा किया जाएगा इस कैंप में समस्त शारीरिक और मानसिक समस्याओं से संबंधित बीमारियों का संपूर्ण इलाज किया जाएगा।

एपीआरसी ग्रीन टीम विजयी

गाजीपुर। डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन ;सबद्ध दृ उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशनद्ध के तत्वाधान में जनपद गाजीपुर के स्थानीय स्वामी सहजानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालयए पीर नगर के जीण्डीण्सीण्ए मैदान पर चल रहे डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट लीग 2024.25 टूर्नामेंट का मैच एपीआरसी ग्रीन टीम और सीपीसीबी टीम के बीच खेला गया। इस मैच के पूर्व मुख्य अतिथि मोक्षदाययनी मां गंगा फाउंडेशन के सचिव स्वप्निल राय एवं दीपांकर राय मैच ने सभी खिलाडियों का परिचय प्राप्त किया। इस मैच में सीण्पीण्सीण्बी टीम ने टॉस जीत कर एण्पीण्आरण्सीण् ग्रीन टीम को पहले बल्लेबाजी करने के लिए आमंत्रित किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए एण्पीण्आरण्सीण् ग्रीन की टीम ने अजीत 80 रन तथा यश के 29 रनों के बदौलत 9 विकेट के नुकसान पर 183 रन बनाया। सीण्पीण्सीण्बी टीम के तरफ से अम्मार. 2ए भावेश.2ए अभिषेक.2ए सक्षम.2 तथा विनीत.1 विकेट लिया। 184 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए सीण्पीण्सीण्बी टीम मैच के 20 ओवर के पहले गेद पर 95 रनों के स्कोर पर आलआउट हो गयी। सीण्पीण्सीण्बीण् टीम की तरफ से मनीष ने सर्वाधिक 52 रन बनाया। एण्पीण्आरण्सीण् ग्रीन के तरफ से तौफिक.5 तथा अमन 2 विकेट लेकर 88 रनों से मैच जीत लिया। इस मैच में आशीष सिंह तथा आकाश यादव ने अंपायर तथा कुशाग्र और आयुष ने स्कोरर की भूमिका निभाई। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के अपैक्स कौंसिल सदस्य व गाजीपुर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के मुख्या संरक्षक संजीव कुमार सिंह के अतिरिक्त ने गाजीपुर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के वैभव सिंह एअजय सर्राफ डॉ यू सी राय आदि पदाधिकारियों के अतिरिक्त ज्ञानशील त्रिपाठी सीण्पीण्सी के पदाधिकारी रंजन सिंहए शहंशाह खानए अश्वनी रायए रोहित जयसवालए समीर रायए संतोष पाठक सहित बड़ी संख्या में खिलाड़ी उपस्थित थे। डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन शाश्वत सिंह ने बताया की लीग मैच काफी लम्बा चलेगा और कॉलेज में परीक्षा होने के कारण कुछ दिनों के लिए लीग मैच रुका रहेगा।

एडीएम ने उपनिबंधक कार्यालय का किया औचक निरीक्षण

अंबेडकर नगर।अपर जिलाधिकारी ;वित्त एवं राजस्वद्ध अम्बेडकर नगर डॉ0 सदानन्द गुप्ता द्वारा कार्यालय उपनिबंधक टाण्डा का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मौके पर उपनिबंधक सत्येन्द्र कुमार यादवए निबन्धन लिपिक राजेन्द्र प्रताप सिंह व शरीफुज्माए कम्प्यूटर ऑपरेटर विशाल तिवारी व परिचर फूलचन्द अपने.अपने कायों को करते पाए गये। अपर जिलाधिकारी ;वित्त एवं राजस्वद्ध द्वारा बैनामाए मुआयना आदि के लिए उपस्थित व्यक्तियों से पूछताछ भी की गयी। पूछताछ के दौरान कार्यालय के प्रति कोई भी शिकायत प्राप्त नहीं हुयीए सभी का कार्यालय के प्रति सकरात्मक रूख रहा। अपरजिलाधिकारी ;वित्त एवं राजस्वद्ध द्वारा उपनिबंधक टाण्डा को निर्देशित किया गया कि शत.प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति के साथ कार्यालय परिसर में पारदर्शी व्यवस्था के तहत कार्य किया जाय एवं जनता के हित के प्रति अपने कार्यों को जिम्मेदारी से निर्वहन किया जाय। साथ ही आई0जी0आर0एस0 या जनता दर्शन आदि से प्राप्त शिकायती प्रार्थनापत्र का ससमय गुणवत्तापूर्ण निस्तारण किया जाय।

साइकिल पाकर बालिकाएं गदगद

सोनभद्र। वनिता समाज शक्तिनगर में रविवार को उत्तरा महिला क्लब, लखनऊ की अध्यक्षा विजया राव, का आगमन हुआ। इस अवसर पर उन्होंने एनटीपीसी सिंगरौली द्वारा संचालित बालिका सशक्तिकरण अभियान के तहत लाभार्थी बालिकाओं को साइकिल वितरित किया तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। श्रीमती राव ने इस पहल को अत्यंत सराहनीय बताते हुए कहा कि ऐसी योजनाएं समाज में बालिकाओं की स्थिति को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। तत्पश्चात, श्रीमती राव ने एनटीपीसी सिंगरौली के सीएसआर विभाग द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने इन कार्यक्रमों को क्षेत्रीय विकास तथा सामाजिक उत्थान में योगदान देने हेतु अत्यंत प्रभावी बताया। कार्यक्रम में शक्तिनगर वनिता समाज की अध्यक्षा पीयूषा अकोटकर व वनिता समाज की अन्य सदस्याएँ भी उपस्थित रहीं।

एड्स दिवस पर भाषण व निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

गाजीपुर। जनपद में स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफण् डॉ राघवेंद्र कुमार पाण्डेय के निर्देशन में राष्ट्रीय सेवा योजना की सभी इकाइयों द्वारा ष्एड्स दिवसष् के अवसर पर भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों एवं स्वयंसेविकाओं ने राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों एवं स्वयंसेविकाओं ने बढ़.चढ़ कर हिस्सा लिया। प्रमुख वक्ता अतुल कुमार सिंह ने एड्स से बचाव के कई चरण बताए। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक स्टाफए कर्मचारी और एनएसएस के छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण भी आवश्यक-नमिता शरण

डीपीआरओ ने किया प्लास्टिक फ्री अभियान का निरीक्षण, 4578 घरों पर टांगी गई बोरी, 3160 किलो प्लास्टिक हुआ इकट्ठा

सोनभद्र। जिला पंचायत राज अधिकारी नमिता शरण द्वारा जिलें में शुरू किए गए प्लास्टिक फ्री पंचायत अभियान का असर अब दिखाना शुरू हो गया है, सोमवार को अभियान के 5वें दिन 61 ग्राम पंचायत से लगभग 3160 किलो प्लास्टिक एकत्र किया गया तथा 23322 घरों के सापेक्ष 4578 घरों पर बोरिया टांगी जा चुकी है। चार चरणों में चलाए जा रहें इस अभियान में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 61 ग्राम पंचायत का चयन किया गया था। ग्राम पंचायत के प्रधान और कर्मचारियों के प्रशिक्षण के उपरांत गांव में प्रधान के नेतृत्व में सफाई कर्मी एवं गांव के लोगों के द्वारा बिखरे हुए प्लास्टिक बिनकर इकट्ठा किया जा रहा है। द्वितीय चरण में लोगों द्वारा अपने घर पर प्लास्टिक की बोरी टांग कर उसी में प्लास्टिक रखा जा रहा है। उक्त के क्रम में ग्राम पंचायत भवानीपुर में प्लास्टिक फ्री अभियान का निरीक्षण जिला पंचायत अधिकारी नामित शरण द्वारा किया गया जिसमें उनके द्वारा घर-घर जाकर लोगों को जागरूक किया गया तथा गांव के लोगों से यह आह्वान किया गया कि अपना प्लास्टिक आप इसी बोर में रखें हमारे सफाई कर्मी ई रिक्शा के माध्यम से यह प्लास्टिक आपके बोरें में से कलेक्ट कर आर आर सी केंद्र पर इकट्ठा कर लेंगे। जिससे कि यह प्लास्टिक हमारे खेतों, नालियों, तालाबों में नहीं जाएगा एवं हम अपने पर्यावरण को बचा सकते हैं। अब तक इस ग्राम पंचायत में 43 किलो प्लास्टिक इकट्ठा किया गया है। ग्राम पंचायत द्वारा एक विशेष कार्य यह किया जा रहा है कि सभी बोरियों पर प्लास्टिक फ्री पंचायत लिख कर घर का नंबर दिया गया है जिससे कि यह पता चल सके कि कितने घरों पर बोरिया टांगी जा चुकी हैं जिसका डीपीआरओ ने प्रशंसा किया। जनपद में इन 61 ग्राम पंचायत में कुल 23322 घर है जिसमें से अभी तक 4578 घरों पर बोरिया टांगी जा चुकी है। जिला पंचायत अधिकारी नामित शरण ने खुद एक घर पर बोरी टांग कर इस अभियान में लोगों को बढ़-चढ़कर कर हिस्सा लेने का आह्वान किया। बैठक में डीपीआरओ ने बताया कि हम प्लास्टिक का प्रयोग करते हैं तथा उसको बाहर फेंक देते हैं जिससे की समस्याएं खड़ी होती हैं जनपद सोनभद्र एक प्राकृतिक संपदाओं से भरा हुआ जनपद है यहां पर हम जितना कम प्रदूषण करेंगे वह हमारे लिए फायदेमंद है विकास कार्य के साथ-साथ हमें पर्यावरण को संरक्षित करने वाले कार्य को भी प्राथमिकता पर किया जाना जरूरी है हम अपने गांव को प्लास्टिक फ्री ग्राम पंचायत बना रहे हैं। बैठक में ग्राम प्रधान मुन्ना लाल मौर्य अन्नपूर्णा सिंह संदीप शकुंतला किरणमती अमरावती नागेंद्र सिंह सुमित्रा देवी एवं सहायक विकास अधिकारी पंचायत सुनील यादव तथा डीसी स्वच्छ भारत मिशन अनिल केसरी उपस्थित रहे।

ट्रंप की धमकी

आर्थिक तनाव का कारण

ट्रंप ने डॉलर को किनारे छोड़ने के प्रयासों पर धमकी दी है जिससे वैश्विक आर्थिक तनाव पैदा हो गया है। अभी ट्रंप का राष्ट्रपति कार्यकाल शुरू होना है, पर निर्वाचित राष्ट्रपति ने अमेरिकी नीति पर अपने विचार प्रकट किए हैं जो विकासशील देशों के लिए अच्छी खबर नहीं हैं। निर्वाचित अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ब्रिक्स देशों-ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका व उनके विस्तारित गठबंधन को कठोर चेतावनी दी है जो अमेरिकी डालर के प्रभुत्व को चेतावनी दे रहे हैं। ट्रंप की घोषणा संभावित इन देशों से आने वाले सामानों पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगाने से संबंधित है जिससे वैश्विक स्तर पर आर्थिक तनाव पैदा हो गया है क्योंकि ब्रिक्स डालर का विकल्प तलाश रहा है। इस कदम से अमेरिका और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के बीच टकराव पैदा हो गया है जो विश्व व्यापार संरचना को बदल सकता है। उम्मीद थी कि ट्रंप अमेरिका को कर्ज से बाहर निकालने के सभी संभव प्रयास करेंगे तथा उन देशों पर कठोर कदम उठाने से पीछे नहीं हटेंगे जो अमेरिका से मित्रता के बावजूद उसके हितों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। दशकों से अमेरिकी डालर विश्व व्यापार का केन्द्र रहा है और व्यापार में व्यापक प्रयोग के कारण इसे अधिकांश देशों के लिए रिजर्व मुद्रा समझा जाता है। लेकिन ब्रिक्स देशों तथा अन्य विकासशील अर्थव्यवस्थाओं ने विश्व वित्तीय व्यवस्था पर व्यापक नियंत्रण के प्रति बढ़ती निराशा प्रकट की है।

ब्रिक्स समूह में शामिल देश पहले ही नई विश्व मुद्रा लाने या डालर पर निर्भरता घटाने के लिए अपनी स्थानीय मुद्राओं के विस्तारित प्रयोग की चर्चा कर रहे थे। इस बात में कोई संदेह नहीं कि ट्रंप द्वारा ब्रिक्स देशों पर शत प्रतिशत टैरिफ लगाने की धमकी एक संरक्षणवादी प्रयास है और वे अमेरिकी आर्थिक हितों की रक्षा के लिए अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते हैं। वास्तव में ट्रंप को ऐसे कठोर निर्णयों की जरा भी चिन्ता नहीं है, भले ही सारी दुनिया उनकी विरोधी क्यों न हो जाए। पर्यावरण, व्यापार या सैनिक खर्चों, आदि के मामलों में ट्रंप ऐसे निर्णय लेने में सक्षम हैं जिन पर सारी दुनिया आगबबूला हो सकती है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि डालर का प्रभुत्व घटाने का कोई भी प्रयास गंभीर नतीजों को जन्म देगा जिसमें अमेरिकी बाजार से बहिष्करण भी शामिल है। विकसित देशों के लिए बड़ी समस्या यह है कि वे अपनी आमदनी तथा राजस्व प्राप्त करने के लिए बड़ी सीमा तक अमेरिकी बाजार पर निर्भर हैं। ऐसे में ट्रंप द्वारा वैश्विक दक्षिण समेत अपने सहयोगियों व प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ दंडात्मक उपाय लागू करने की घोषणा चिन्ताजनक है, फिर चाहे वे ऐतिहासिक रूप से अमेरिका से जुड़े रहे हों। ऐसे टैरिफ के व्यापक प्रभाव होंगे। इससे विश्व व्यापार प्रवाह में बाधा आएगी तथा आर्थिक तनाव बढ़ेंगे जिससे विकासशील देश अलग-थलग होंगे। शत-प्रतिशत टैरिफ से अमेरिका को निर्यात होने वाली वस्तुओं की कीमत बढ़ेगी जिसका प्रभाव अमेरिकी उपभोक्ताओं पर निर्भर उद्योगों पर पड़ेगा। ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका जैसी अर्थव्यवस्थायें निर्यात पर अत्यधिक निर्भर हैं और इस कदम से उनमें आर्थिक मंदी आ सकती है। लेकिन विडंबना है कि भले ही ट्रंप की धमकियां अनेक देशों के लिए हानिकारक हों, पर वे डालर का विकल्प तलाशने में और गतिशील होंगे। इसके साथ ही ट्रंप के कट्टरपंथी दृष्टिकोण से विकासशील देश एकसाथ आ सकते हैं। इससे ब्रिक्स समूह तथा अन्य समूह और मजबूत हो सकते हैं। वास्तव में टैरिफ की दीवाल ऊंची करना आज की दुनिया में अच्छी बात नहीं मानी जाती है, लेकिन ट्रंप की अपनी सोच बिल्कुल अलग है।

चुनावी खैरातें: चिन्ता का विषय

चुनावों में खैरातें बांटने की बढ़ती प्रवृत्ति वित्तीय टिकाऊपन, प्रशासन तथा मतदाताओं की सोच पर इसके प्रभाव को देखते हुए चिन्ता का विषय है।

उत्तम गुप्ता
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

हाल ही में महाराष्ट्र और झारखंड में हुए चुनावों में संबंधित राजनीतिक पार्टियों की सफलता का प्रमुख कारण खैरातें, यानी 'मुफ्त दी जाने वाली चीजें' हैं जो खासतौर से महिलाओं को लक्षित थीं। महाराष्ट्र में भाजपा नीत महायुति गठबंधन ने 'लड़की बहन नकद लाभ योजना' शुरू की जिसमें 2,50,000 रुपये वार्षिक से कम आय वाले परिवार में 21 से 65 आयुवर्ग की महिलाओं को 1,500 मासिक देने का प्रस्ताव था। बाद में इस धनराशि को बढ़ा कर 2,500 रुपये कर दिया गया था। झारखंड में 'मुख्यमंत्री मईयां सम्मान योजना'-एमएमएसवाई के अंतर्गत हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली जेएमएम-कांग्रेस-राजद सरकार ने 18-25 आयुवर्ग वाली सभी महिलाओं को 1,000 रुपये मासिक देने की योजना बनाई थी। बाद में इसकी धनराशि बढ़ा कर 2,500 रुपये महीने कर दी गई। खैरातों के माध्यम से चुनाव जीतने की प्रवृत्ति हर राज्य विधानसभा चुनाव में 2020 के बाद से दिखाई दे रही है, जब दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने अपनी इसी राजनीतिक शैली से पंजाब में 2022 में विजय प्राप्त की थी। वहां आम आदमी पार्टी-आप ने 18 वर्ष या इससे अधिक आयु वाली हर महिला के खाते में 1000 रुपये प्रति माह जमा करने का वादा किया था। 2023 के शुरू में कर्नाटक में हुए चुनावों में कांग्रेस ने पांच गारंटियों का वादा किया था जिसमें 'गृह लक्ष्मी' योजना का बहुत प्रचार हुआ था। इसके अंतर्गत हर परिवार की महिला प्रमुख को 2000 रुपये प्रति माह दिए जाने थे। बाद में 2023 में मध्य प्रदेश में हुए चुनाव में भाजपा ने 'लाडली बहना योजना' के अंतर्गत 1,250 रुपये देने का वादा किया जिसे बाद में बढ़ा कर धीरे-धीरे 3,000 रुपये प्रति माह कर दिया गया। छत्तीसगढ़ में उसने 'महतारी वंदन योजना' के अंतर्गत विवाहित महिला को 12,000 रुपये प्रति वर्ष देने का वादा किया। ओडिशा में 'सुभद्रा योजना' के अंतर्गत भाजपा ने सक्षम महिलाओं को हर साल दो किश्तों में कुल 10,000 रुपये देने का वादा किया। भावी चुनावों में सभी पार्टियों से ऐसी ही खैराती योजनायें लाने की आशा है। 2024-25 के बजट में दिल्ली की वित्त मंत्री आतिशी ने 'मुख्यमंत्री महिला सम्मान योजना'-एमएमएसवाई की घोषणा की जिसके अंतर्गत आप सरकार राष्ट्रीय राजधानी में 18 वर्ष से अधिक आयु वाली हर महिला को 1000 रुपये प्रति माह देगी। अब अरविंद केजरीवाल ने छः 'रेवड़ियों' या खैरातों की घोषणा की है। इसमें मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, मुफ्त शिक्षा, मुफ्त इलाज और वृद्ध लोगों के लिए तीर्थयात्रा शामिल हैं। खैरातों से चुनाव जीते जा सकते हैं, पर इनके अनेक नकारात्मक नतीजे भी सामने आते हैं। इनमें सबसे खतरनाक भ्रष्टाचार को बढ़ावा है।

केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित वित्तीय निष्ठा के मानकों में अन्य के साथ कहा गया है कि 'किसी अधिकारी को ऐसे खर्च की अनुमति की शक्ति नहीं होनी चाहिए जिसे किसी आदेश के अंतर्गत प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सिकी को लाभ देने के लिए दिया जाए। सार्वजनिक धन का खर्च किसी खास व्यक्ति या किसी खास वर्ग के लाभ के लिए नहीं होना चाहिए, जब तक कि किसी अदालत में यह दावा न किया गया हो अथवा यो खर्च स्वीकृत नीति या परंपरा के अनुरूप न हो।' करदाताओं के पैसे का धड़ल्ले से खैरातों पर प्रयोग करना न स्वीकृत नीति है और न इसकी अनुमति किसी अदालत ने दी है। यह स्पष्ट रूप से वित्तीय अनियमितता है जिसका उद्देश्य मतदाताओं को सार्वजनिक धन से रिश्वत देना है ताकि चुनावी राजनीति में लाभ प्राप्त हो सके। ऐसा भ्रष्ट व्यवहार उस व्यक्तिगत उम्मीदवार द्वारा किए व्यवहार से भी बहुत खराब है जो मतदाताओं को ललचाने के लिए सीधे पैसा बांटता हो। दूसरा, नियोजित तथा राजस्व प्राप्ति से संपूरित 'सामान्य' बजट खर्चों की तुलना में चुनावी घोषणापत्रों में वादा की गई खैरातों से राज्यों के बजट पूरी तरह 'अनियंत्रित' और 'अनियोजित' हो जाते हैं। अनियोजित होने के कारण इस दायित्व के लिए राजस्व सृजन की कोई व्यवस्था नहीं होती है और इसकी पूर्ति विकास खर्च समेत अनेक अन्य खर्चों में कटौती के माध्यम से की जाती है। इसके साथ ही इससे अतिरिक्त कर्ज लेना पड़ सकता है और कर्ज असाधारण स्तर पर पहुंच सकते हैं। पंजाब में आप द्वारा खैरातों के वादों के कारण प्रति वर्ष 20,000 करोड़ रुपये से अधिक खर्च होता है।

बजट से इस खर्च की पूर्ति करने में अक्षम मुख्यमंत्री भगवंत मान ने केन्द्र सरकार से 50,000 करोड़ रुपये की सहायता मांगी है। दिल्ली में प्रति माह 18 वर्ष से अधिक आयु वाली प्रति महिला को 1000 रुपये या साल में 12,000 रुपये देने के लिए खजाने पर हर साल 8,000 करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा। पहले ही राज्य सरकार को 2024-25 में 18,000 करोड़ रुपये का राजस्व घाटा उठाना पड़ा है, यानी यह कुल राजस्व से अधिक खर्च है। यह 2023-24 में 10,000 करोड़ रुपये के राजस्व घाटे से 80 प्रतिशत अधिक है। यह राज्य के पूंजीगत खर्च में 30 प्रतिशत की भारी गिरावट के बावजूद हुआ है। स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि वित्त मंत्री आतिशी ने हाल ही में केन्द्र सरकार को राष्ट्रीय लघु बचत योजना फंड-एनएसएसएफ से 10,000 करोड़ रुपये कर्ज देने की प्रार्थना की है। कर्नाटक में पांच गारंटियों के कारण राज्य के बजट पर 60,000 करोड़ रुपये का बोझ पड़ा है जिससे उसका राजकोषीय घाटा बढ़ कर 122, 500 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। स्थिति इतनी खराब हो गई है कि उप-मुख्यमंत्री को अपने बयान में कहना पड़ा है कि 'सरकार के पास विधायकों को विकास कार्यों के लिए देने को कोई पैसा नहीं है जिसका कारण चुनावी गारंटियां हैं।'

मध्य प्रदेश में वर्तमान 1250 रुपये प्रति माह की दर से लाडली बहना योजना की 12.5 मिलियन लाभार्थी हैं जिनसे सरकारी खजाने पर प्रति वर्ष 18,750 करोड़ रुपये का बोझ पड़ता है। यदि सहायता बढ़ा कर 3,000 रुपये प्रति माह कर दी जाए तो यह 45,000 करोड़ रुपये प्रति वर्ष हो जाएगा। महाराष्ट्र में लड़की बहन योजना से राज्य के खजाने पर हर साल 46,000 करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा। झारखंड व ओडिशा जैसे राज्य भी खैरातों का बोझ अनुभव कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि जहां सामान्य कल्याण योजना में समाप्त करने की कोई तारीख होती है, पर खैरातों के मामलों में ऐसी कोई तारीख नहीं होती है। इसलिए वे 'हमेशा' लागू रहती हैं, भले ही किसी पार्टी का शासन हो और इसका राज्य के बजट पर लगातार बोझ पड़ता है।

खैरातों के लिए पैसा करदाताओं की जेब से जाता है। जब उनको पता चलता है कि उनके टैक्स का पैसा लोगों को खैरात बांटने में खर्च होता है तो इससे उनमें कर न देने की प्रवृत्ति पैदा हो सकती है। अधिकांश मूलभूत जरूरतें 'हमेशा' पूरी होने के लिए वित्तीय सहायता का आश्वासन मिलने के कारण खैरातों की संस्कृति लोगों में काम के प्रति लापरवाही पैदा करने का कारण बन सकती है। इससे आर्थिक प्रगति की नीव पर प्रहार होता है। इस स्थिति को देखते हुए राजनीतिक पार्टियां स्वयं कभी खैरातें बांटना नहीं छोड़ेंगी। क्या सर्वोच्च न्यायालय उनको ऐसा करने के लिए मजबूर कर सकता है? सर्वोच्च न्यायालय ने एस. सुब्रमण्यम बालाजी बनाम तमिलनाडु सरकार एवं अन्य में जुलाई, 2013 में कहा था कि खैरातों का किसी प्रकार का वितरण सभी लोगों को प्रभावित करता है। उसने कहा, 'इससे बड़ी सीमा तक स्वतंत्र एवं स्वच्छ चुनाव की जड़ों पर प्रहार होता है। लेकिन चुनाव घोषणापत्र में किए वादों को लोक प्रतिनिधित्व कानून या किसी अन्य कानून के अंतर्गत भ्रष्ट व्यवहार नहीं कहा जा सकता है। इसलिए सत्तारूढ़ दलों द्वारा राज्य विधानसभा में विनियोग विधेयकों के माध्यम से स्वीकृत खैरात वितरण पर रोक नहीं लगाई जा सकती है।' सुप्रीम कोर्ट ने 25 जनवरी, 2022 को खैरातों पर एक जनहित याचिका की सुनवाई करते हुए अपने दृष्टिकोण में बदलाव नहीं किया। उसने कहा, 'निसंदेह यह गंभीर मुद्दा है क्योंकि खैरातों के लिए बजट आम बजट से अधिक हो जाता है। इससे समान आधार बाधित होता है।' लेकिन इन टिप्पणियों से लाभ नहीं होगा। उसे सरकार को खैरातों पर लगाम लगाने का आदेश देना चाहिए।

सीखना निरंतर जारी रहे

> **सीखने को कला के रूप में समझना इसे एक सांसारिक कार्य से बदलकर आत्म-अन्वेषण और महारत की एक गहन यात्रा में बदल देता है, जिससे सीखने के लिए जुनून विकसित होता है जो कभी नहीं रुकेगा।**

शाइनी शर्मा
(लेखिका शिक्षाविद हैं)

सीखना एक ज़रूरी और आजीवन प्रक्रिया है। यह मानव विकास और विकास की आधारशिला है। हालाँकि, ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया से परे सीखने की सूक्ष्म कला है - एक दृष्टिकोण जो जिज्ञासा, रचनात्मकता, अनुकूलनशीलता और खोज के लिए जुनून पर जोर देता है। जिज्ञासा - शब्द अपने आप में आजीवन सीखने के लिए ईंधन है। इसके मूल में, सीखने की कला में तथ्यों और कौशल के संचय से कहीं अधिक शामिल है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है जो बौद्धिक, भावनात्मक और अनुभवात्मक आयामों को एकीकृत करती है। सीखना तब कलात्मक हो जाता है जब यह उद्देश्यपूर्ण, आनंददायक और किसी व्यक्ति के मूल्यों और आकांक्षाओं से गहराई से जुड़ा हो। एक कठोर, मानकीकृत दृष्टिकोण के विपरीत, सीखने की कला यह मानती है कि हर किसी के पास दुनिया को समझने के लिए अद्वितीय ताकत, रुचियां और तरीके हैं। यह शिक्षार्थियों को अपने व्यक्तित्व को अपनाने, विविध दृष्टिकोणों का पता लगाने और सीखने की प्रक्रिया में अर्थ खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है क्योंकि ज्ञान केवल औपचारिक शिक्षा या किताबें पढ़ने से नहीं आता है बल्कि यह जीवन, बातचीत, अनुभवों और अप्रत्याशित मुठभेड़ों से आता है। व्यक्तियों को नए दृष्टिकोणों के लिए खुला रहना चाहिए, चाहे वे अलग-अलग संस्कृतियों, व्यवसायों या आयु समूहों से हों। कैरोल ड्वेक द्वारा प्रचलित विकास मानसिकता, यह विश्वास है कि समर्पण और कड़ी मेहनत के माध्यम से बुद्धिमत्ता और क्षमताओं को विकसित किया जा सकता है, जो एक निश्चित मानसिकता के विपरीत है जो मानती है कि क्षमताएँ स्थिर हैं।

विकास मानसिकता के साथ, असफलताओं को अक्सर असफलताओं के बजाय सीखने के अवसर के रूप में देखा जाता है जबकि चुनौतियों को सीखने की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में स्वीकार किया जाता है। कोई कितना भी जानता हो, हमेशा बढ़ने की गुंजाइश होती है। विनम्र रहना, और दूसरों से प्रतिक्रिया, आलोचना और रचनात्मक इनपुट के लिए खुला रहना किसी व्यक्ति को अपनी समझ को बेहतर बनाने और परिष्कृत करने में मदद कर सकता है।

सीखने की कला को बढ़ाने वाला एक और महत्वपूर्ण कारक जुनून की कला है। जो शिक्षार्थी अपनी रुचियों के अनुरूप विषयों का अध्ययन करते हैं, वे प्रवाह की स्थिति में प्रवेश करते हैं, जहाँ प्रयास सहज लगता है, और प्रक्रिया आंतरिक रूप से पुरस्कृत हो जाती है। जुनून प्रेरणा को बनाए रखता है और गहन जुड़ाव को बढ़ावा देता है, जिससे महारत हासिल होती है। अपने आप को समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के साथ घेरना जो सीखने को प्राथमिकता देते हैं, चर्चाओं में शामिल होते हैं, कार्यशालाओं में भाग लेते हैं या परियोजनाओं पर सहयोग करते हैं, एक व्यक्ति को सीखने और बढ़ने के लिए चुनौती देते हैं।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सबसे प्रतिभाशाली दिमाग वाले लोग ऐसे सवाल पूछते हैं जिन्हें दूसरे लोग हल्के में ले सकते हैं। किसी को क्यों और कैसे पूछने की आदत डालनी चाहिए और न केवल अमूर्त विचारों के बारे में बल्कि रोज़मर्रा की स्थितियों में भी, क्योंकि ये सवाल किसी की सोच की सीमाओं को आगे बढ़ाते हैं और गहरी अंतर्दृष्टि की ओर ले जा सकते हैं। यह हमेशा तब होता है जब कोई व्यक्ति जीवन भर सीखने को अपनाता है, जो व्यक्तिगत और साथ ही पेशेवर परिवर्तन के लिए संभावनाओं, विचारों और अवसरों की दुनिया के लिए खुद को खोल सकता है। सीखने को कला के रूप में समझना इसे एक सांसारिक कार्य से बदलकर आत्म-अन्वेषण और महारत की एक गहन यात्रा में बदल देता है, जिससे सीखने के लिए जुनून विकसित होता है जो कभी नहीं रुकेगा।

आप की बात

फ्लाईओवर का मोह

जब भी हमारे नगरों में ट्रैफिक जाम का जिक्र होता है, प्रशासन और हमारे नेताओं का पहला और आखिरी जवाब होता है- फ्लाईओवर बनाएंगे। सड़क पर जगह नहीं बची? ऐसा लगता है कि हर समस्या का समाधान सिर्फ ऊपर से ही निकाला जा सकता है। सड़कें गड्ढों से भरी हों, सार्वजनिक परिवहन का नामो-निशान न हो, पर फ्लाईओवर बना दो, सब ठीक हो जाएगा! फ्लाईओवर ट्रैफिक समस्या का हल नहीं, बल्कि ऊपर से देखने का नजरिया है। फ्लाईओवर का निर्माण हमारे बजट का ऐसा हिस्सा बन गया है, जैसे चाय में चीनी। हर कोने पर फ्लाईओवर बनाना उतना ही जरूरी समझा गया है जितना राजनीति में वादे करना। पर सवाल ये है कि क्या ये फ्लाईओवर सच में हमारी समस्याओं का समाधान हैं या सिर्फ आंखों का धोखा? सरकार और प्रशासन का फ्लाईओवर प्रेम देखकर लगता है कि जमीन पर रहना उन्हें अपमानजनक लगता है। ऊपर चलने वालों का ही ऊपर नाम होता है, शायद यही सोचकर हर शहर/नगर में फ्लाईओवर की बाढ़ आ गई है। लेकिन जरा सोचिए, इन फ्लाईओवर्स से क्या वाकई ट्रैफिक का हल निकला है, या बस समस्या को ऊ पर पहुंचा दिया गया है? जिस नगर में सड़कें गड्ढों से भरी हों, जहां पैदल चलने वालों के लिए फुटपाथ पार्किंग स्थल बन चुके हों, वहां फ्लाईओवर की चकाचौंध एक दिखावा भर है।

-आर.के. जैन, बड़वानी

इन्टरनेट पर अश्लीलता

संस्कार रहित शिक्षा किसी भी परिवार,जाति अथवा राष्ट्र के पतन का कारण बन जाती है। आज शिक्षा का उद्देश्य मात्र आर्थिक आधार बनकर रह गया है। दुर्भाग्य तो यह भी है कि परिवार भी संस्कारों से कोसों दूर होते नजर आ रहे हैं। दो वर्ष के होते-होते बच्चे के हाथ में मोबाइल आ जाता है। रही सही कसर आन लाइन शिक्षा ने पूरी कर दी। आज आए दिन पर्यावरण व मौसम को लेकर प्रशासन द्वारा विद्यालयों को बन्द करने और आन लाइन शिक्षा के आदेशों ने संस्कारों और अनुशासन को शिक्षा से दूर कर दिया है। जो बालक में अवसाद और एकान्तता की पैठ को बढ़ावा दे रहे हैं। इन्टरनेट पर आज अश्लील और आपराधिक सामग्री की भरमार है। जिस बालक को शैक्षिक प्रयोग के लिए माता पिता मोबाइल पकड़ा रहे हैं, अब उस बच्चे पर निर्भर करता है कि वो उसका प्रयोग किस शिक्षा के लिए कर रहा है? बच्चों का अपसंस्कृति की तरफ आकर्षित होने में माता-पिता भी बराबर के दोषी हैं। यह सुखद है इस समस्या की तरफ सबसे पहला क़दम आस्ट्रेलिया जैसे देश ने बढ़ाया है। जहां की सरकार ने 16 वर्ष के कम आयु के बच्चों के लिए इन्टरनेट के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। अब देखना यह है कि भारत सरकार इस तरफ कब ध्यान देगी? क्योंकि अश्लीलता से बच्चों को बचाना बहुत जरूरी है। नहीं तो उनके कोमल मन पर गलत प्रभाव पड़ेगा।

-डॉ. नरेन्द्र टोंक, मेरठ।

हाईब्रिड आयोजन ही निदान

पाकिस्तान के हालात बद से बद्तर है। राजनैतिक विवादों के कारण कई पाकिस्तानी शहरों में हिंसा हुई है। आत्मघाती हमले और सेना पर निशाने साधने से लोगों के साथ ही वहां होने वाले आयोजन भी खटाई में पड़ते दिख रहें हैं। हाल ही में इमरान खान के पार्टी कार्यकर्ताओं ने इस्लामाबाद में जिस तरह बवाल काटा उससे अगले साल वहां होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी के आयोजन पर संकट के बादल मंडराना शुरू हो गए है। सुरक्षा कारणों और राजनैतिक अशांति की वजह से श्री लंका ए को भी अपने दौरे को छोड़ कर स्वदेश लौटना पड़ा है। वहां के ताज़े हालात इस बात को समझने के लिए काफी है कि ऐसे हालातों मे वहां आयोजन कितने सुरक्षित रहेंगे? आने वाले दिनों में हो सकता है ट्राफी खेलने खेलने वाले अन्य देश भी इसी वजह से हाथ खड़े कर दे। भारत पहले ही पाकिस्तान में खेलने से मना कर चुका है। अब हाइब्रिड आयोजन ही एक मात्र उपाय है और इसके लिए प्रतिभागी देश सहमत भी हो जायेंगे। हाइब्रिड आयोजन के लिए पाकिस्तान का सहमत होना एक अच्छा संकेत है? अब इसी के अनुरूप कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए। क्योंकि हमारे अपने ही नहीं, किसी देश के खिलाड़ियों की सुरक्षा को खतरे में नहीं डाला जा सकता है। पाकिस्तान की स्थिति बहुत ही चिंताजनक है।

-अमृतलाल मारू, इन्दौर

जीवन अधिक महत्वपूर्ण

पर्वतारोहण पर सदियों से जान जोखिम में डालकर में डालकर लोग रोमांच का अनुभव करते हैं। सर्वप्रथम हिमालय पर पहुंचकर एडमंड हिलेरी और तेनजिंग शेरपा ने दुनिया को रोमांचित कर दिया था। अब पर्वतारोहण के लिए कई हत्या आधुनिक संसाधन उपलब्ध हो गए हैं। और पुरुषों के साथ महिलाएं भी पर्वतारोहण कर रही हैं। जीने जीवन का असली रोमांच अनुभव करना है । जान की परवाह नहीं करते और अपनेजीवन का अधिकतम रोमांच अनुभव करते हैं।अब सिर्फ पर्वतारोहण ही नहीं वल्कि समुद्र की तलहटियों अंतरिक्ष की ऊंचाइयों तक मानव अपनी जान की परवाह किए बिना भावी पीढ़ी के लिए नए रास्ते खोज रहे हैं। सुनीता विलियम्स अभी भी अंतरिक्ष में अपने जीवन केलिए संघर्ष कर रही हैं। यह आदिवासी पृथ्वी पर लौट आई है तो यह एक चमत्कार होगा और इतने लंबे समय तक अंतरिक्ष में रहने वाली दुनिया की पहली महिला होगी! आगे भी मानव ने खतरे उठाकर नई-नई रोमांच लेता रहेगा! लेकिन हमें ध्यान रखना चाहिए कि जीवन को खतरे में डालकर कोई भी रोमांच अच्छा नहीं है।

-विभूति बुपक्या, खाचरोद,

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

पायनियर
लखनऊ, मंगलवार, 3 दिसम्बर 2024

विभागों की हुई गहन समीक्षा

मंडलायुक्त ने प्रभारी मंत्री के जनपद भ्रमण के दौरान निर्देशों के अनुपालन आख्या को लेकर किया मंथन, दिए कड़े निर्देश

संतकबीरनगर। मंडलायुक्त बस्ती मंडल, बस्ती/नोडल अधिकारी अखिलेश सिंह की अध्यक्षता में जिलाधिकारी महेंद्र सिंह तंवर के साथ सी0एम0 डैशबोर्ड पर प्रदर्शित प्राप्तांक एवं ग्रेडिंग के आधार पर विकास कार्यों, निर्माण कार्यों एवं जनपद की प्रभारी मंत्री द्वारा विगत दिवसों में किए गए जनपद भ्रमण के दौरान दिए गए निर्देशों के अनुपालन आख्या की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सत्यजीत गुप्ता अपर जिलाधिकारी जयप्रकाश व मुख्य विकास अधिकारी जयकेश त्रिपाठी उपस्थित रहे। समीक्षा के दौरान मंडलायुक्त द्वारा कृषि विभाग के कार्यों/संचालित योजनाओं की समीक्षा के दौरान प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना पी0एम0 कुसुम, बीज, डी0बी0टी0 सहित जनपद में धान खरीद की स्थिति की समीक्षा की गई, जिला कृषि अधिकारी द्वारा बताया गया कि लक्ष्य के सापेक्ष अब तक 19 प्रतिशत धान की खरीद हो चुकी है। मंडलायुक्त ने निर्देश दिए कि धान क्रय केंद्रों पर नियमित रूप से धान खरीद किए जाने तथा किसानों को क्रय केंद्रों पर कोई असुविधा न होने आदि से संबंधित निर्देश दिए गए। मंडलायुक्त ने कहा कि जनपद में खाद की उपलब्धता सुनिश्चित बनाए रखी जाए, इस पर जिला कृषि अधिकारी ने बताया कि डीएपी सहित अन्य उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता है। मंडलायुक्त ने उर्वरक बिक्री केंद्रों का निरीक्षण तथा ओवर रेटिंग आदि के संबंध में सचेत रहने के निर्देश दिए। पशुपालन विभाग की समीक्षा के दौरान मंडलायुक्त द्वारा जनपद के गो-आश्रय स्थलों की स्थिति, पशुओं के रहने की व्यवस्था, हरा चारा, भूसा, पानी आदि की व्यवस्था के संबंध में जानकारी प्राप्त करते हुए उप जिलाधिकारियों एवं समस्त खंड विकास अधिकारियों को निर्देशित किया कि स्वयं रुचि लेते हुए गो-आश्रय स्थलों में व्यवस्थाओं का निरीक्षण करते रहें तथा किसी भी समस्या की स्थिति में तत्काल निराकरण किया जाए। जिलाधिकारी ने बताया कि राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत जनपद के स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों की बिक्री एवं ब्रांडिंग/प्रचार-प्रसार हेतु तीनों तहसीलों में भूमि उपलब्ध करा दी गई है जिसमें स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों की बिक्री को सुलभ बनाए जाने हेतु मिनी मार्ट बनाए जाने की कार्यवाही प्रक्रिया में है। जनपद में कानून व्यवस्था से संबंधित समीक्षा के दौरान पुलिस अधीक्षक ने बताया कि जनपद में अपराध की दरों में गिरावट आई है, सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था की स्थिति ठीक है। मंडलायुक्त ने सभी जनपद स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस बात का विशेष ध्यान दिया जाये कि विभागीय योजनाओं के आच्छादन सहित लाभार्थीपरक योजनाओं को लक्ष्य के सापेक्ष समयस पूर्ण कर लिया जाये, किसी भी प्रकार से लम्बित मामलों को अविलम्ब निस्तारित करा दिया जाये। आई0जी0आर0एस0 से सम्बन्धित संदर्भों को निर्धारित समय सीमा के अन्दर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करना सुनिश्चित किया जाये। समीक्षा के दौरान मंडलायुक्त द्वारा सीएम डैशबोर्ड पर प्रदर्शित प्राप्तांक एवं ग्रेडिंग के आधार पर विकास कार्यों की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी ने मंडलायुक्त का आभार व्यक्त करते हुए आश्वस्त किया कि आप द्वारा दिए गए निर्देशों एवं सुझावों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित कराया जाएगा।

लखन हृदय लालसा बिसेखी

शुरु हुआ श्री कुड़वावीर बाबा का 4 दिवसीय ऐतिहासिक धनुषयज्ञ मेला, रामलीला देखकर मंत्रमुग्ध हुए दर्शक

शिवगढ़एरायबरेली। क्षेत्र के शिवगढ़ नगर पंचायत अन्तर्गत ढेकवाएपहाड़पुर में आयोजित श्री कुडवावीर बाबा के चार दिवसीय ऐतिहासिक धनुष यज्ञ मेले का शुभारम्भ बुधवार को हवन पूजन के पश्चात मेला कमेटी के संरक्षक पंडित गिरिजाशंकर मिश्रा द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। मेले के पहले दिन आयोजित दिव्य रामलीला में राजा दशरथ दरबारए विश्वामित्र द्वारा राम और लक्ष्मण का मांगना दंडक वन में राक्षसों का विनाशएतत्पश्चात धनुष यज्ञ का भव्य मंचन किया जाता हैए रामलीला देख दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। रामलीला में अयोध्या नरेश महाराज दशरथ के दरबार में राक्षसों द्वारा प्रताड़ित विश्वामित्र जी राम लक्ष्मण को मांगने के लिए जाते हैं। वशिष्ठ मुनि के कहने पर राजा दशरथ द्वारा राम.लक्ष्मण को

विश्वामित्र जी के साथ वन भेज दिया जाता है। भगवान राम लक्ष्मण वन में ताड़काएसुबाहु जैसे भयंकर राक्षसों का वध करते हैं। सीता स्वयंवर में जाने पर लक्ष्मण गुरु विश्वामित्र से जनकपुर देखने की इच्छा प्रकट करते हैं। रामलीला में अवनीश शुक्ला ने राजा दशरथ काए रौनक स्वास्थ्य ने राम काए श्रेयस शुक्ला ने लक्ष्मण काए विजय शुक्ल ने राक्षस काए प्रदीप अवस्थी ने विश्वामित्र काए शुभम अवस्थी ने वशिष्ठ काए लाल अवस्थी ने मरीच काए सुखेंद्र अवस्थी ने सुबाहु काए संतराम शुक्ला ने राक्षस काए विजय शुक्ला ने मानुस भक्षी काए जितेंद्र शुक्ला ने घनगरज काए रोशन मिश्रा ने मेहरुलवन काए विभू अवस्थी ने सुकरतनय काए नीरज अवस्थी ने दूत काए विनायक ने रामदास रुद्र का जीवन्त अभिनय कर सभी का मन मोह लिया। इस मौके पर जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि पवन मिश्राएराजेश त्रिवेदीए अनिरुद्ध शुक्लाएराकेश त्रिवेदीएप्रदीप अवस्थी शुभम अवस्थीए मिश्रा एसंतराम एसंदीप शुक्ला एउमाकांत अवस्थीएदिलीप अवस्थीए राजकिशोर बाजपेईए शिवाकांत अवस्थीएहरिवंश द्विवेदीएसिविल अवस्थी आदि उपस्थित रहे।

नवागत जिला जज ने पद का कार्यभार किया ग्रहण

संतकबीरनगर। नवागत जनपद एवं सत्र न्यायाधीश महेन्द्र प्रसाद चौधरी ने सोमवार को 25वे जिला जज के रूप में पद भार ग्रहण करने तथा मुकदमों की सुनवाई के उपरान्त दीवानी न्यायालय परिसर में अधिवक्ताओं के चैंबर में पहुंचे और बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों एवम अधिवक्ताओं से की शिष्टाचार/परिचियात्मक मुलाकात में कहा कि वह महान सूफी संत कबीर दास जी के प्रशंसक हैं वह अपने न्यायिक सेवाकाल के अंतिम पड़ाव में उनकी स्थली जनपद में कार्य करने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि कोई समस्या होगी तो उसे मिल बैठकर सुलझा लिया जाएगा साथ ही हर संभव सहयोग करेंगे। इससे पहले सिविल बार तथा जनपद बार के पदाधिकारियों एवं अधिवक्ताओं ने नवागत जनपदएवम सत्रन्यायाधीश का बुके देकर तथा फूल माला पहना कर स्वागत किया। इस अवसर पर एडीजे महेंद्र राय, एडीजे देवेंद्र नाथ गोस्वामी, न्यायिक अधिकारियों एवं सिविल बार अध्यक्ष वीरेंद्र कुमार मिश्र महामंत्री राकेश जी मिश्र, जनपद बार अध्यक्ष शशि कुमार ओझा, महामंत्री राणा रविंद्र सिंह, महिप बहादुर पाल, नवनीत कुमार पांडेय, राकेश सिंह, सुनील कुमार पांडे, दुर्गेश नारायण मिश्र, शत्रुघन यादव आदि मौजूद रहे।

फावडे से मां बेटे पर जानलेवा हमला

शिवगढ़,रायबरेली। थाना क्षेत्र के शिवगढ़ नगर पंचायत अन्तर्गत पूरे पाण्डेय में नाली की सफाई करते समय निकाल करके रखे गए कचरे को लेकर 2 पक्षों में कहासुनी हो गई, कहासुनी इतनी बढ गई कि नाली की सफाई कर रहे युवक ने फावड़े से मां बेटे पर जानलेवा हमला कर दिया जिससे मां बेटे घायल हो गए। मां की हालत गम्भीर देखते हुए चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के पश्चात जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। घायल अभिषेक पुत्र रामनाथ का आरोप है कि उनके पडोस के रहने वाले छोटू उर्फ राजकरन नाली की सफाई कर रहे थे जिन्होंने नाली का कचरा निकाल कर उनके गेट के पास रख दिया जिसको लेकर उनसे कहा गया तो गाली देने लगे तथा फावडे से

उनके ऊपर हमला कर दिया यही नही छुडाने दौडी उनकी मां उमा देवी पत्नी रामनाथ पर भी फावडे से हमलाकर घायल कर दिया। जिन्हें इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र शिवगढ़ लाया गया, जहां चिकित्सक ने हालत गम्भीर देखते हुए प्राथमिक उपचार के पश्चात उमा देवी को जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। थाना प्रभारी श्याम कुमार पाल ने बताया कि पुलिस मौके पर गई थी अभी तहरीर नहीं मिली है तहरीर मिलने पर तहरीर के हिसाब से मुकदमा दर्ज कर आगे की विधिक कार्यवाई की जाएगी।

एनएसपीएस त्रिपुला के छात्रों का साइंस सिटी और जुरासिक पार्क में शैक्षिक भ्रमण

रायबरेली। न्यू स्टैंडर्ड पब्लिक स्कूल सीनियर सेकेंडरी स्कूल त्रिपुला के विद्यार्थियों ने लखनऊ के साइंस सिटी और जुरासिक पार्क का एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण किया। जहाँ उन्होंने विज्ञान शहर में इंटरेक्टिव प्रदर्शनियों को देखा, इस दौरान शिक्षकों एवं साइंस सिटी गाइड ने उन्हें विज्ञान के विषयों की जानकारी दी। वहीं जुरासिक पार्क में भूतकाल के जीवों (डायनासोर) को वर्तमान में

देखकर बच्चे आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने उत्साहपूर्वक डायनासोर की सभी प्रजातियों को सजीव देखकर उनके विषय में जानकारी प्राप्त की साथ ही जनेश्वर मिश्र पार्क में, उन्होंने शांत वातावरण का आनंद लिया। यह भ्रमण छात्रों के लिए शिक्षा और मनोरंजन का मिश्रण था, जिससे छात्रों को प्रेरणा, रोमांच और अविस्मरणीय यादें मिलीं।प्रधानाचार्य शिवलखन प्रजापति ने बताया कि विद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण कराये जाते हैं। जिसके माध्यम से उन्हें स्कूल से इतर जानकारियां प्राप्त होती है भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों के साथ विद्यालय की संयोजिका सरिता त्रिवेदी, शिवकरन पाल, निधि जायसवाल, रश्मी साहू, कामरान, विवेक सिंह, रामविलास, अतुल पाण्डेय, जितेंद्र सिंह, आशुतोष त्रिवेदी, शिवम सिंह, रमाकांत विश्वकर्मा आदि शिक्षक मौजूद रहे।

दिव्यांग बच्चों के कार्यक्रम का आयोजन

जिला बेसिक शिक्षा विभाग की समेकित शिक्षा इकाई के अंतर्गत ब्लॉक संसाधन केंद्र नगर क्षेत्र में दिव्यॉंग बच्चों के तहसील स्तरीय खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता खण्ड शिक्षा अधिकारी नगर राजीव कुमार ओझा ने की।प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष पंकज दिवेदी ने कायर्क्रम व्यवस्था में सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन विशेष शिक्षक अभय प्रकाश श्रीवास्तव ने किया तथा रेफरीकी भूमिका जया शुक्ला, नरेश सक्सेना, मल्लिका सक्सेना,राजेश शुक्ला, सुमन देवी, मधू सिंह, मीना वर्मा, सीता बाजपेई, मनीष कुमार, आशा मिश्रा ने किया ।कार्यक्रम में श्रवण बाधित बच्चे राज मौर्य एवं श्रेया सिंह का नृत्य तथा दृष्टिबाधित बालक जुबेर, शबाब अली का गायन आकर्षण का केंद्र रहा। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी शिवेंद्र प्रताप सिंह के निर्देशन में कार्यक्रम का सम्पादन कराया गया जिसमें नगर, अमावां,सतांव, राही व हरचंदपुर के दृष्टिबाधित ,मूक बधिर ,मानसिक एवं शारीरिक रूप से दिव्यांग बच्चों की छूकर पहचान करना, दौड मूकबधिर ,एवं दौड अस्थि बाधिर के साथ-साथ ब्रेल लेखन ,रंगोली प्रतियोगिताऐं संपन्न कराई गयीं जिला खण्ड शिक्षा अधिकारी राजीव कुमार ओझा ने दिव्यांग बच्चों की के हौसलों की प्रसंशा की व उन्हें शिक्षित प्रशिक्षित करने वाले विशेष शिक्षकों के कार्यों की सराहना मुक्त कंठ से प्रशंसा की। आयोजित प्रतियोगिताओं में लो विजन दौड प्रतियोगिता में आदित्य प्रथम अजरा द्वितीय सामिया तृतीय स्थान पर रहे। छूकर पहचानो में युवराज प्रथम रत्नेश द्वितीय अजरा तृतीय अस्थि दिव्यांग बालकों की दौड़ प्रतियोगिता में अर्पित प्रथम विपिन द्वितीय काजल तृतीय रहे। रंग भरो प्रतियोगिता श्रवण बाधित में यश कश्यप प्रथम सारिका द्वितीय अभिनेत्र तृतीय स्थान पर रहे।रंग भरो प्रतियोगिता अस्थि दिव्यांग में शिवानी प्रथम राधा द्वितीय याकूब तृतीय रहे। सुलेख प्रतियोगिता में श्रेया सिंह प्रथम प्रखर मौर्य द्वितीय अनस ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष शिक्षकों अभय प्रकाश श्रीवास्तव, नरेश सक्सेना, मल्लिका सक्सेना मधु सिंह सीता बाजपेई राजेश शुक्ला नरेश अनूप मौर्य मनीष कुमार मीना वर्मा ने अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

महिलाओं को सशक्त बनाने की मुहिम

कानपुर। पेप्सिको इंडिया ने अपनी श्उन्नति की साझेदारीश् को भारत में बढ़ावा देने के लिएए उपभोक्ताओं और समुदायों को एक साथ लाते हुएए एक परिवर्तनकारी पहल श्रेवोल्यूशनारी दृ नारी के लिए एक क्रांतिष् शुरू किया है। यह पहल पेप्सिको इंडिया द्वारा सफल साझेदारियों के मॉडल पर आधारित हैए जिनके पास सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करने की क्षमता है। हर्षिता भोजवानी की यात्रा कानपुर से पेप्सिको इंडिया में सेल्स भूमिका पाने तकए बाधाओं को तोड़ने और अपेक्षाओं को फिर से परिभाषित करने की एक कहानी है। एक प्रतिष्ठित कॉलेज से न आने के बावजूदए उसने शुरू में यह विश्वास किया था कि केवल प्रमुख संस्थानों के छात्र ही ऐसी भूमिकाएं हासिल कर सकते हैं। हालांकिए इस अवसर ने उसकी सोच को नया आकार दियाए यह दिखाते हुए कि कड़ी मेहनत और संकल्प किसी भी पृष्ठाधार से ऊपर उठकर दरवाजे खोल सकते हैं। वह कहती हैंए ष्मैं सोचती थी कि केवल शीर्ष कॉलेजों के छात्र ही ऐसे अवसरों को प्राप्त कर सकते हैंए लेकिन इस अनुभव ने मुझे यह दिखाया कि कड़ी मेहनत और संकल्प से कोई भी सफलता प्राप्त कर सकता है। मुझे खुशी है कि मुझे यह अवसर मिला। मुझे पारंपरिक ऑफिस की नौकरी की तुलना में क्षेत्रीय नौकरी अधिक पसंद है क्योंकि इसमें लोगों से बातचीत करने का गत्यात्मक अनुभव भी मिलता है।ष

किसानों ने समस्याओं को निपटाने के लिए भरी हुंकार

कालपी (जालौन)। सोमवार को भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं की मासिक पंचायत प्रगतिशील किसान सत्येन्द्र सिंह भदौरिया पूर्व प्रधान दमरास की अध्यक्षता में संपन्न हुई। पंचायत में किसानों के द्वारा समस्याएं उठाते हुए जमकर हुंकार भरते हुये कहा कि यदि किसानों की समस्याओं का प्राथमिकता से निदान न किया गया तो जिम्मेदार अधिकारियों को चैन नहीं बैठने दिया जायेगा। किसानों ने 7 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन तहसीलदार अभिनव कुमार तिवारी को सौंपकर समाधान करने की मांग उठाई। कृषि उत्पादन मंडी समिति कालपी के चबूतरें में आयोजित भारतीय किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं की मासिक पंचायत में संगठन के तहसील अध्यक्ष अजय सिंह राजू मलथुआ ने कहा कि किसानों की समस्याओं का निदान करने में अधिकारी उदासीनता बरती जाती हैं। फलस्वरुप किसान परेशान है। पंचायत के उपरांत किसानों का प्रतिनिधि मंडल ने तहसील कालपी में पहुंचकर तहसीलदार अभिनव कुमार तिवारी को ज्ञापन देते हुए अवगत कराया कि कालपी गल्ला मंडी में इलेक्ट्रॉनिक धर्म कांटे से 7 किलो किसानों का अनाज को अधिक तौल कर व्यापारियों के द्वारा धान ली की जा रही है दोषी व्यापारियों के खिलाफ दंडात्मक कार्यवाही की जाए। ज्वार खरीद में केंद्र प्रभारी के द्वारा किसानों को दरकिनार करके व्यापारियों का माल खरीदा जा रहा है व्यवस्था को रोका जाए। डीएपी खाद किसानों को ब्लैक में ऊंचे दामों 17-18 सो रुपए प्रति बोरी के हिसाब से खरीदने को मजबूर होना पड़ रहा है। डीएपी खाद को जल्द उपलब्ध कराया जाए। किसानों ने अवगत कराया कि ग्रामीण क्षेत्रों में 7-8 घंटे सप्लाई दी जा रही है। 18-20 घंटे बिजली आपूर्ति देकर व्यवस्था को ठीक किया जाये। अन्ना जानवरों के छुट्टा घूमने से फसलों में नुकसान पहुच रहा है। इस समस्यायों का निदान करके व्यवस्था ठीक की जाये। इस मौके पर चंद्रपाल सिंह चंद्रभान गुर्जर धमनी, जितेंद्र सिंह, जितेंद्र परमार अजान सिंह, श्याम बाबू, महेश कुमार लमसर, सत्येंद्र पाल उदय सिंह आदि शामिल रहे।

डीएम को शेल्टर हाउस में मिलीं अव्यवस्थाएं,संचालक को नोटिस

उरई (जालौन)। बीती रात्रि जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय ने आश्रय गृह (शेल्टर हाउस) का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने शेल्टर हाउस की अव्यवस्थाओं पर संबंधित अधिकारियों को सुधार के लिए आवश्यक निर्देश दिये साथ ही संचालक को नोटिस जारी किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने सबसे पहले शेल्टर हाउस में लगाए गए सीसीटीवी कैमरों का हाल देखा और पाया कि कई कैमरे संचालक द्वारा बंद कर दिए गए थे। उन्होंने कड़ी फटकार लगाई और तुरंत सीसीटीवी कैमरों का संचालन शुरू कराया, और संचालक विरुद्ध कड़ी कार्यवाही के निर्देश दिए। उन्होंने यह भी कहा कि प्रवासियों की सुरक्षा के दृष्टिगत कैमरों का निरंतर संचालन सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही मैन गेट पर दो और सीसीटीवी कैमरे लगाने का निर्देश दिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि किसी प्रकार की लापरवाही पाई जाती है तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी। जिलाधिकारी ने शेल्टर हाउस में आने वाले प्रवासियों की पहचान के लिए

शेल्टर हाउस में लगे फायर एक्सटिंग्विशर मिले एक्सपायरी डेट के, तत्काल फायर सिस्टम के रिफिल बदलने के दिए निर्देश- सीसीटीवी कैमरे भी पाये गये बंद, मैने गेट पर लगाए जाए दो सीसीटीवी कैमरे

आधार कार्ड या अन्य पहचान पत्र लिया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी प्रवासियों का रजिस्टर में समय और तारीख के साथ विवरण दर्ज किया जाए। उन्होंने कहा कि यह प्रक्रिया प्रवासियों की सुरक्षा और व्यवस्था बनाए रखने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने शेल्टर हाउस में प्रकाश व्यवस्था की भी कमी पाई। उन्होंने अधिशाषी अधिकारी को निर्देशित किया कि अगले दो दिनों के भीतर शेल्टर हाउस में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। जिलाधिकारी ने सुरक्षा को लेकर भी कड़े निर्देश दिए। शेल्टर हाउस में एक छोटा गैस सिलेंडर पाया गया, जिसे तुरंत परिसर से हटा दिया गया। उन्होंने कहा कि शेल्टर हाउस में किसी भी प्रकार के ज्वलनशील पदार्थ की उपस्थिति नहीं होनी चाहिए, और इसके लिए निरंतर निगरानी रखी जाए। इसके अलावा शेल्टर हाउस में लगे फायर एक्सटिंग्विशर की डेट समाप्त हो चुकी थी। जिलाधिकारी ने इस मामले में भी तत्काल फायर सिस्टम के रिफिल बदलने के निर्देश दिए। शेल्टर हाउस के संचालक की अव्यवस्थाओं को लेकर नाराजगी व्यक्त की और कहा कि संचालक को नोटिस जारी किया जाए। इसके साथ ही उन्होंने सदर उप जिलाधिकारी, थानाध्यक्ष, दो महिला कांस्टेबल और अधिशाषी अधिकारी को निर्देश दिया कि वह शेल्टर हाउस में निरंतर निरीक्षण करें ताकि कोई भी अव्यवस्था सामने न आए। उन्होंने कहा कि शेल्टर हाउस की व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए सभी अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए। इस अवसर पर तहसीलदार शेर बहादुर सिंह, अधिशाषी अधिकारी राम अचल कुरील आदि सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

हत्या के आरोपी बंदी ने फरार होने के प्रयास में सिपाही की आंखों में डाला मिर्च पाउडर

रायबरेली। दीवानी न्यायालय में उस समय हडकंप मच गया जब एक हत्यारोपी को जिला जेल से बंदी को कोर्ट में पेशी पर लाया गया था बंदी ने फरार होने के प्रयास में सिपाही की आंखों में मिर्च पाउडर डालकर फरार हो रहा था तभी अधिवक्ताओं ने पकड लिया,सिपाही को जिला अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। आपको बता दे से सिपाही द्वारा बंदी सैफइमरान को कोर्ट में पेशी पर लाया गया था बंदी ने मौका पाते ही सिपाही की आंखों में मिर्च पाउडर डालकर फरार होने का प्रयास किया लेकिन असफल रहा। वहां मौजूद अधिवक्ताओं ने बंदी को पकड लिया और पुलिस के हवाले किया। अधिवक्ताओं की माने तो बंदी के हमले से सिपाही की आंख में मिर्च पाउडर पढने के बाद सिपाही के चंगुल से बंदी छुडा नहीं पाया और फरार होने में असफल रहा अधिवक्ताओं ने फरार होने के प्रयास में रहे बंदी को वहां अन्य पुलिस कर्मियों को बुलाकर सौंप दिया गया वहीं बंदी के हमले के बाद सिपाही को जिला अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है यहां भारती का उसका इलाज किया जा रहा है फिलहाल अभी तक पुलिस अधिकारियों द्वारा इस मामले में कोई बयान जारी नहीं किया गया है हालांकि पुलिस के ट्विटर हैंडल से यह जरूर कहा गया है प्रकरण को संज्ञान में लेकर आवश्यक कार्रवाई के लिए कोतवाली पुलिस को निर्देशित किया गया

आग से लाखों कीमत का सामान जलकर राख

ऊंचाहार। शॉट सर्किट से इलेक्ट्रॉनिक शॉप में लगी आग से लाखों कीमत का सामान जलकर राख हो गया, फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, एक वर्ष के भीतर दूसरी बार इसी दुकान में आग लगने की घटना कारित हुई है।गोपापुर गाँव निवासी धीरज सोनकर की बाबूगंज बाजार में रामचंद्रपुर रोड पर धीरज ट्रेडर्स के नाम से इलेक्ट्रॉनिक की दुकान है।हर रोज की तरह रविवार की शाम वो दुकान बंद करके घर चला गया।देर रात उसे दुकान के बगल में होटल चला रहे व्यक्ति ने दुकान में आग लगने की सूचना दी,जब तक वो दुकान पर पहुंचता।दुकान में रखा सामान जलकर राख हो चुका था।पीड़ित की सूचना पर पुलिस व फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची, जिसके बाद फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

प्रेरक कैंपेन की शुरुआत

कानपुर। श्रीराम ग्रुप की प्रमुख कंपनी श्रीराम फाइनेंस ने टुगेदर वी सोअर शिर्षित एक बेहद प्रेरक ब्रांड कैंपेन प्रारंभ किया है। यह कैंपेन परस्पर संबंध और एकता की ताकत पर प्रकाश डालते हुए श्रीराम फाइनेंस की भारत की उम्मीदों के साथ साझेदारी की प्रतिबद्धता दर्शाता है।इस कैंपेन का उद्देश्य इस भावना का जश्न मनाना और राहुल द्रविड़ के अपने जीवन के एक अंश के साथ साझेदारी को आगे बढ़ने के साधन के रूप में दर्शाना है। श्रीराम फाइनेंस में मार्केटिंग की एग्ज़ेक्युटिव डायरेक्टर के रूप में कार्यरत एलिज़ाबेथ वेंकटरमन ने अभियान के बारे में जानकारी साझा करते हुए कहा टुगेदर वी सोअर हर भारतीय के साथ खड़े होने और उनकी आकांक्षाओं का समर्थन करने के हमारे वादे का प्रतीक है चाहे वह फिक्स्ड डेपॉज़िट्स हो वाहनों की फाइनेंसिंग हो छोटे व्यवसायों के लोन हों या गोल्ड या पर्सनल लोन आदि के माध्यम से धन तक त्वरित पहुँच प्रदान करना हो।

चुनावी रंजिश में दलित बीडीसी को दी जानमाल की धमकी

जालौन (उरई)। चुनावी रंजिश को लेकर क्षेत्र पंचायत सदस्य के घर पहुंचकर गांव के ही कुछ लोगों ने न सिर्फजातिसूचक गालियां दी बल्कि कर जान से मारने की धमकी भी दे डाली। पीड़ित क्षेत्र पंचायत सदस्य ने मामले की तहरीर छिरिया मलकपुरा चौकी में दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम देवरी निवासी क्षेत्र पंचायत सदस्य प्रताप सिंह ने पुलिस को बताया कि उनके गांव के ही कुछ लोग उससे चुनावी रंजिश मानते हैं। आरोप लगाया कि वह किसी काम के चलते बाहर गए हुए थे। घर पर पत्नी व पुत्रवधू अकेली थीं। सोमवार की सुबह करीब पांच बजे गांव के चार पांच लोग उसके घर पहुंच गए और घर के बाहर खड़े होकर जातिसूचक गालियां देने लगे। इतना ही नहीं जब दरवाजे नहीं खुले तो गेट पर लातें मारीं।

कुसमिलिया के दंगल में पहले दिन दो दर्जन से अधिक मुकाबले हुए

कुसमिलिया (जालौन)। डकोर क्षेत्र के कुसमिलिया गांव में दो दिवसीय राज्य स्तरीय दंगल एवं मेले का सदर उप जिलाधिकारी नेहा ब्याड़वाल ने फीता काटकर महिला पहलवानों के हाथ मिलवाकर किया। दंगल के पहले दिन पहलवानों के बीच दो दर्जन से अधिक कुश्तियां हुईं।दंगल के प्रथम दिन सोमवार को पहली कुश्ती दो हजार रुपए के लिए महिला पहलवानों के बीच हुई। जिसमें बंटी हिमांचल प्रदेश व महिला पहलवान बलजीत गौर के बीच हुई। बलजीत गौर दिल्ली ने बंटी को पटखनी दी। इसके बाद 1500 रुपए की कुश्ती में रिकू निभाना ने पर्दम निभाना को पटकनी देकर कुश्ती जीती। इसी तरह 1000 रुपए की कुश्ती में भारत सादारा ने ताड़पुरा के पहलवान लोकेन्द्र धूल चटाकर जीत हासिल की। 1000 की कुश्ती में सूर्या पहलवान कुठौंदा ने मयंक जराखर को हराया। 1000 की कुश्ती में प्रतीम हरदोई को बन्टू पहलवान फत्तेपुर ने चित किया। 30 कुश्तियों में पहलवानों ने तरह-तरह के दांव-पेंच दिखाए। रेफरी की भूमिका में भूरा जराखर और सतीश राजपूत कुसमिलिया रहे। दंगल का संचालन संदीप राणा पहलवान ने किया। इस मौके पर चेयरमेन प्रतिनिधि बिजय चौधरी, कालपी विधायक विनोद चतुर्वेदी, सीडीओ राजेंद्र कुमार श्रीवास, प्रधान कृष्णकुमार राजपूत, कंचन राजपूत, परमेश्वरी दयाल राजपूत, राजेंद्र बापू, नारायण महान, अरविंद, मानसिंह राजपूत, शिव सहाय, सुरेश राजपूत, तुलसीराम, बीरेंद्र राजपूत, शैलेंद्र राजपूत, मूलचंद राजपूत, दिवाकर, रवि राजपूत, ग्रामीण सुदूर क्षेत्र से आए अतिथि आदि मौजूद रहे।

सोइठा के पास कनपटी पर असलहा लगा, शराब व्यवसायी से पैसों भरा बैग लूट ले गए

रायबरेली। पुलिस गस्ट की पोल खुल गई है।यहा रायबरेली लालगंज मार्ग पर असला लगाकर बदमाशों ने बाइक सवार शराब व्यवसाई से मारपीट कर पैसों भरा बैग छीन कर फरार हो गए घटना से मचा हडकाम के बाद पुलिस जांच पडताल में जुड गई है घटना गुरुवार की रात की बताई जा रही है यहां रायबरेली जनपद के गुरुबख्शगंज थाना क्षेत्र के अतौर पुलिस चौकी के अंतर्गत आने वाले सोइठा गांव के पास सुनसान स्थान पर लुटेरों ने बाइक सवार शराब व्यवसायी से साढ़े पांच लाख रुपए लूट लिए सूचना मिलते ही घटनास्थल पर पहुंचकर पुलिस व्यवसायी से पूछताछ और मार्ग पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है। रायबरेली शहर के अमर नगर मोहल्ले में शराब व्यवसायी राजकुमार जायसवाल रहते हैं। वह रविवार को अपने कर्मचारी चन्द्र प्रकाश मिश्रा निवासी खाली सहाट के साथ बाइक से क्षेत्र की शराब दुकानों से रुपए लेकर घर रायबरेली आ रहे थे। रायबरेली-लालगंज मार्ग पर अटौरा पुलिस चौकी क्षेत्र के सोइठा गांव के पास सुनसान स्थान पर बाइक सवार लुटेरे पीछे से आये और उसे रोक कर कनपटी पर असलहा लगा दिया बदमाशों ने करीब 5.5 लाख की नकदी से भरा बैग लूट कर फरार हो गये। व्यवसायी ने इसकी सूचना पुलिस को दी।सूचना के बाद मौके पर सीओ अनिल कुमार सिंह और थाना प्रभारी प्रमोद कुमार सिंह मौके पर पहुँच गए। पुलिस ने लुटेरों को पकड़ने के लिए नाकेबंदी की, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। थाना प्रभारी प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि शराब व्यवसायी के साथ हुई लूट की सूचना पर जांच की जा रही है। व्यवसायी का कहना है कि बाइक के बीच में रुपयों से भरा बैग लेकर जा रहे थे। बगल से निकले बाइक सवार लुटेरे रुपयों से भरा बैग लेकर चले गए। उन्होंने कहा कि जल्द ही लुटेरे पकडे जाएंगे।

डीएम ने कम्पोजिट विद्यालय का निरीक्षण कर जताई नाराजगी, सुधार के दिए निर्देश

फर्रुखाबाद। डीएम डॉ. वी.के. सिंह ने कमालगंज विकास खंड के पीएमश्री कम्पोजिट विद्यालय झसी का निरीक्षण किया। इस दौरान विद्यालय में शिक्षा का स्तर अत्यंत खराब पाया गया। बच्चों में गणित के बेसिक ज्ञान की कमी पर डीएम ने गहरी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने विद्यालय प्रशासन को शिक्षा के स्तर में सुधार करने और छात्रों को प्रतिदिन 30 मिनट सामान्य ज्ञान की जानकारी देने के निर्देश दिए।निरीक्षण में विद्यालय में साफसफाई की भारी कमी पाई गई। पंखे गंदे थेए पानी की टोटियां खराब थीं और खिड़कियों पर जाली सही तरीके से नहीं लगी थी। शौचालयों की स्थिति भी अत्यंत खराब थी। डीएम ने शौचालयों में टाइल्स लगवाने और साफसफाई पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने मिड.डे मील में उपयोग की जा रही खाद्य सामग्री और मसालों की गुणवत्ता की भी जांच की। साथ ही विद्यालय परिसर में हो रहे निर्माण कार्यों में इस्तेमाल की जा रही ईंटों की गुणवत्ता को खराब पाया। इस पर उन्होंने खंड विकास अधिकारी को फटकार लगाई और तुरंत ईंटों को बदलने और निर्माण कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी ने विद्यालय परिसर में पेड़.पौधे लगवाने और हरित वातावरण बनाने के लिए भी खंड विकास अधिकारी को निर्देशित किया। बेसिक शिक्षा अधिकारी, खंड विकास अधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारी और अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।जिलाधिकारी के इस निरीक्षण में विद्यालय की व्यवस्था में व्याप्त खामियों को उजागर किया। उन्होंने शिक्षा, सफाई और निर्माण कार्यों में सुधार के सख्त निर्देश दिए ताकि विद्यालय का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

कब्रिस्तान की भूमि कब्ज़ा मुक्त करने की मांग

● डीएम के निर्देश पर पहुंची टीम ने निभाई महज औपचारिकता

फतेहपुर। बहुआ स्थित कब्रिस्तान पर अवैध कब्जा करने की लगातार शिकायत मिलने के बाद डीएम के निर्देश पर पहुंची टीम पर कब्रिस्तान को अवैध कब्ज़ा मुक्त करने की जगह केवल औपचारिकता निभाने का आरोप लगाते हुए शिकायतकर्ता ने कब्रिस्तान की भूमि को पूरी तरह से अवैध कब्जे से मुक्त न करने की डीएम से पुन: शिकायत की है। समाजिक कार्यकर्ता व पूर्व सैनिक अब्दुल हमीद फौजी ने डीएम को दिए शिकायती पत्र में बताया कि बहुआ स्थित कब्रिस्तान की गाटा संख्या 673, 674, 1778 आदि पर अवैध कब्ज़ा को लेकर उनके द्वारा लगातार शिकायत दर्ज करवाई गई थी। वर्ष 2019 में राजस्व विभाग द्वारा अवैध अतिक्रमणकारियों के विरुद्ध नोटिस देकर अतिक्रमण हटाने के लिए दो माह का समय दिया गया था। समय सीमा बीतने जे बाद भी राजस्व विभाग द्वारा कार्रवाई नहीं की गई। जिस पर उनके द्वारा शासन व प्रशासन को लगातार लिखा पढ़ी की गई। डीएम के निर्देश पर 30 नवंबर 2024 को नायब तहसीलदार हुसैनगंज अमृत प्रभात यादव व अधिशासी अधिकारी आशीष चौधरी के नेतृत्व में लेखपाल धर्मवीर सिंह, अंकित प्रताप सिंह, राहुल श्रीवास्तव व सुनील कुमार आदि की संयुक्त टीम द्वारा अवैध अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की। भारी पुलिस बल की मौजूदगी में कब्रिस्तान और सरसी तालाब से अवैध कब्जे हटाए गए लेकिन कब्रिस्तान की भूमि से स्थाई अवैध कब्जे नहीं हटाये गये।

पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री ने स्मार्ट क्लासों का किया शुभारंभ

● डिजिटल क्लासेस के जरिए नवाचार की शिक्षा में आगे बढ़ सकेंगे छात्रः साध्वी

फतेहपुर। जिले की पूर्व सांसद एवं पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने सोमवार को जिले के अलग-अलग तीन विद्यालयों में स्मार्ट क्लास का लोकार्पण किया। इससे पूर्व विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री का माला पहनाकर स्वागत किया। तत्पश्चात साध्वी ने कहा कि डिजिटल क्लासेस के जरिए छात्र नवाचार की शिक्षा में आगे बढ़ सकेंगे। खागा नगर के सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में इंद्रप्रस्थ गैस इंडिया लिमिटेड की सीएसआर योजना के अंतर्गत निर्मित स्मार्ट क्लास का लोकार्पण पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति, खागा विधायक कृष्णा पासवान एवं नगर पंचायत चेयरमैन गीता सिंह की उपस्थिति में किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य गजेंद्र सिंह एवं आईजीएल के मुख्य महाप्रबंधक अमित धर, विद्यालय के सह प्रबंधक अतुल अग्रवाल द्वारा आए हुए अतिथियों को पुष्पगुच्छ, अंग वस्त्र और शमी का पौधा भेंट कर सम्मानित किया गया।

साध्वी निरंजन ज्योति ने बच्चों को बताया कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में भैया बहन अधिक से अधिक डिजिटल क्लासेस के माध्यम से और अच्छा सीख सकें और नवाचार की दिशा में आगे बढ़े इस सपने को साकार करने के लिए इंद्रप्रस्थ गैस इंडिया लिमिटेड की सीएसआर योजना के अंतर्गत विद्यालय में स्मार्ट क्लास का निर्माण किया गया और भैया बहनों से आशा किया कि भैया बहन इस योजना का लाभ अवश्य उठाएं। अंत में प्रधानाचार्य गजेंद्र सिंह ने आए हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इसके अलावा केंद्रीय राज्यमंत्री ने ऐरायां विकास खण्ड के अल्लीपुर बहेरा स्थित कमल विद्या मंदिर इंटर कालेज व हथगाम विकास खण्ड के मनमोहनपुर स्थित पीताम्बर लाल इण्टर कालेज में भी स्मार्ट क्लास का उद्घाटन कर इससे बच्चों को मिलने वाले लाभ गिनाए।

गैर इरादन हत्या में एक आरोपित को सात साल, दो भाईयों को सजा

फर्रुखाबाद। जिला जज विनय कुमार ने गैर इरादन हत्या में दो भाइयों को पांच पांच साल और साथी को सात साल कारावास की सजा सुनाई है। दोषियों पर बारह हजार रूपये अर्थदंड लगाया है। कायमगंज थाना क्षेत्र के गांव पैथान निवासी पातीराम पुत्र चेतराम ने कायमगंज थाना में गांव के ही तीन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था।जिसमें कहा था कि गांव में चकबंदी होने पर गांव के महेश चंद्र पुत्र बाबूराम आदि के खेत उसको मिल गए थे।

खेतों में पहले से नीम व आम के पेड़ खड़े थे। जिसको महेश व उसके परिवार के लोग अपना बता रहे थे। 16 मार्च 2003 को उसका पुत्र ब्रह्मानंद खेत पर गया था। जहां सुरेशए महेश पुत्रगण बाबूराम गिरीश व परवेश से पेड़ों को लेकर ब्रह्मानंद की कहांसुनी हो गई थी। जिसकी शिकायत करने पुत्र के साथ प्रवेश के घर गया था। शिकायत करने पर सुरेश व महेश गाली गलौज करने लगे गाली गलौज का विरोध करने पर सभी लाठी डंडों से मारपीट करने लगे। परवेश ने गोट से तमंचा निकालकर पुत्र ब्रह्मानंद के गोली मार दी।जिससे वह घायल होकर वहीं गिर गया। सभी धमकी देकर मौके से फरार हो गए पुलिस ने सुरेश, महेश, परवेश के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच पड़ताल की।

विवेचक ने विवेचना पूर्ण कर तीनों के खिलाफन्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया। मामले की सुनवाई कर रहे जिला जज विनय कुमार ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद गवाह व साक्ष्य के आधार पर दोषी करार देते हुए सुरेशएमहेश को पांच पांच साल व परवेश को सात साल कारावास व बारह हजार रूपये जुर्माना की सजा सुनाई है। जुर्माना अदा ना करने पर तीन माह अतिरिक्त कारावास भोगने का आदेश दिया है।

राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 14 दिसम्बर

लखीमपुर खीरी। राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन 14 दिसम्बर को राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरणए नई दिल्ली एवं उप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरणए लखनऊ के आदेशानुसार एवं सै0 माऊज बिन आसिम, जनपद न्यायाधीश अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, लखीमपुर.खीरी के निर्देशानुसार 14 दिसम्बर 2024 द्वितीय शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन जनपद न्यायालय एवं तहसील स्तर पर किया जाएगा। नोडल अधिकारी अभिषेक श्रीवास्तव एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के प्रभारी सचिव योगेश कुमार यादव ने बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत में यातायात, लघु आपराधिक प्रकरण, नगर पालिका आदि से संबंधित मामलों एवं बैंक मामले धारा.138 परकाम्य लिखित अधिनियम के वाद विद्युत एवं जल विवाद (चोरी से सम्बन्धित विवाद) राजस्व वाद, पारिवारिक वाद, व्यवहारिक वाद, उत्तराधिकार के वाद तथा अन्य वाद/प्रकरण अधिकाधिक संख्या में निस्तारित किये जायेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रयास कर रही है प्रदेश सरकारः केशव मौर्य

● एक रोटी कम खाकर श्रेष्ठ शिक्षा दिलाने का प्रयास करें अभिभावक

मंच पर बोलते हुए केशव प्रसाद मौर्य, बच्चों को सम्मानित करते उपमुख्यमंत्री

संडीला (हरदोई)। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था सेठ एमआर जयपुरिया स्कूल के वार्षिकोत्सव सृजन में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए कहा कि अभिभावक भले ही एक रोटी कम खाएं लेकिन बच्चों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दिलाने का प्रयास करें। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के विद्यालय पहुंचने पर एमएलसी अशोक अग्रवाल स्कूल के डायरेक्टर संचित अग्रवाल तथा क्षेत्रीय विधायक अलका अर्कवंशी, सांसद अशोक रावत, विधायक रामपाल वर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष अजीत सिंह बब्बन, ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि अमित गुप्ता, पूर्व ब्लाक प्रमुख कुंवर वीरेन्द्र सिंह समेत अन्य नेताओं ने उनका स्वागत किया। शुभारंभ गणेश वंदना से हुआ कार्यक्रम में छात्र छात्राओं ने थीम पर आधारित जीवन की तीनों स्थितियों बचपनए युवावस्था तथा किशोरावस्था को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर छात्र छात्राओं ने अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि प्रदेश सरकार शिक्षा के स्तर में गुणात्मक सुधार और आधुनिकता से परिपूर्ण शिक्षा देने का प्रयास कर रही है। शिक्षा का स्तर उच्च हो और छात्रों का भविष्य उज्जवल होए इसका गंभीर प्रयास है। अभिभावकों का आह्वान किया कि भले ही अभिभावकों को एक रोटी कम खानी पड़े लेकिन अपने पाल्यों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दिलाने का गंभीर प्रयास करना चाहिए। प्रदेश के आपकारी राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार नितिन अग्रवाल ने कहा कि इस विद्यालय की स्थापना से निश्चित रूप से इस क्षेत्र के अभिभावकों को श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान करने वाला एक शिक्षण संस्थान प्राप्त हुआ है। इस विद्यालय में सदैव बेहतरीन शिक्षा देने का काम किया है।

क्विक न्यूज

दो बाइकों की भिड़ंत में बाइक सवार युवक की मौत

राठ (हमीरपुर)। रविवार की देर रात जराखर रोड स्थित सैना रोड पर दो बाइकों की जोरदार भिड़ंत हो गई थी। इस हादसे में एक बाइक सवार युवक की मौत हो गई। दोनों बाइकों के तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए थे। चिकित्सक ने मेडिकल कालेज उरई रेफर कर दिया। कस्बे के बुधौलियाना निवासी शैलेन्द्र कुशवाहा ने बताया कि रविवार को उसके पिता 50 वर्षीय बृजमोहन कुशवाहा सैना रोड स्थित कछवारे की देखरेख के लिए गए थे। देर रात वह घर 35 वर्षीय वर्षीय कपिल पुत्र सीताराम निवासी परासन जनपद जालौन के साथ बाइक आ रहे थे। तभी सामने से आ रही दूसरी बाइक ने सीधी टक्कर मार दी। जिससे उसके पिता की मौके पर ही मौत हो गई थी। जबकि कपिल व दूसरी बाइक पर सवार मुस्करा थाने के बिहूंनी गांव निवासी कंधीलाल मोहित कुमार गंभीर रूप से घायल हो गए थे। सीएचसी ले गए थे। डॉ चंद्रशेखर सिंह ने बताया कि कपिल मोहित कंधीलाल की हालत गंभीर होने पर चिकित्सक ने मेडिकल कालेज उरई रेफर कर दिया था।

चोर सोने चांदी के जेवर ले गये

राठ (हमीरपुर)। चोरों ने सूना पाकर घर में घुसकर सोने चांदी के जेवरात सहित नकदी पार कर दी है। पीड़ित ने मझगवां थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। मझगवां थाने के मलेहटा गांव निवासी सौरभ सिंह पुत्र लाल बहादुर सिंह ने बताया कि शनिवार की शाम सात बजे वह अपने परिवार के साथ शादी समारोह में राठ गया था। रविवार की सुबह जब वह घर आया तो अंदर के सारे ताले टूटे हुए थे। अंदर जाकर देखा तो सामान बिखरा पड़ा था। बताया कि चोर बक्से में रखे सोने चांदी के जेवरात व 1089 लाख रुपए की नकदी चोरी करके ले गए हैं। मझगवां थानाध्यक्ष शिवसहाय सरोज ने बताया कि मामला दर्ज कर लिया गया है। जांच कराई जा रही है।

नहर में गिरने से बृद्ध की मौत

राठ (हमीरपुर)। सोमवार की सुबह शौच के लिए खेत की ओर गए वृद्ध किसान की नहर बंबी में गिरने से पानी में डूबकर मौत हो गई है। फूलसिंह खेत की ओर शौच के लिए गए थे। तभी अतरौलिया माइनर बंबी में उसके भाई की पानी में डूबकर मौत हो गई है। मृतक अविवाहित था। पुत्र की मौत मां रामप्यारी का रो रोकर बुरा हाल है। कोतवाल राम आसरे सरोज ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जांच कराई जा रही है।

बाइक की टक्कर से वृद्ध की मौत, रिपोर्ट दर्ज

कुरारा (हमीरपुर)। थाना क्षेत्र के झलोखर गांव निवासी अधेड़ की बीती रात बाइक चालक ने पीछे से टक्कर मार दी जिससे उपचार के दौरान उसकी मृत्यु हो गयी। क्षेत्र के झलोखर गांव निवासी अजीम खान (62) खाना खाने के बाद रात आठ बजे कुरारा हमीरपुर हाइवे किनारे टहलने निकले थे। तभी पीछे से चालक ने तेजी व लापरवाही से बाइक चलाकर टक्कर मार दी। जिससे वह घायल हो गए। घटना की जानकारी मिलने पर तत्काल उन्हे जिला अस्पताल भर्ती कराया गया जहा पर डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया है। शव कपंचनामा के लिये भेज दिया गया है। अज्ञात बाइक चालक के खिलाफदुर्घटना का मुकदमा दर्ज किया गया है।

सड़क निर्माण में धांधली का आरोप, ग्रामीणों में रोष

फतेहपुर। किशनपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत बन रही पहाड़पुर से मड़ौली संपर्क मार्ग जिसका कायाकल्प निर्माणकार्य कार्यदाई संस्था लोक निर्माण विभाग द्वारा जारी है। निर्माणकार्य के दौरान निर्माणाधीन सड़क में गुणवत्ताहीन मानकों के विपरीत एक इंच डामरीकरण का लेपनकर मिलीभगत कर ग्रामीणों ने संस्था ठेकेदारों पर लाखों का भ्रष्टाचार करने के आरोप लगाए हैं। पूर्व में ग्रामीणों की शिकायत पर संबंधित अधिकारियों ने कार्य की जांच की थी। ग्रामीणों के आरोप है कि मामले में लीपापोती करते हुए खानापूर्ति की गई। निर्माणधीन कार्य में लगातार धांधली की जा रही है। गांव के पप्पू सिंह, राजकरण, जय सिंह, विक्रम, जितेन्द्र सिंह, रिंकू धनपत आदि ग्रामीणों ने मीडिया से गुहार लगाते हुए पुनः जिला स्तरीय टीम गठित कर गुणवत्ताहीन मानक विहीन कार्य की जांच करते हुए कार्यवाही की मांग की है। इस बाबत मामले को लेकर लोक निर्माण विभाग अधीक्षण अभियंता अनिल कुमार शील ने बताया कि पूर्व में जेई भेजकर जांच कराई गई है। गुणवत्ता में सुधार कराया गया है। जानकारी मिली है कि टीम गठित कर पुनः जांच की जाएगी।

संदिग्ध अवस्था में युवती ने लगाई फांसी

फतेहपुर। गागीपुर थाना क्षेत्र के चकमीरापुर गांव निवासी दीपक की पत्नी जानकी देवी ने रविवार की देर रात संदिग्ध अवस्था में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने शव को विच्छेदन गृह भेज दिया। मृतका मायका कानपुर के पंचवटी विनायकपुर बताया जा रहा है। जिसकी शादी तीन वर्ष पूर्व हुई थी। युवती के आत्महत्या किये जाने का कारण ज्ञात नहीं हो सका है।

विश्व दिव्यांग दिवस के अवसर पर जिला दिव्यांग पुनर्वास केन्द्र, पुखरायां में कैम्प का आयोजन

कानपुर देहात। डीएम के निर्देशन में जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी ने बताया कि दिव्यांगजनों को सूचित किया जाता है कि 03 दिसम्बर 2024 को विश्व दिव्यांग दिवस के अवसर पर दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं दिव्यांगजन पेंशन, दुकान निर्माण संचालन योजना, कृत्रिम अंग, सहायक उपकरण, दिव्यांग शादी विवाह प्रोत्साहन योजना से दिव्यांगजनों को लाभान्वित किये जाने हेतु एक कैम्प का आयोजन जिला दिव्यांग पुनर्वास केन्द्र, कालपी रोड, पुखरायां में आयोजित किया जा रहा है। दिव्यांगजन दिव्यांग प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, आय प्रमाण पत्रए एक फोटो व मो. नं. सहित प्रात: 10.30 बजे से 02.00 बजे के मध्य योजनाओं दिव्यांगजन पेंशन, दुकान निर्माण/संचालन योजना, कृत्रिम अंग/सहा. उपकरण योजना, दिव्यांग शादी विवाह प्रोत्साहन योजना योजनाओं का का लाभ प्राप्त कर सकते है।

सीओ सदर ने किया कोतवाली का औचक निरीक्षण

● अभिलेखों की जांच कर दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

संवाददाता। गुरसहायगंज, कन्नौज

कोतवाली कार्यालय का निरीक्षण करते सीओ सदर।

पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द के निर्देश पर सीओ सदर ने कोतवाली का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने कोतवाली में सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छता और कार्यालय में रखे गए अभिलेखों की गहनता से जांच की। सीओ ने कोतवाली के अभिलेखों की सटीकता और अद्यतन स्थिति पर विशेष ध्यान दिया।

सोमवार को स्थानीय कोतवाली में निरीक्षण के दौरान सीओ सदर कमलेश कुमार ने कार्यालय में तैनात मुख्य महिला आरक्षी अमिता सिंह एवं गीतेन्द कुमार से बातचीत कर अभिलेखों को समय पर अपडेट करने और किसी भी प्रकार की त्रुटि से बचने के निर्देश दिए। इसके बाद मौजूद उपनिरीक्षकों के कार्यों का मूल्यांकन करते हुये समय से लंबित विवेचनाओं को पूर्ण करनें के निर्देश देने के उपरान्त उन्होनें कहा कि पुलिस विभाग की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और अनुशासन बनाए रखना बेहद आवश्यक है। इसके अलावा उन्होंने शिकायत पुस्तिका और एफआईआर रजिस्टर का भी निरीक्षण किया।

शिकायतों के समाधान में देरी न करने और पीड़ितों को शीघ्र न्याय दिलाने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान कोतवाली परिसर में साफ-सफाई बनाए रखने और व्यवस्थित रखने के भी निर्देश दिए। इस दौरान प्रभारी निरीक्षक आलोक कुमार दुवे, कस्वा प्रभारी ज्ञानेन्द्र सिंह, नौरंगपुर चौकी प्रभारी मोहन लाल, जसोदा चौकी प्रभारी सुनील कुमार, सरायप्रयाग चौकी प्रभारी प्रदीप कुमार, बनियानी चौकी प्रभारी रावेन्द्र सिंह सहित तमाम पुलिस कर्मी मौजूद रहे।

विद्यार्थियों ने देखी अदालती कार्यवाही जाना कानून का महत्व

कन्नौज। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए) द्वारा क्रिस्तु ज्योति विद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें उन्हें अदालती कार्यवाही का अनुभव और विधिक अधिकारों की जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को जिला न्यायालय के विभिन्न कक्षों में चल रही कार्यवाही का सजीव अनुभव कराया गया। यह अनुभव उन्हें न्याय प्रक्रिया को गहराई से समझने का अवसर प्रदान करता है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से विद्यार्थियों को उनके मूलभूत विधिक अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जागरूक किया गया। कानून के प्रति उनकी रुचि बढ़ाने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया गया। जिला जज चंद्रोदय कुमार ने विद्यार्थियों को कोर्ट की कार्यवाही और न्यायपालिका की भूमिका के बारे में जानकारी दी। एडीएम एवं सचिव डीएलएसए लवली जायसवाल ने विद्यार्थियों को कानून की बारीकियां समझाईं और निःशुल्क विधिक सेवा के

विद्यार्थियों को अदालती प्रक्रिया दिखाते चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल

आधिकार की जानकारी दी। चीफ लीगल एड डिफेंस कार्उंसिल श्वेतांक अरुण तिवारी ने विद्यार्थियों को विभिन्न न्यायालयों में चल रही अदालती प्रक्रियाओं का प्रदर्शन कराया। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों में विधिक जागरूकता बढ़ाने और न्याय प्रणाली के प्रति उनकी समझ विकसित करने के लिए एक प्रेरणादायक पहल है। ऐसे प्रयास न केवल शिक्षा का हिस्सा बनते हैं, बल्कि युवा पीढ़ी को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने में भी सहायक होते हैं। इस दौरान असिस्टेंट डिफेंस काउंसिल मो सैफव अन्य मौजूद रहे।

सीडीओ की अध्यक्षता में बेसिक शिक्षा विभाग की जिला स्तरीय टास्क फोर्स बैठक का हुआ आयोजन, दिए निर्देश

● पिछली बैठक की अनुपालन आख्या प्रस्तुत न करने पर समस्त खंड शिक्षा अधिकारियों और जिला समन्वयक प्रशिक्षण को किया कारण बताओ नोटिस जारी

● ऑपरेशन कायाकल्प के अंतर्गत पीएम श्री विद्यालयो के लंबित कार्यों को प्राथमिकता देते हुए शीघ्र कराएं पूर्णः सीडीओ

कानपुर देहात। परिषदीय छात्रों को शासन द्वारा दी जा रही डीबीटी की धनराशि से लाभान्वित कराने के लिए शत प्रतिशत आधार प्रमाणीकरण और अभिभावकों के बैंक खाता संबंधित बैंक शाखा पर डीबीटी हेतु सीड कराने के निर्देश मुख्य विकास अधिकारी लक्ष्मी एन ने सोमवार को बेसिक शिक्षा विभाग की जिला स्तरीय टास्क फोर्स बैठक में विभागीय के अधिकारियों को दिए। उन्होंने ऑपरेशन कायाकल्प के अंतर्गत पीएम श्री विद्यालयो के लंबित कार्यों को प्राथमिकता देते हुए पूर्ण करानेए जर्जर विद्यालयों का मूल्यांकन कर ध्वस्तीकरण की कार्रवाई करते हुए वित्तीय कार्य योजना में नवीन भवन के लिए प्रस्ताव भेजनेए दिव्यांग बच्चों की शत प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित कराने के निर्देश बेसिक शिक्षा अधिकारी को दिए उन्होंने कहा कि आरटीई योजना का प्रचार प्रसार कराते हुए निजी विद्यालयों में मानक के अनुसार आरक्षित सीटों पर शत प्रतिशत प्रवेश करानेए कक्षा 1 व कक्षा 2 के बच्चों का निपुण लक्ष्य एप के माध्यम से निपुण आकलन करा लिया जाए। वहीँ आउट ऑफ स्कूल कि समीक्षा पर बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा बताया गया कि वर्तमान में जनपद अंतर्गत 252 आउट ऑफस्कूल बच्चे है।

नमामि गंगे योजना से कई गावों में ग्रामीणों को नहीं मिल रहा पानी

मौदहा (हमीरपुर)। जल जीवन मिशन के तहत मिलने वाले पानी के लिये ग्राम करहियां में लोग बूद बूद पानी को तरस रहे है। ग्रामीण रामकिशोर साहू सीताराम कुशवाहा रंजीत धनीराम साहू राजाराम राहुल राजू कोटेदार व मूलचंद आदि ने बताया कि नमामि गंगे से पहले पुरानी लाइनों के द्वारा पेयजल की समस्या का निदान ग्राम प्रधान के द्वारा नियमित रूप से किया जाता रहा है लेकिन जब से सरकार की नमामि गंगे के कर्मचारी पुरानी लाइन को ध्वंत कर नई लाइन आधी अधूरी डाली दी है।खेरापति स्थान के आसपास रहने वाले वासींदों को टारगेट कर वहां पानी न पहुंचने की लिए कह रहे हैं और इसके साथ ही कहते हैं किसी भी अधिकारी के यहां चले जाओ इस मोहल्ले में कभी पानी नहीं आएगा जिससे ग्रामीण आक्रोशित हो रहे है। इसी प्रकार विकास खंड के पढोरी ग्राम प्रधान प्रतिनिधि श्री राम ने बताया नमामि गंगे के द्वारा बनाई गई टंकी फटी होने के कारण जैसे ही पानी उसमें भर जाता है। पूरा पानी बह जाता है। और ग्रामीण बूंद बूंद पानी के लिए इधर.उधर दूसरे के दरवाजों पर चक्कर लगाते हैं।जिसके कारण ग्रामीणों को पानी पीने के लिए नहीं मिल पा रहा है। इस प्रकार 3 वर्ष बीत जाने के बावजूद भी नमामि गंगे योजना पूर्ण रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में घर.घर पानी मुहइया करने में नाकाम साबित हो रही है इस संबंध में नमामि गंगे के जेई दिलीप कुमार ने बताया कि करहिया गांव में 35 से 40 घर ऐसे हैं जहां पानी नहीं पहुंच रहा है जिसकी सूचना उच्च अधिकारियों को दे दी गई है। जल्द ही पानी पहुंचने की कोशिश की जा रही है। इसी प्रकार पढोरी गांव में टंकी टूटी होने की सूचना शासन स्तर पर पहुंचाई जा चुकी है।एक सप्ताह के अंदर समस्या का निस्तारण किया जाएगा।

सीडीओ ने विकास भवन सभागार में जिला पोषण समिति की बैठक, दिए निर्देश

कानपुर देहात। बच्चों, गर्भवती, धात्री, किशोरियों, महिलाओं को पोषण स्तर में सुधार लाने एवं उन्हें बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने को लेकर विकास भवन सभागार में जिला पोषण समिति की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। सीडीओ लक्ष्मी एन. ने कहा कि सरकार बच्चों, गर्भवती, धात्रीए किशोरियोंए महिलाओं को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। गर्भवती महिलाओं की निरंतर निगरानी की जाए एवं बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति सजगता रखने के लिए जागरूक करें। आंगनबाड़ी केंद्रों पर बजन मशीन आदि जो भी उपकरण दिए गए हैं, उन्हें क्रियाशील रखे। उन्होंने कहा कि सीडीपीओ की खराब परफार्मेंस होने पर विकास खंडवार सूची बनाकर प्रस्तुत करें, जिससे उनके विरुद्ध कार्रवाई अमल में लाई जा सके। आशा आंगनबाडी कार्यकत्री आपस में समन्वय बनाकर महिलाओं को जागरुक करके उन्हें स्वस्थ्य लाभ और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं दे।

उन्होंने कुपोषित बच्चों को पुष्टाहार देकर कुपोषण मुक्त बनाए जाने के निर्देश दिए। सीडीओ द्वारा आदर्श आंगनबाड़ी केन्द्र विकसित करने, निर्माणाधीन आंगनबाड़ी भवनों के निर्माण की प्रगति, मैम चिंहित बच्चों के पोषण श्रेणी में सुधार एवं उनकी स्वास्थ्य जांच एवं प्रबंधन, राष्ट्रीय पोषण माह के क्रियांवयन, पोषण ट्रैकर ऐप पर लाभार्थियों के आधार सत्यापनए आंगनबाड़ी केंद्रों की जिओ टैगिंग एवं आंगनबाड़ी केंद्रों पर अनुपूरक पुष्टाहार ड्राई राशन के वितरण आदि की बिंदुवार समीक्षा की गयी। जिले में कोई भी आंगनबाड़ी केन्द्र बंद नहीं होना चाहिये, यदि केंद्र बंद पाया मिला, तो संबंधित आंगनबाड़ी कार्यकत्री का मानदेय रोकते हुए सीडीपीओ के विरुद्ध भी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने गोद लिये आंगनबाड़ी केन्द्रों पर अधिकारियों के भ्रमण के लिए रोस्टर तैयार करने के निर्देश दिए। संभव अभियान जून से सितंबर 2024 में सभी सीडीपीओ को अच्छा कार्य करने और जनपद की रैंकिंग अच्छी लाने के निर्देश दिएए पोषण ट्रैकर पर चिन्हित सैम मैम बच्चो में सुधार करने के निर्देश दिएए आंगनवाड़ी केंद्र निर्माण में अनारंभ केंद्रों पर शीघ्र ही निर्माण कार्य शुरू करने के लिए विभाग को निर्देश दिए साथ ही लर्निंग लैब केंद्रों कार्य शुरू कर प्रगति लाने के निर्देश दिए गए। पोषण ट्रैकर ऐप पर फीडिंग का कार्य शीघ्र ही पूर्ण करा लिया जाए इसके अतिरिक्त सभी सीडीपीओ को प्रतिमाह 16 और मुख्य सेविका को प्रतिदिन 2 निरीक्षण करने जिसमें आंगनवाड़ी केंद्र खुलने बच्चों की उपस्थिति में सुधार लाने एवं केंद्र संचालन सुचारू रूप से चलाने और निरीक्षण आख्या उपलब्ध कराने के निर्देश दिए साथ ही पोर्टल पर सैम बच्चों के फॉलोअप शत प्रतिशत करने के निर्देश दिए। जिला कार्यक्रम अधिकारी, सीडीपीओ, मुख्य सेविका, और ब्लॉक कोऑर्डिनेटर उपस्थित रहे।

पायनियर
लखनऊ, मंगलवार, 3 दिसम्बर 2024

राजनीति असंतुष्ट आत्माओं का सागर है: गडकरी

नागपुर (महाराष्ट्र)।केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि राजनीति असंतुष्ट आत्माओं का सागर है, जहां हर व्यक्ति दुखी है और अपने वर्तमान पद से ऊंचे पद की आकांक्षा रखता है। नागपुर में रविवार को जीवन के 50 स्वर्णिम नियम नामक पुस्तक के विमोचन के अवसर पर गडकरी ने कहा कि जीवन समझौतों, बाध्यताओं, सीमाओं और विरोधाभासों का खेल है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता ने कहा कि चाहे व्यक्ति पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक या कॉरपोरेट जीवन में हो, जीवन चुनौतियों और समस्याओं से भरा है और व्यक्ति को उनका सामना करने के लिए जीवन जीने की कला को समझना चाहिए। मंत्री ने राजस्थान में आयोजित एक कार्यक्रम को याद करते हुए कहा, राजनीति असंतुष्ट आत्माओं का सागर है, जहां हर व्यक्ति दुखी है... जो पार्षद बनता है वह इसलिए दुखी होता है क्योंकि उसे विधायक बनने का मौका नही मिला और विधायक इसलिए दुखी होता है क्योंकि उसे मंत्री पद नही मिल सका। भाजपा नेता ने कहा, जो मंत्री बनता है वह इसलिए दुखी रहता है कि उसे अच्छा मंत्रालय नही मिला और वह मुख्यमंत्री नही बन पाया तथा मुख्यमंत्री इसलिए तनाव में रहता है क्योंकि उसे नही पता कि कब आलाकमान उसे पद छोड़ने के लिए कह देगा। उन्होंने कहा कि जीवन में समस्याएं बड़ी चुनौतियां पेश करती है और उनका सामना करना तथा आगे बढ़ना ही जीवन जीने की कला है। गडकरी ने कहा कि उन्हें अपने राजनीतिक जीवन में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन की आत्मकथा का एक उद्धरण याद है, जिसमें कहा गया है, कोई व्यक्ति तब खत्म नही होता जब वह हार जाता है। वह तब खत्म होता है जब वह हार मान लेता है। केंद्रीय मंत्री ने सुखी जीवन के लिए अच्छे मानवीय मूल्यों और संस्कारों पर जोर दिया। उन्होने जीवन जीने और सफल होने के अपने आदर्शों तथा नियमों को साझा करते हुए व्यक्ति, पार्टी और पार्टी दर्शन के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

न्यायालय ने मतदाता संख्या बढ़ाने पर निर्वाचन आयोग का रुख पूछा

नई दिल्ली। (भाषा) उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को निर्वाचन आयोग से उस जनहित याचिका पर जवाब मांगा, जिसमें प्रत्एक मतदान केंद्र पर मतदाताओं की अधिकतम संख्या।,200 से बढ़ाकर।,500 करने के उसके फैसले को चुनौती दी गई है।

प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति संजय कुमार की पीठ ने निर्वाचन आयोग से अपना रुख स्पष्ट करने को कहा। उन्होंने कहा, हम चिंतित हैं। किसी भी मतदाता को वंचित नहीं किया जाना चाहिए। पीठ ने आयोग की तरफ से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मनिंदर सिंह को प्रत्एक मतदान केंद्र पर मतदाताओं की अधिकतम संख्या बढ़ाने संबंधी फैसले का औचित्य स्पष्ट करते हुए एक संक्षिप्त हलफनामा दायर करने का निर्देश दिया। पीठ ने कहा, निर्वाचन आयोग की तरफ से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मनिंदर सिंह ने कहा है कि वे एक संक्षिप्त हलफनामे के जरिए स्थिति स्पष्ट करेंगे। हलफनामा तीन हफ्ते के भीतर दाखिल किया जाए। सिंह ने कहा कि पीठ ईवीएम को लेकर लगातार लगाए जा रहे आरोपों से वाकिफ है। उन्होंने कहा, आरोप लगते रहेंगे। 2019 से मतदान ऐसे ही हो रहा है और मतदाता संख्या बढ़ाने से पहले हर निर्वाचन क्षेत्र में राजनीतिक दलों से परमार्श किया जा रहा है। सिंह ने कहा कि मतदान केंद्रों पर कई मतदान बूथ हो सकते हैं और जब प्रति ईवीएम मतदाताओं की कुल संख्या बढ़ाई गई, तो प्रत्एक निर्वाचन क्षेत्र में राजनीतिक दलों से परामर्श किया गया। उन्होंने कहा कि मतदाताओं को निर्धारित समय के बाद भी हमेशा वोट डालने की अनुमति दी गई। पीठ ने निर्वाचन आयोग को अगली सुनवाई से पहले याचिकाकर्ता को अपने हलफनामे की एक प्रति मुहैया कराने का निर्देश दिया। मामले की अगली सुनवाई 27 जनवरी 2025 को होगी। इंदु प्रकाश सिंह की ओर से दायर जनहित याचिका में अगस्त में निर्वाचन आयोग द्वारा जारी दो विज्ञप्तियों को चुनौती दी गई है, जिसमें पूरे भारत में प्रत्एक निर्वाचन क्षेत्र में प्रति मतदान केंद्र मतदाताओं की संख्या बढ़ाने की बात कही गई है। याचिकाकर्ता ने कहा है कि प्रति मतदान केंद्र मतदाताओं की संख्या बढ़ाने का फैसला मनमाना है और यह किसी भी डेटा पर आधारित नहीं है। शीर्ष अदालत ने 24 अक्टूबर को निर्वाचन आयोग को कोई भी नोटिस जारी करने से इनकार कर दिया था। हालांकि, उसने याचिकाकर्ता को आयोग के स्थाई वकील को याचिका की प्रति सौंपने की अनुमति दे दी थी, ताकि इस मुद्दे पर उसका रुख पता चल सके। याचिकाकर्ता की तरफ से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी ने दलील दी कि मतदाताओं की संख्या।,200 से बढ़ाकर।,500 करने से वंचित समूह चुनावी प्रक्रिया से बाहर हो जाएंगे, क्योंकि किसी व्यक्ति को अपने मताधिकार का इस्तेमाल करने के लिए अधिक समय खर्च करना होगा। सिंघवी ने कहा कि मतदान केंद्रों पर लंबी कतारें और प्रतीक्षा समय मतदाताओं को वोट डालने से हतोत्साहित करेगा।हालांकि, पीठ ने कहा कि निर्वाचन आयोग मतदान में अधिक भागीदारी चाहता है और ईवीएम के इस्तेमाल के साथ मतदान में मतपत्रों की तुलना में कम समय लगता है। उसने कहा कि आयोग का इरादा मतदान केंद्रों पर ईवीएम की संख्या बढ़ाकर वोट डालने में लगने वाले समय में कमी लाना है। हालांकि, याचिकाकर्ता ने कहा कि निर्वाचन आयोग का फैसला महाराष्ट्र और झारखंड के बाद 2025 में बिहार और दिल्ली में होने वाले विधानसभा चुनावों के दौरान मतदाताओं को प्रभावित करेगा। उसने कहा कि आम तौर पर मतदान 11 घंटे होता है और एक वोट डालने में लगभग 60 से 90 सेकंड का समय लगता है>

संविधान पर मेरी टिप्पणी को मीडिया ने गलत तरीके से पेश किया : पेजावर मठ के महंत

उडुपी (कर्नाटक)। श्री पेजावर मठ के महंत श्री विश्वप्रसन्न तीर्थ स्वामीजी ने स्पष्ट किया है कि भारतीय संविधान पर उनकी टिप्पणी को मीडिया में गलत तरीके से पेश किया गया। स्वामीजी ने कहा कि उन्होंने कभी संविधान में बदलाव की मांग नहीं की और इसके सिद्धांतों के प्रति अपना सम्मान दोहराया। स्वामीजी श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के न्यासी हैं। स्वामीजी ने रविवार को संवाददाता सम्मेलन में गलत सूचना पर निराशा व्यक्त करते हुए कहा कि इस मुद्दे पर कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की टिप्पणियों ने अनावश्यक भ्रम पैदा किया है। उन्होंने कहा, मैं संविधान का सम्मान करता हूं और इसकी भावना के खिलाफ किसी भी पहल का कभी समर्थन नहीं किया है। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की कर्नाटक इकाई द्वारा 23 नवंबर को बेंगलुरु में आयोजित संत सम्मेलन में स्वामीजी के संबोधन के बाद विवाद उत्पन्न हो गया, जहां उन्होंने कथित तौर पर एक ऐसे संविधान की मांग की जो बहुसंख्यकों के हितों का सम्मान करता हो।

कानपुर देहात में क्रोमियम प्रदूषण तत्काल दूर करने की जरूरतः रिपोर्ट

नई दिल्ली। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) को प्राप्त एक रिपोर्ट में कहा गया है कि उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात और फतेहपुर जिलों में लोग मिट्टी और जल से संबंधित क्रोमियम प्रदूषण का सामना कर रहे हैं जिसे तत्काल दूर करने की जरूरत है। हरित अधिकरण ने इसके पहले एमिकस क्यूरी (अदालत मित्र) से रिपोर्ट मांगी थी। एनजीटी कानपुर देहात के रनिया और कानपुर नगर के राखी मंडी में क्रोमियम युक्त कचरे को वैज्ञानिक रूप से निपटाने में संबंधित अधिकारियों की विफलता के मुद्दे पर सुनवाई कर रहा था।अधिकरण ने कानपुर नगर के जाजमऊ में ठीक से काम नहीं कर रहे कॉमन एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट (सीईटीपी) के माध्यम से सिंचाई नहरों में जहरीले क्रोमियम युक्त औद्योगिक अपशिष्टों को छोड़ने वाली टेनरी द्वारा निरंतर जल प्रदूषण और फतेहपुर जिले के गोधरौली गांव में उद्योगों द्वारा भूजल में क्रोमियम प्रवाहित किए जाने के मुद्दे को एक साथ जोड़ दिया। अदालत मित्र कात्यायनी ने 26 नवंबर की दिनांक वाली एक अंतरिम रिपोर्ट में कहा कि उन्होंने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, उप्र जल निगम और मुख्यमंत्री कार्यालय के अधिकारियों के साथ कानपुर देहात, कानपुर नगर, फतेहपुर और 19 से अधिक अन्य स्थानों का दौरा किया। रिपोर्ट के अनुसार तीनों जिलों में से प्रत्एक के अलग-अलग मुद्दे हैं। उदाहरण के लिए कानपुर नगर में सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी) काम नहीं कर रहा है, जबकि कानपुर देहात और फतेहपुर में कोई एसटीपी ही नहीं है। रिपोर्ट में कहा गया है, इसी तरह, कानपुर देहात और फतेहपुर में मिट्टी और भूजल में क्रोमियम प्रदूषण की समस्या है जिसे तत्काल दूर करने की जरूरत है। इसमें यह भी कहा गया है कि प्रयागराज में आयोजित होने वाले आगामी महाकुंभ को ध्यान में रखते हुए गंगा और पांडु नदियों के प्रदूषण को रोकने के लिए एक अस्थाई कार्य योजना अपनाई जानी चाहिए।

उत्तर प्रदेश सरकार सिलिका रेत खनन इलाकों में विशिष्ट स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराए : एनजीटी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने उत्तर प्रदेश सरकार को उन क्षेत्रों में विशिष्ट स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया करने का निर्देश दिया है, जहां निजी पट्टाधारक सिलिका रेत का खनन कर रहे हैं। अधिकरण शंकरगढ़, परवेजाबाद, लालापुर, बांकीपुर, जनवा और धारा सहित प्रयागराज जिले के कुछ हिस्सों में अवैध सिलिका रेत खनन पर एक याचिका की सुनवाई कर रहा है। याचिका में दावा किया गया है कि खनन की उपयुक्त प्रक्रिया का पालन किए बिना अनधिकृत खनन के कारण लोगों के स्वास्थ्य को गंभीर खतरा पैदा हो रहा है और उन्हें सिलिकोसिस सहित कई बीमारियां हो रही हैं। सिलिकोसिस फेफड़े से जुड़ी बीमारी है जो बड़ी मात्रा में सिलिका धूल के फेफड़े में प्रवेश करने के कारण होती है। एनजीटी अध्यक्ष न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की पीठ ने 29 नवंबर के आदेश में, पर्यावरण मानदंडों का उल्लंघन करने को लेकर 12 निजी पट्टाधारकों को मुआवजा देने का निर्देश दिया। पीठ ने 14 निजी पट्टाधारकों को सिलिका धुलाई संयंत्र में भूजल के अवैध दोहन के लिए जुर्माना भरने का भी आदेश दिया। पीठ में न्यायिक सदस्य न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल और विशेषज्ञ सदस्य ए सेंथिल वेल भी हैं। अधिकरण ने कहा, उत्तर प्रदेश और उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) संबद्ध विभागों के साथ समन्वय कर उन इलाकों में विशिष्ट स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया करने के लिए तत्काल कदम उठाए, जहां सिलिका रेत खानों का संचालन खनन पट्टा धारकों द्वारा किया जा रहा है। अधिकरण ने संबंधित अधिकारियों को पीड़ति श्रमिकों के उपचार एवं रोगों की रोकथाम के लिए आवश्यक चिकित्सा बुनियादी ढांचे की तत्काल व्यवस्था करने का भी निर्देश दिया। उसने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को विस्तृत दिशानिर्देश तैयार करने का भी निर्देश दिया, जिनका पालन संबंधित वैधानिक नियामकों द्वारा सिलिका रेत खनन और सिलिका रेत धुलाई संयंत्रों के लिए अनुमति या सहमति प्रदान करते समय किया जाए।

नक्काशीदार मूर्तियां बनेंगी महाकुंभ का आकर्षण

श्रद्धालुओं का स्वागत करेंगे अर्जुन, गरुड़, नंदी और ऐरावत-योगी सरकार के निर्देश पर 26 चौराहों को विशेष रूप देने की योजना

प्रयागराज। महाकुम्भ में देश विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को इस बार आदिकालीन भारतीय संस्कृति की दिव्यता और अलौकिकता का दर्शन होने जा रहा है। आप चाहे किसी भी परिवहन के माध्यम से प्रयागराज पहुंचें आपके स्वागत में स्वयं अर्जुन गरुड़ नंदी ऐरावत और मां गंगा के साथ ही श्रवण कुमार भी मौजूद रहेंगे। पौराणिक महत्व की ये 26 नक्काशीदार मूर्तियां महाकुम्भ में आने वाले देशी विदेशी श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र बनने जा रही हैं। जिन्हें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर प्रयागराज के 26 प्रमुख चौराहों पर स्थापित करने का काम जोर.जोर से चल रहा है।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप इस बार के महाकुम्भ को दिव्य नव्य और भव्य बनाने की तैयारी चल रही है। इसके तहत पौराणिक एवं भारतीय संस्कृति के महत्व की नक्काशीदार मूर्तियां शहर के प्रमुख चौराहों पर सजाई जा रही हैं। इनमें अर्जुन गरुड़ नंदी गदा के अलावा मां गंगा सहित तमाम ऐसी मूर्तियां है जो श्रद्धालुओं को आकर्षित करेंगी। एसडीएम मेला अभिनव पाठक ने बताया कि इस योजना के तहत योगी सरकार के निर्देश पर 26 चौराहों को विशेष रूप से आकर्षक आकार दिया जा रहा है। इनमें 06 चौराहों पर काम पूरा किया जा चुका है। साथ ही एक सप्ताह के भीतर बाकी 20 चौराहों का काम पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। महाकुम्भ में प्रयागराज के विशेष 26 चौराहों को 26 नक्काशीदार मूर्तियों से सजाने संवारने का काम चल रहा है। इसके तहत डीपीएस चौराहे पर अर्जुन की मूर्तिए एयरपोर्ट चौराहे पर नंदी की प्रतिमा और हर्षवर्धन चौराहे पर आरती करती हुई मां गंगा नाव में सवार दिखेंगी। इसके अलावा फाफामऊ में गदा का प्रदर्शन किया गया है। समुद्र मंथन का घोड़ा भी महाकुम्भ का विशेष आकर्षण बनने जा रहा है। भारत के महान सम्राट समुद्रगुप्त की प्रतिमा विशेष रूप से श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करेगी। इसके अलावा नैनी चौकी चौराहे पर श्रवण कुमार के साथ ही मेजर ध्यान चंद ऐरावत की प्रतिमा भी संवारी जा रही है। वहीं अलोपी बाग में मुनि स्नान देखकर देश विदेश से आने वाले श्रद्धालु दंग रह जाएंगे। महाकुम्भ को लेकर करीब 45 करोड़ श्रद्धालुओं के प्रयागराज आने की उम्मीद की जा रही है।

सुपर डीलक्स होटल जैसी सुविधाओं से लैस होगी टेंट सिटी

प्रयागराज। प्रयागराज महाकुम्भ में आने वाले करोड़ों भक्तों की सुविधाओं को ध्यान में रखकर योगी सरकार महाकुम्भ मेला क्षेत्र के सेक्टर बीस अरैल में दो हजार से ज्यादा स्विस कॉटेज बेस्ड टेंट की स्थापना कर रही है। इन टेंटों की स्थापना उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम लिमिटेड यूपीएसटीडीसी द्वारा किया किया जा रहा है और छह पार्टनर्स के साथ मिलकर विभिन्न टेंट ब्लॉक्स की स्थापना कर रहे हैं। इनमें आगमन कुम्भ कैम्प इंडिया ऋषिकुल कुम्भ कॉटेज कुम्भ विलेज कुम्भ कैनवस व एरा प्रमुख हैं। खास बात यह है कि वर्ल्ड क्लास स्टैंडर्ड्स के अनुसार इन टेंट की स्थापना व संचालन की जाएगी जो फाइव स्टार होटल श्रेणी की सुविधाओं से लैस होंगी। यह सुपर डीलक्स टेंट विला महाराजाए स्विस कॉटेज व डॉर्मेटरी फॉर्मेट में उपलब्ध रहेंगी जिनका प्राइसिंग 1500 से 35 हजार के बीच प्रतिदिन के हिसाब से तय रहेंगी। वहीं डॉर्मेटरी के अलावा चार हजार से आठ हजार का शुल्क अतिरिक्त व्यक्ति के ठहरने पर देना होगा। यूपीएसटीडीसी द्वारा जो टेंट सिटी स्थापित की जा रही है वह सीएम योगी के विजन के अनुरूप तैयार की जा रही है। अनुमान है कि महाकुम्भ 2025 में 75 देशों के 45 करोड़ से अधिक विजिटर्स आ सकते हैं ऐसे में उन्हें वर्ल्ड क्लास अकॉमोडेशन फैसिलिटी उपलब्ध कराने के लिए एक जनवरी से 5 मार्च की समयावधि के बीच इन टेंट्स का संचालन किया जाएगा। इन टेंट को यूपीएसटीडीसी की वेबसाइट और महाकुम्भ ऐप के जरिए भी बुक किया जा सकता है।

बांग्लादेश के सहायक उच्चायोग परिसर में अनधिकृत तरीके से प्रवेश करने की घटना बेहद खेदजनक : भारत

नई दिल्ली। भारत ने अगरतला में बांग्लादेश के सहायक उच्चायोग के परिसर में कुछ लोगों द्वारा अनधिकृत तरीके से प्रवेश किए जाने की घटना को बेहद खेदजनक बताते हुए सोमवार को कहा कि किसी भी स्थिति में वाणिज्य दूतावास की संपत्तियों को निशाना नहीं बनाया जाना चाहिए। विदेश मंत्रालय ने यह टिप्पणी ऐसे समय में की है जब बांग्लादेश में आध्यात्मिक हिंदू नेता चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी तथा वहां अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों के विरोध में हजारों लोगों ने त्रिपुरा की राजधानी अगरतला स्थित बांग्लादेश के सहायक उच्चायोग के पास एक विशाल रैली निकाली थी। विदेश मंत्रालय ने कहा, अगरतला में बांग्लादेश के सहायक उच्चायोग परिसर में आज अनधिकृत तरीके से प्रवेश करने की घटना अत्यंत खेदजनक है। ऐसी जानकारी मिली कि 50 से अधिक प्रदर्शनकारियों ने अगरतला स्थित बांग्लादेशी उच्चायोग परिसर में कथित तौर पर अनधिकृत तरीके से प्रवेश किया, जिससे परिसर में अधिकारियों में चिंता उत्पन्न हो गई। ऐसा समझा जाता है कि नई दिल्ली स्थित बांग्लादेश उच्चायोग अगरतला स्थित सहायक उच्चायोग में अनधिकृत तरीके से प्रवेश किए जाने की घटना को लेकर प्रवेश दर्ज करा रहा है। विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि सरकार नई दिल्ली में बांग्लादेश उच्चायोग और भारत में देश के अन्य मिशन की सुरक्षा बढ़ाने के लिए कार्वाई कर रही है। उसने कहा, किसी भी परिस्थिति में राजनयिक और वाणिज्य दूतावास की संपत्तियों को निशाना नहीं बनाया जाना चाहिए। उसने कहा, सरकार नई दिल्ली स्थित बांग्लादेश उच्चायोग और देश में उसके उपासहायक उच्चायोगों की सुरक्षा-व्यवस्था बढ़ाए जाने के लिए कार्वाई कर रही है। भारत ने बांग्लादेश में उग्र बयानबाजी और हिंसा की बढ़ती घटनाओं पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए शुक्रवार को कहा था कि अंतरिम सरकार को सभी अल्पसंख्यकों की रक्षा की अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। भारत ने यह भी उम्मीद जताई थी कि बांग्लादेश में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार हिंदू नेता चिन्मय कृष्ण दास से संबंधित मामले को न्यायसंगत, निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से निपटाया जाएगा।

भाजपा ने विधायक बसनगौड़ा पाटिल को नोटिस दिया

बेंगलुरु।(भाषा) भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की केंद्रीय अनुशासन समिति ने एदियुरप्पा के कटु आलोचक माने जाने वाले विजयपुरा के विधायक बसनगौड़ा पाटिल यतनाल को प्रदेश पार्टी नेतृत्व के खिलाफ लगातार तीखी टिप्पणी करने को लेकर कारण बताओ नोटिस दिया है और उनसे 10 दिन के भीतर जवाब देने को कहा है। कुछ दिन पहले ही यतनाल ने प्रदेश नेतृत्व की अनुमति के बगैर ही एक माह तक चलने वाला वक्फ विरोधी मार्च शुरू किया। नोटिस पर प्रतिक्रिया देते हुए यतनाल ने कहा कि हिंदुत्व के लिए लड़ाई और वंशवादी राजनीति के खिलाफ उनकी प्रतिबद्धता जारी रहेगी। केंद्रीय अनुशासन समिति के सदस्य सचिव ओम पाठक ने एक दिसंबर को भेजे कारण बताओ नोटिस में कहा, प्रदेश पार्टी नेतृत्व के खिलाफ आपके तीखे हमले, पार्टी के निर्देशों की अवहेलना और राजनीतिक तथा सार्वजनिक महत्व के सभी मामलों पर पार्टी के आधिकारिक रुख के विपरीत सार्वजनिक बयानबाजी तथा रुख अपनाने की खबरें मीडिया के साथ-साथ विभिन्न पार्टी मंचों पर भी सामने आई हैं। यह नोटिस मीडिया के साथ सोमवार को साझा किया गया। पार्टी ने बताया कि अगर यतनाल निर्धारित समय के भीतर जवाब नहीं दे पाते हैं तो वह इस मुद्दे पर अंतिम निर्णय लेगी। यतनाल पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस. एदियुरप्पा और उनके परिवार, खासकर भाजपा की कर्नाटक इकाई के प्रमुख बी.वाई. विजएंद्र के कड़े आलोचक माने जाते हैं। वह अक्सर उन पर निशाना साधते हैं और भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व से मांग करते रहते हैं कि कांग्रेस की परिवारवादी राजनीति के खिलाफ प्रभावी लड़ाई के लिए एदियुरप्पा की वंशवादी राजनीति पर लगाम लगाई जाए। पाठक ने कहा, यह गंभीर चिंता की बात है कि अतीत में कई बार कारण बताओ नोटिस जारी किए जाने और अच्छे आचरण के आपके आश्वासन के बावजूद अनुशासनहीनता बेरोकटोक जारी है।

पार्टी में उनकी वरिष्ठता को ध्यान में रखते हुए पाठक ने कहा कि केंद्रीय अनुशासन समिति ने अतीत में उनके द्वारा दिए गए स्पष्टीकरणों पर नरम रुख अपनाया है। उन्होंने कहा, आपने पार्टी नेताओं के खिलाफ झूठे और परोक्ष आरोप लगाए हैं। आपने राजनीतिक और सार्वजनिक महत्व के मामलों पर पार्टी के आधिकारिक रुख की अवहेलना की है जो भाजपा के पार्टी नियम का गंभीर उल्लंघन है। पाठक ने यतनाल से कहा, कृपया कारण बताएं कि पार्टी को क्यों नहीं आपके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्वाई करनी चाहिए? आपका स्पष्टीकरण इस नोटिस मिलने के दस दिन के भीतर पेश किया जाना चाहिए। निर्धारित समय में स्पष्टीकरण नहीं मिलने की स्थिति में केंद्रीय अनुशासन समिति यह मान सकती है कि यतनाल के पास अपने जवाब में कहने को कुछ नहीं है और तब वह इस मामले में अंतिम निर्णय ले सकती है।यतनाल ने विधायक रमेश जरकीहोली, अरविंद लिंबावली, महेश कुमाथल्ली, मधु बंगारप्पा सहित भाजपा के कुछ वरिष्ठ नेताओं के साथ मिलकर बीदर से चामराजनगर तक वक्फ विरोधी मार्च निकाला है। यह मार्च 25 नवंबर को शुरू हुआ और 25 दिसंबर को समाप्त होगा। इस मार्च को भाजपा में विजएंद्र के विरोधी गुट के शक्ति प्रदर्शन के रूप में देखा जा रहा है। यतनाल ने कहा कि यह मार्च किसी व्यक्ति के खिलाफ नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य किसानों, सनातन धर्म और हिंदुओं को राज्य वक्फ बोर्ड द्वारा जारी बेदखली नोटिस से बचाना है। इस नोटिस पर प्रतिक्रिया देते हुए यतनाल ने कहा कि हिंदुत्व की लड़ाई और वंशवादी राजनीति के खिलाफ उनकी प्रतिबद्धता जारी रहेगी।

बांग्लादेश में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन तैनात करने और संसद में केंद्र के बयान की मांग की ममता ने

कोलकाता। बांग्लादेश की वर्तमान स्थिति से चिंतित पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को केंद्र से इस पड़ोसी देश में शांति मिशन तैनात करने के लिए संयुक्त राष्ट्र से संपर्क करने तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से वहां से सताए गए भारतीयो को वापस लाने के लिए हस्तक्षेप करने की अपील की। बनर्जी ने यह भी मांग की कि विदेश मंत्री को बांग्लादेश की वर्तमान स्थिति पर भारत के रुख से संसद को अवगत कराना चाहिए। उन्होंने कहा, अगर प्रधानमंत्री मोदी खुद यह काम करने के लिए उपलब्ध नही होते है, तो विदेश मंत्री का बयान वर्तमान शीतकालीन सत्र के दौरान आना चाहिए। विधानसभा को संबोधित करते हुए बनर्जी ने कहा कि दोनो देशो के बीच के द्विपक्षीय मुद्दो पर टिप्पणी करना उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर है, क्योंकि बंगाल देश की संघीय व्यवस्था में केवल एक राज्य है। उन्होने कहा, हालांकि, हाल के घटनाक्रमों और जिन लोगों के बांग्लादेश में रिश्तेदार और ठिकाने है।

पेज 1 का शेष

संविधान..

संकट को उठाएगी। हालांकि, सरकार के सूत्रों ने कहा कि कांग्रेस को अदाणी विवाद पर विशेष चर्चा की अनुमति नहीं दी जाएगी, लेकिन अगर विपक्षी सदस्य किसी भी बहस के बीच में इसके बारे में संकेत देते हैं तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।

एनसीआर...

के बीच निर्माण गतिविधियों के रुकने से प्रभावित हुई है। दिल्ली-एनसीआर को हर साल अक्टूबर से दिसंबर के बीच ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ता है, इस पर गौर करते हुए पीठ ने वायु प्रदूषण के सभी पहलुओं पर विचार करने और स्थायी समाधान खोजने का प्रस्ताव रखा। हितधारकों के बीच समन्वय की कमी का जिक्र करते हुए पीठ ने प्रतिबंधों को लागू करने में दिल्ली सरकार, दिल्ली पुलिस, दिल्ली नगर निगम और प्रदूषण नियंत्रण समिति सहित हितधारकों के बीच 'समन्वय की पूर्ण कमी' को उजागर किया और प्रतिबंधों में ढील देने पर फैसला करने से पहले बृहस्पतिवार तक इंतजार करने का फैसला किया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वायु प्रदूषण के स्तर में वास्तव में लगातार गिरावट का रुझान है। पीठ ने कहा, 'हम जो प्रस्ताव देते हैं, वह यह है कि हम आपके सुझावों पर गौर करेंगे, लेकिन आज हम तब तक ढील नहीं देंगे जब तक आप हमें स्पष्ट गिरावट का रुझान नहीं दिखाते।' ऐसे ही एक कोर्ट कमिश्नर की दुर्दशा का जिक्र करते हुए पीठ ने पुलिस से अपनी कार्रवाई की रिपोर्ट दाखिल करने को कहा। पीठ ने कहा, 'हम बार के सदस्यों को जोखिम में नहीं पड़ने दे सकते, क्योंकि रिपोर्ट से पता चलता है कि उनमें से कुछ को धमकियाँ दी गई हैं।' पीठ ने पूछा कि क्या कोर्ट कमिश्नर काम जारी रखना चाहते हैं और जो लोग काम जारी रखना चाहते हैं, वे दिल्ली पुलिस द्वारा नियुक्त नोडल अधिकारी को ईमेल भेजें। शीर्ष अदालत ने निर्देश दिया कि कोर्ट कमिश्नरों को उनके कर्तव्यों का निर्वहन करते समय सशस्त्र गार्ड सहित पुलिसकर्मी दिए जाएँ। पीठ ने कहा, 'हम यह स्पष्ट करते हैं कि यह सुनिश्चित करना दिल्ली पुलिस की जिम्मेदारी है कि कोर्ट कमिश्नर के रूप में काम करने वाले बार के सदस्यों को पर्याप्त सुरक्षा मिले।' कोर्ट कमिश्नर जतिन कुमार और सावी नागपाल ने झारोदा टोल पर उल्लंघन की सूचना दी, जहाँ निर्माण और विध्वंस (सीएंडडी) सामग्री ले जाने वाला एक बीएस-फोर डीजल ट्रक बिना वैध दस्तावेज़ के दिल्ली में प्रवेश कर गया।

महाराष्ट्र...

अनिच्छुक हैं। हालांकि, शिंदे ने कथित तौर पर फडणवीस के मुख्यमंत्री रहते उपमुख्यमंत्री का पद स्वीकार करने के लिए गृह विभाग को एक पूर्व शर्त बना दिया है।

सेंथिल..

दिसंबर को तय की।पीठ ने उल्लेख किया कि शिकायतकर्ताओं में से एक के विद्या कुमार द्वारा दायर वर्तमान याचिका इस आशंका पर आधारित थी कि जमानत दिए जाने के तुरंत बाद बालाजी को कैबिनेट मंत्री नियुक्त कर दिया गया था।

एक दुखद...

चालक मंजेगौड़ा को मामूली चोटें आईं। पुलिस ने बताया कि आईपीएस अधिकारी ने हाल ही में मैसूर में कर्नाटक पुलिस अकादमी में अपना चार सप्ताह का प्रशिक्षण पूरा किया था। उनके पिता एक उप-विभागीय मजिस्ट्रेट हैं।'

पाक नेवी.....

भारतीय नौसेना इस पर कड़ी नजर रख रही है। चार दिसंबर को नौसेना दिवस से पहले एक वार्षिक सम्मेलन में ये दावे करते हुए एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि चीन और पाकिस्तान की नौसेनाओं की गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखी जा रही है। उन्होंने कहा कि पिछले साल एक चीनी पनडुब्बी कराची आई थी और वापस लौट गई थी और भारत ने उसका पता लगा लिया था। इसके अलावा, भारतीय नौसेना रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में चीनी युद्धपोतों और अनुसंधान जहाजों की सभी गतिविधियों से अच्छी तरह वाकिफ है। एडमिरल त्रिपाठी ने कहा, 'हम पीएलए नौसेना, उनके युद्धपोतों और उनके अनुसंधान जहाजों सहित अतिरिक्त क्षेत्रीय बलों पर नज़र रख रहे हैं और जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं और कहाँ हैं।' चल रहे आधुनिकीकरण के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि भारत अगले महीने 26 नौसेना वैरिएंट राफेल लड़ाकू जेट और तीन अतिरिक्त स्कॉर्पीन पनडुब्बियों की खरीद के लिए अलग-अलग अनुबंधों पर हस्ताक्षर करने की उम्मीद कर रहा है। चार दिसंबर को नौसेना दिवस से पहले एक मीडिया ब्रीफिंग में एडमिरल त्रिपाठी ने यह भी कहा कि सरकार ने दो एसएसएन (परमाणु ऊर्जा चालित पनडुब्बियों) के निर्माण को मंजूरी दे दी है और ऐसी कुल छह नावें बनाने की योजना है। नौसेना प्रमुख ने कहा कि पहला एसएसएन 2036-37 तक और दूसरा 2038-39 तक तैयार हो जाएगा।

दिल्ली एयर...

से प्रभावित यात्रियों के दस्तावेजों का सत्यापन करेंगे। डायल ने कहा, यह व्यवस्था यात्रियों को सामान्य प्रक्रिया के माध्यम से सुरक्षा जांच से गुजरने से बचाएगी, जिसमें ऐसे मामलों में उतरने के बाद, यात्रियों को आगमन पर ले जाया जाता है और सुरक्षा होल्ड क्षेत्र में वापस लाने से पहले घरेलू या अंतर्राष्ट्रीय स्थानांतरण क्षेत्रों के माध्यम से प्रक्रिया की जाती है। ऐसे यात्रियों को सीधे रिवर्स एंट्री पॉइंट पर लाने से उतरने और बोर्डिंग में लगने वाला समय काफी कम हो जाता है - लगभग 2.30 घंटे से कुछ ही मिनट रह जाते हैं। सुरक्षा-जांच नियमों में प्रस्तावित बदलावों का उद्देश्य उड़ान स्लॉट को अनुकूलित करना और यात्रियों की असुविधा को कम करना है। दिल्ली में हर साल सर्दियों में कोहरे की समस्या, खास तौर पर दिसंबर और जनवरी के दौरान, यात्रियों के लिए काफी असुविधा का कारण बनती है और उड़ान संचालन के महत्वपूर्ण घंटे बर्बाद होते हैं।

पार्किंग...

ही जमानत पर रिहा कर दिया गया। जमानत पर रिहा होने के दो दिन बाद ही भसीन इलाके में आया और सिंह को गाली दी और धमकाया। सिंह ने कहा, हमने पुलिस से शिकायत की। हालांकि, वह करीब एक महीने तक वहां से भागता रहा। वापस लौटने पर उसने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उसे गिरफ्तार किया गया, लेकिन फिर से जमानत मिल गई। 20 अक्टूबर को, भसीन कथित तौर पर नशे की हालत में इलाके में आया और बंदूक लहराने लगा। सिंह ने कहा, जब उसे पता चला कि सीसीटीवी निगरानी है, तो उसने अपनी बंदूक अंदर रख ली। हालांकि, उसने आधी रात को मेरे घर के सामने पेशाब किया और मुझे गालियाँ दीं। उन्होंने कहा कि जब पुलिस आई तो वह वहां से भाग गया। 5 नवंबर को भसीन को पुलिस ने गिरफ्तार किया था, लेकिन बाद में उन्हें जमानत मिल गई। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि 29 नवंबर को सिंह ने भसीन के खिलाफ उनके घर के बाहर खड़ी मारुति सुजुकी सियाज को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराई थी। अधिकारी ने बताया कि सीसीटीवी फुटेज की जांच करने पर भसीन को सियाज का रियर व्यू मिरर घुमाते हुए और अपनी महिंद्रा थार को बीच सड़क पर पार्क करके भागते हुए देखा गया। शिकायत पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने थार को जब्त कर लिया और जांच शुरू कर दी गई। अधिकारी ने कहा, 30 नवंबर और 1 दिसंबर की रात को आरोपी पेंट थिनर लेकर आया और सिंह की कार के बोनट में आग लगा दी। यह हरकत सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई और भसीन को पकड़ने के लिए एक टीम बनाई गई। पुलिस ने रविवार को उसे अमेठी में ट्रैक किया। आरोपी अपनी होंडा अमेज कार में अमेठी भाग गया था। अधिकारी ने कहा कि उसे वापस दिल्ली लाया गया है और उससे पूछताछ की जा रही है। पुलिस ने कहा कि मामले में आगे की जांच चल रही है। हालांकि, सिंह का कहना है कि उसे अपनी जान का डर है, अगर मैं उस दिन मौजूद होता, तो वह मुझे भी जला देता। यह तब हो रहा है जब मैंने एसएचओ को उसके बारे में कई बार सूचित किया है और उसे कुछ घंटों में जमानत मिल गई है। क्या होगा अगर वह इस बार रिहा होने के बाद मुझे मार डाले? हालांकि, पार्किंग से जुड़े मामूली विवाद से बढ़ा यह मामला सिर्फ़ लाजपत नगर का ही नहीं है। सोशल मीडिया पर वायरल हुई एक घटना में, दक्षिणी दिल्ली की अमर कॉलोनी में पार्किंग स्पॉट को लेकर हुए झगड़े में एक महिला और उसके पति पर उनके पड़ोसियों ने हमला कर दिया। वायरल वीडियो में आरोपी दलजीत सिंह और उसके चार परिवार के सदस्य दंपत्ति को लकड़ी के डंडे से पीटते और गाली-गलौज करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

घटती जनसंख्या वृद्धि चिंता का विषय : चिराग

आरएसएस प्रमुख की टिप्पणी से उपजे विवाद पर दी प्रतिक्रिया

भाषा। पटना

केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत के एक बयान को लेकर उनका बचाव करने के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के रुख से सोमवार को सहमति जताई। भागवत ने कथित रूप कहा था कि प्रत्येक महिला को कम से कम तीन बच्चों को जन्म देना चाहिए। उनके इस बयान से विवाद पैदा हो गया है। चिराग यहां लोक जनशक्ति पार्टी (राम विलास) के कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। पत्रकारों ने भागवत की टिप्पणी तथा भाजपा की इस दलील के बारे में पूछा था कि भागवत ने सिर्फ जनसंख्या में गिरावट को लेकर चिंता जाहिर की थी। चिराग ने कहा, यह तथ्य है कि बहुत कम प्रजनन दर किसी प्रजाति के विलुप्त होने का कारण बन सकती है। उन्होंने (भागवत ने) इस पर चिंता व्यक्त की है। देश के कई हिस्सों में प्रजनन दर 2.1 से नीचे गिर गई है, जिस पर बहस होनी चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे अतीत में हुआ था, जब जनसंख्या वृद्धि की विस्फोटक दर के कारण परिवार नियोजन के उपाय करने पड़े थे। चिराग से उस विवाद के बारे में भी पूछा गया, जो राजस्थान की एक अदालत द्वारा उस याचिका को स्वीकार करने के बाद पैदा हुआ है, जिसमें आरोप लगाया गया था कि अजमेर में प्रसिद्ध सूफी दरगाह एक शिव मंदिर की जगह पर बनाई गई थी। जवाब में उन्होंने कहा, अगर झूठे दावे किए जा रहे हैं, तो किसी को भी डरने की जरूरत नहीं है, क्योंकि अदालत इसका ध्यान रखेगी। लेकिन, अगर कोई कड़वा सच है, तो इसे भी जरूर सामने लाया जाना चाहिए। जब चिराग से कहा गया कि आगरा के विश्व प्रसिद्ध ताज महल के बारे में भी इस तरह के दावे किए जा रहे हैं, तो जवाब में उन्होंने कहा, मैं ऐसे सभी दावों पर टिप्पणी नहीं कर सकता, क्योंकि मैं कोई जांच एजेंसी नहीं हूं। लेकिन हम निश्चिंत हो सकते हैं कि ऐसे सभी दावे, एक बार उचित प्राधिकारी के समक्ष किए जाने पर, गहन जांच के बाद ही स्वीकार या अस्वीकार किए जाएंगे। हाजीपुर से सांसद चिराग विधान परिषद उपचुनाव के लिए बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के जनता दल (यूनाइटेड) के उम्मीदवार अभिषेक झा के साथ संवाददाताओं से मुखातिब थे। तिरहुत स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के लिए उपचुनाव जदयू के वरिष्ठ नेता देवेश चंद्र ठाकुर के लोकसभा के लिए चुने जाने के बाद कराया जा रहा है। इस उपचुनाव में बहुकोणीय मुकाबला देखा जा रहा है। एक प्रमुख दावेदार चिराग के पूर्व सहयोगी राजेश कुमार रौशन हैं, जिन्होंने निर्दलीय के रूप में मैदान में कदम रखा है। अक्सर 2020 के विधानसभा चुनाव में जदयू की हार के लिए दोषी ठहराया जाते रहे चिराग ने कहा, मैंने अपने दिवंगत पिता रामविलास पासवान से हमेशा भरोसेमंद सहयोगी बने रहने का गुण सीखा है।

दो हजार के ज्यादातर नोट वापस, 6,839 करोड़ मूल्य के नोट अभी भी बाहर

भाषा। मुंबई

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने मंगलवार को कहा कि 2,000 रुपए मूल्य वर्ग के 98.08 प्रतिशत नोट बैंकों में वापस आ चुके हैं। अब चलन से हटाए गए केवल 6,839 करोड़ रुपए मूल्य के नोट ही लोगों के पास हैं। आरबीआई ने पिछले साल 19 मई को 2,000 रुपए मूल्य वर्ग के बैंक नोट को चलन से हटाने की घोषणा की थी। केंद्रीय बैंक ने एक बयान में कहा कि 19 मई, 2023 को चलन में मौजूद 2,000 रुपए के नोट का कुल मूल्य 3.56 लाख करोड़ रुपए था। यह राशि 29 नवंबर, 2024 को घटकर 6,839 करोड़ रुपए रह गई। आरबीआई ने कहा, इस तरह 19 मई, 2023 तक चलन में मौजूद 2,000 रुपए के 98.08 प्रतिशत बैंक नोट अब वापस आ चुके हैं। दो हजार रुपए के बैंक नोट को जमा करने या बदलने की सुविधा सात अक्टूबर, 2023 तक देश की सभी बैंक शाखाओं में उपलब्ध थी। हालांकि इन नोट को बदलने की सुविधा रिजर्व बैंक के 19 निर्गम कार्यालयों में अब भी उपलब्ध है। आरबीआई के निर्गम कार्यालय नौ अक्टूबर, 2023 से लोगों और इकाइयों से उनके बैंक खातों में जमा करने के लिए 2,000 रुपए के बैंक नोट स्वीकार कर रहे हैं। इसके अलावा, लोग देश के भीतर भारतीय डाक से भी 2,000 रुपए के नोट आरबीआई के किसी भी निर्गम कार्यालय में भेज सकते हैं। यह पैसा उनके बैंक खाते में जमा हो जाता है। बैंक नोटों को जमााविनिमय करने वाले 19 आरबीआई कार्यालय अहमदाबाद, बेंगलुरु, बेलापुर, भोपाल, भुवनेश्वर, चंडीगढ़, चेन्नई, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, जम्मू, कानपुर, कोलकाता, लखनऊ मुंबई, नागपुर, नई दिल्ली, पटना और तिरुवनंतपुरम में हैं। उल्लेखनीय है कि नवंबर, 2016 में।,000 रुपए और 500 रुपए के बैंक नोट को चलन से हटाने के बाद 2,000 रुपए के बैंक नोट जारी किए गए थे।

हिंदू आध्यात्मिक नेता की रिहाई को लेकर साधु-संतों ने सीमा पर विरोध प्रदर्शन किया

कोलकाता। समूचे पश्चिम बंगाल से।,000 से अधिक साधु-संत बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हमलों के विरोध में और पड़ोसी देश में गिरफ्तार आध्यात्मिक नेता चिन्मय कृष्ण दास की रिहाई की मांग को लेकर सोमवार को उत्तर 24 परगना में पेट्रापोल सीमा पर एक प्रदर्शन में भाग ले रहे है। अखिल भारतीय संत समिति के बैनर तले साधु संत सुबह से ही पेट्रापोल सीमा चौकी से करीब 800 मीटर दूर धरना स्थल पर पहुंचने लगे। विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पश्चिम बंगाल इकाई के नेताओं ने बांग्लादेश मुद्दे को लेकर बुधवार को पेट्रापोल सीमा पर प्रदर्शन कार्यक्रम की भी घोषणा की है। हिंदू जागरण मंच और अन्य धार्मिक समूहों के सदस्यों के भी इस विरोध प्रदर्शन में शामिल होने की संभावना है। पेट्रापोल सीमा पर पहुंचने के बाद एक भिक्षु ने कहा, हम मानव श्रृंखला बनाकर भारत सरकार और बांग्लादेश सरकार को शांति का संदेश देने के लिए विरोध प्रदर्शन करेंगे तथा बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ अत्याचारों को तत्काल रोकने की मांग करेंगे।

क्रिप्टो जागरूकता के लिए 10 भारतीय भाषाओं में व्हाइटपेपर

मुंबई। भारत के सबसे बड़े क्रिप्टो ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म, कॉइनस्विच, ने बिटकॉइन (बीटीसी) व्हाइटपेपर का अनुवाद 10 क्षेत्रीय भाषाओं में करके क्रिप्टो ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने की पहल की है। इस कदम का उद्देश्य लोगों को उनकी मातृभाषा में बिटकॉइन के मूलभूत सिद्धांतों से परिचित कराना और उन्हें सशक्त बनाना है।इस पहल पर बात करते हुए, कॉइनस्विच के बिज़नेस हेड, बालाजी श्रीहरि ने कहा, बिटकॉइन व्हाइटपेपर क्रिप्टो क्रांति की नींव है। इसे क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराकर, हमारा लक्ष्य जागरूकता बढ़ाना, उपयोगकर्ताओं को ज्ञान से सशक्त बनाना और क्रिप्टो से जुड़े मिथकों को दूर करना है। यह पहल भारत को क्रिप्टो-रेडी बनाने की हमारी सतत कोशिश का हिस्सा है, ताकि भाषा व्यापक स्वीकृति में बाधा न बने।

डेंगू और मलेरिया के संक्रमण पर बीमा

मुंबई। फोनपे ने अपने प्लैटफॉर्म पर मात्र59 वार्षिक की दर से शुरू होने वाले नए डेंगू और मलेरिया इंश्योरेंस प्लान के लॉन्च की घोषणा की। यह किफायती हेल्थ कवरेज प्लान, वेक्टर और वायु जनित बीमारियों से होने वाले मेडिकल खर्चों के लिए साल भर का 1 लाख तक का कवरेज प्रदान करता है। यह इंश्योरेंस कवर यह भी सुनिश्चित करता है कि खासकर टियर 2 और टियर 3 शहरों के यूजर, पूरे साल ऐसी बीमारियों के कारण होने वाले अप्रत्याशित चिकित्सा खर्चों से वित्तीय रूप से सुरक्षित रहें। यह प्लान फोनपे यूजर को मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, फाइलेरिया, जापानी एन्सेफलाइटिस, स्वाइन फ्लू, बर्ड फ्लू, टाइफाइड, पल्मोनरी ट्यूबरक्लोसिस और मेनिनजाइटिस सहित 10 वेक्टर-जनित और वायु-जनित बीमारियों के खिलाफ व्यापक कवरेज प्रदान करती है। इसके लॉन्च पर, फोनपे इंश्योरेंस ब्रोकिंग सर्विसेज के सीईओ विशाल गुप्ता ने कहा कि फोनपे में, हम सभी के लिए बीमा को आसान और किफायती बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस प्रोडक्ट का लॉन्च हमारे यूजर के लिए पूरे वर्ष व्यापक कवरेज प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इस बीमा के जरिए हमारा उद्देश्य है कि हम अपने यूजर को उनके स्वास्थ्य से जुड़ी किसी समस्या का सामना करने के लिए आर्थिक रूप से सशक्त बनाना। हम चाहते हैं कि अपनी डिजिटल क्षमता के जरिए बीमा सुविधाओं से अछूते भारतीयों तक यह सुविधा पहुँचें और लाखों भारतीय लाभ लें सके।

सरकार ने घरेलू कच्चे तेल, पेट्रोल-डीजल निर्यात पर अप्रत्याशित लाभ कर को हटाया

नई दिल्ली। सरकार ने कच्चे तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में आई गिरावट के बीच घरेलू स्तर पर उत्पादित कच्चे तेल और विमानन ईंधन (एटीएफ), डीजल एवं पेट्रोल के निर्यात पर 30 महीने पुराना अप्रत्याशित लाभ कर सोमवार को खत्म कर दिया। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने राज्य सभा में इस आशय की एक अधिसूचना पेश की। इसमें सार्वजनिक क्षेत्र की ओएनजीसी जैसी कंपनियों द्वारा उत्पादित कच्चे तेल और रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड जैसी कंपनियों द्वारा किए गए ईंधन के निर्यात पर लगने वाले शुल्क को खत्म कर दिया गया है। अधिसूचना ने इस कर का प्रावधान करने वाले 30 जून, 2022 के आदेश को रद्द कर दिया है। इस आदेश में कच्चे तेल के घरेलू उत्पादन और विमानन ईंधन, डीजल और पेट्रोल के निर्यात पर विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लगाया गया था। इसके साथ ही पेट्रोल और डीजल के निर्यात पर लगाया गया सड़क और बुनियादी ढांचा उपकर (आरआईसी) भी वापस ले लिया गया है। सरकार ने पहली बार एक जुलाई, 2022 को अप्रत्याशित लाभ कर लगाया था। इस तरह वह उन देशों में शामिल हो गया था जो पेट्रोलियम कंपनियों को होने वाले असाधारण लाभ पर कर लगाते हैं। उस समय पेट्रोल और एटीएफ पर छह रुपए प्रति लीटर और डीजल पर 13 रुपए प्रति लीटर का निर्यात शुल्क लगाया गया था। इसके साथ घरेलू कच्चे तेल के उत्पादन पर 23,250 रुपए प्रति टन का अप्रत्याशित लाभ कर भी लगाया गया था। सरकार ने यह कर लगाने के पहले वर्ष में शुल्क से लगभग 25,000 करोड़ रुपए, 2023-24 में 13,000 करोड़ रुपए और चालू वित्त वर्ष में 6,000 करोड़ रुपए जुटाए थे। इस कर प्रावधान की हर पखवाड़े समीक्षा कर सरकार दरों में संशोधन करती थी। लेकिन अब घरेलू स्तर पर उत्पादित कच्चे तेल और ईंधन निर्यात दोनों पर ही शुल्क समाप्त कर दिया गया है। कर को खत्म करने का फैसला अंतरराष्ट्रीय तेल कीमतों में नरमी के बाद लिया गया है। भारत द्वारा आयात किए जाने वाले कच्चे तेल का औसत मूल्य नवंबर में 73.02 डॉलर प्रति बैरल था, जो अक्टूबर के 75.12 डॉलर प्रति बैरल से कम है। इस साल अप्रैल में औसत आयात मूल्य लगभग 90 डॉलर प्रति बैरल था।

पीएम मोदी ने मंत्रिमंडल के सहयोगियों के साथ देखी फिल्म द साबरमती रिपोर्ट

भाषा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को अपने मंत्रिमंडल के सहयोगियों और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसदों के साथ फल्म द साबरमती रिपोर्ट देखी। प्रधानमंत्री ने संसद के पुस्तकालय भवन स्थित बालयोगी सभागार में विक्रांत मैसी अभिनीत यह फिल्म देखी।दिग्गज अभिनेता जितेंद्र और राशि खन्ना सहित कुछ अन्य कलाकारों ने भी फिल्म देखी और फिर संवाददाताओं को बताया कि मोदी ने उन्हें बताया कि यह प्रधानमंत्री बनने के बाद पहली फिल्म है, जो उन्होंने देखी है।मोदी के साथ केंद्रीय मंत्री अमित शाह, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी और हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा प्रमुख जीतन राम मांझी समेत अन्य नेता मौजूद थे। धीरज सरना द्वारा निर्देशित इस फिल्म में 27 फरवरी, 2002 को गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन में आग लगने की घटना के पीछे की सच्चाई को उजागर करने का दावा किया गया है, जिसमें एक धार्मिक समारोह में भाग लेने के बाद अयोध्या से लौट रहे 59 श्रद्धालुओं की मौत हो गई थी। पन्द्रह नवंबर को रिलीज हुई द साबरमती रिपोर्ट में मैसी के अलावा राशि खन्ना और रिद्धि डोगरा मुख्य भूमिका में हैं। फिल्म में मुख्य किरदार निभाने वाले मैसी ने कहा कि मोदी के साथ फिल्म देखने का अनुभव अलग रहा, जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उन्होंने अपनी खुशी जाहिर की और लोगों से फिल्म देखने की अपील की।उन्होंने कहा कि यह अनुभव उनके करियर का एक महत्वपूर्ण क्षण रहा।फिल्म देखने के बाद एक्स पर एक पोस्ट में मोदी ने फिल्म के निर्माताओं के प्रयासों की सराहना की।जितेंद्र ने संवाददाताओं से कहा कि यह पहली बार है, जब उन्होंने बेटी एकता कपूर के कारण प्रधानमंत्री के साथ फिल्म देखी है।अपने समय के हिंदी फिल्म जगत के प्रमुख अभिनेताओं में से एक रहे जितेंद्र ने कहा, उन्होंने (मोदी) मुझसे कहा कि यह प्रधानमंत्री बनने के बाद उनके द्वारा देखी गई पहली फिल्म है।अभिनेत्री राशि खन्ना ने भी इसी तरह की टिप्पणी की और अनुभव पर खुशी व्यक्त की।सत्तारूढ़ भाजपा ने सक्रियता से इस फिल्म का प्रचार किया है और कई राज्य सरकारों ने इसे कर-मुक्त किया। घटना के समय मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे, जिसके बाद सांप्रदायिक दंगे हुए और राज्य पुलिस ने ट्रेन के कुछ डिब्बों में आग लगाने के लिए मुस्लिम भीड़ को दोषी ठहराया था।पुलिस द्वारा चार्जशीट किए गए कई आरोपियों को बाद में अदालतों में दोषी ठहराया गया था।इस घटना से बड़ा राजनीतिक विवाद पैदा हो गया था, क्योंकि कांग्रेस के सहयोगी एवं तत्कालीन रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव द्वारा गठित जांच आयोग ने दावा किया था कि आग एक दुर्घटना थी।

कर संग्रह में दखलंदाजी कम करने का प्रयास किया जाना चाहिए : राष्ट्रपति मुर्मू

भाषा। नई दिल्ली

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को कहा कि कर संग्रह में दखलंदाजी की संभावना घटाने के प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने इस प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के अधिक इस्तेमाल की आवश्यकता को रेखांकित किया। राष्ट्रपति भवन पहुंचे भारतीय राजस्व सेवा (सीमा शुल्क और अप्रत्यक्ष कर) के प्रशिक्षु अधिकारियों को संबोधित करते हुए मुर्मू ने कहा कि कर संग्रह के क्षेत्र में नए विचार और समाधानलाने की जिम्मेदारी युवा अधिकारियों पर है। उन्होंने कहा, कराधान न केवल देश का राजस्व बढ़ाने का जरिया है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए भी अहम है। नागरिकों द्वारा चुकाए गए कर का इस्तेमाल देश और उसके लोगों के विकास के लिए किया जाता है। राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी एक बयान के मुताबिक, मुर्मू ने प्रशिक्षु अधिकारियों से कहा कि अगर वे अपना काम समर्पण और लगन से करेंगे, तो देश के विकास में बड़ा योगदान दे सकेंगे। उन्होंने कहा, इस नए और गतिशील युग में कर संग्रह में हस्तक्षेप घटाने और प्रौद्योगिकी का अधिक इस्तेमाल करने का प्रयास किया जाना चाहिए। मुर्मू ने कहा कि आईआरएस (सीमा शुल्क और अप्रत्यक्ष कर) हमारी अर्थव्यवस्था को एक समान कर प्रणाली और साझा प्रशासनिक मूल्यों के जरिए जोड़ता है। उन्होंने कहा कि यह सेवा देश के कर प्रशासन में एकरूपता को बढ़ावा देती है।

आईएमडी ने हल्की सर्दी और कम दिन शीतलहर चलने का अनुमान जताया

भाषा। नई दिल्ली

मौसम विभाग ने सोमवार को कहा कि भारत में हल्की सर्दी पड़ने के साथ शीतलहर वाले दिन कम होंगे। साथ ही इस मौसम में न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने का अनुमान जताया है। इस बार अपेक्षाकृत कम सर्दी पड़ने का पूर्वानुमान ऐसे समय में आया है जब देश में 1901 के बाद से दूसरा सबसे गर्म नवंबर रहा, जब औसत अधिकतम तापमान 29.37 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो मौसम के सामान्य 28.75 डिग्री से 0.623 डिग्री अधिक है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने यहां संवाददाताओं को बताया, सर्दियों के मौसम (दिसंबर 2024 से फरवरी 2025) के दौरान देश के अधिकांश हिस्सों में न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। पूर्वानुमान के अनुसार, सर्दियों के मौसम में सामान्य तौर पर पांच से छह दिनों की तुलना में इस बार शीतलहर वाले दिन कम रहने की उम्मीद है। महापात्र ने कहा कि इस मौसम के दौरान देश के अधिकांश भागों में सामान्य से अधिक अधिकतम तापमान रहने की संभावना है, सिवाय दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत के अधिकांश क्षेत्रों के, जहां अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहने की संभावना है।

अर्थव्यवस्था की गलत तस्वीर पेश कर डर का माहौल बना रहे हैं राहुल गांधी : भाजपा

भाषा। नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर में गिरावट पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी के बयान की आलोचना की और कहा कि चुनिंदा आंकड़ों और आधे-अधूरे सच के साथ अर्थव्यवस्था की गलत तस्वीर पेश करने की उनकी कोशिश न केवल गुमराह करने वाली है, बल्कि यह बचकानी है। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने रविवार को भारत की जीडीपी वृद्धि दर के दो साल में सबसे निचले स्तर पर आ जाने पर चिंता जताई थी और कहा था कि देश की अर्थव्यवस्था तब तक प्रगति नहीं कर सकती जब तक कि मुट्ठी भर अरबपति इसका लाभ उठाते रहेंगे। उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था के लिए नई सोच की आवश्यकता है और व्यवसायों के लिए एक नया सौदा इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए। इस पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा के आईटी विभाग के प्रमुख अमित मालवीय ने एक्स पर लिखा, चुनिंदा आंकड़ों और आधे अधूरे सत्य के साथ आर्थिक विनाश की तस्वीर पेश करने का आपका प्रयास न केवल भ्रामक है, बल्कि इसमें बालक बुद्धि की बू आती है और इसमें जटिल वास्तविकताओं के बचकाने अतिसरलीकरण की बू आती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता द्वारा 5.4 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि दर का रोना रोना हास्यास्पद है जब यह विश्व स्तर पर सबसे अधिक वृद्धि दर में से एक है। उन्होंने कहा, इसकी तुलना चीन (4.6 प्रतिशत), संयुक्त राज्य अमेरिका (2.8 प्रतिशत) और यूरो क्षेत्र (0.9 प्रतिशत) से करें। भू-राजनीतिक संघर्ष और आपूर्ति श्रृंखला में बाधाओं से प्रभावित चुनौतीपूर्ण वैश्विक माहौल में भी भारत की अर्थव्यवस्था लचीली है, जबकि अन्य लड़खड़ा रही हैं। उन्होंने कहा, क्या आपके लिए यह समझना बहुत कठिन है कि यह एक स्थानीय मुद्दा नहीं है, बल्कि एक वैश्विक आर्थिक घटना है? हर किसी ने आपका ट्रैक रिकॉर्ड देखा है, जब भारत को कमजोर पांच (अर्थव्यवस्थाओं) में गिना जाता था, मुद्रास्फीति दोहरे अंकों में थी। भाजपा नेता ने कहा कि अक्टूबर 2024 में खुदरा मुद्रास्फीति में थोड़ी वृद्धि हुई, मुख्य रूप से सब्जियों की आपूर्ति में मौसम से उत्पन्न व्यवधानों के कारण। उन्होंने कहा, लेकिन हमें नहीं भूलना चाहिए कि 2014 में मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से औसत मुद्रास्फीति की दर 5 प्रतिशत रही है और कभी भी दहाई अंक को नहीं छू सका। उन्होंने कहा, यह संप्रग युग (2004-14) के दौरान 8.1 प्रतिशत वार्षिक औसत से काफी कम है और 2010-14 के बीच अक्सर दोहरे अंकों में था। मालवीय ने राहुल से पूछा कि अगर वह वास्तव में बढ़ती कीमतों की परवाह करते हैं तो शायद आप यह बाना चाहेंगे कि उन वर्षों के दौरान मुद्रास्फीति दोहरे अंकों में क्यों थी। भाजपा नेता ने कहा कि गांधी अनुमानित बेरोजगारी संकट का राग अलापते हैं, लेकिन भारत ने पिछले कुछ वर्षों में 4.7 करोड़ नौकरियां जोड़ी हैं और श्रमिक-जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर) वित्त वर्ष 2023 में 56 प्रतिशत से वित्त वर्ष 2024 में बढ़कर 58.2 प्रतिशत हो गया है, जो ग्रामीण और शहरी दोनों भारत में बढ़ते अवसरों को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि 2013-14 में यही डब्ल्यूपीआर 49.9 प्रतिशत था।

वक्फ विधेयक के बहाने केंद्र मुसलमानों को निशाना बना रहा: ममता

भाषा। कोलकाता

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने वक्फ (संशोधन) विधेयक को लेकर सोमवार को भाजपा नीत केंद्र सरकार पर मुसलमानों को निशाना बनाने का आरोप लगाया और संसद में इसके पारित होने पर संदेह जताया। विधेयक के विरोध में एक प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान विधानसभा में ममता ने आरोप लगाया कि केंद्र ने इस विषय पर राज्य सरकारों की अनदेखी की है। उन्होंने कहा, केंद्र ने वक्फ विधेयक पर हमसे परामर्श नहीं किया। तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ने विधेयक पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) में विपक्षी सदस्यों को बोलने नहीं देने को लेकर भी भाजपा की आलोचना की। मुख्यमंत्री ने दावा किया, जेपीसी में, विपक्षी सदस्यों को बोलने नहीं दिया गया। यही कारण है कि उन्होंने इसका बहिष्कार किया। उन्होंने केंद्र पर मुसलमानों को निशाना बनाते हुए विभाजनकारी एजेंडा को आगे बढ़ाने का आरोप लगाया। ममता ने कहा, इस वक्फ (संशोधन) विधेयक के नाम पर एक ही धर्म को क्यों निशाना बनाया जा रहा है?

ट्रंप की ब्रिक्स देशों पर 100 प्रतिशत शुल्क की धमकी के मायने अभी अस्पष्ट : दुव्वुरी सुब्बाराव

हैदराबाद। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व गवर्नर दुव्वुरी सुब्बाराव ने सोमवार को कहा कि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ब्रिक्स देशों पर 100 प्रतिशत शुल्क लगाने की धमकी के मायने अभी स्पष्ट नहीं है क्योंकि अभी यह देखना बाकी है कि अमेरिकी कानून इस तरह की कार्वाई की अनुमति देता है या नहीं। ट्रंप ने ब्रिक्स देशों को अमेरिकी डॉलर में व्यापार न करने पर उन देशों से आयात पर 100 प्रतिशत शुल्क लगाने की धमकी दी है। सुब्बाराव ने कहा कि ब्रिक्स के लिए भी अमेरिकी डॉलर का विकल्प लाने के बारे में आंतरिक मतभेद है। भारत, रूस, चीन और ब्राजील सहित नौ सदस्यों वाले समूह द्वारा अमेरिकी मुद्रा से परे कोई अन्य मुद्रा अपनाने का प्रयास राजनीति और आर्थिक दोनो कारणो से अभी तक सफल नही हो पाया है। दुव्वुरी सुब्बाराव ने पीटीआई-भाषा से कहा, डोनाल्ड ट्रंप ने डॉलर को छोड़ने की कोशिश करने वाले देशो से आयात पर 100 प्रतिशत शुल्क लगाने की धमकी दी है। उनका गुस्सा खास तौर पर ब्रिक्स पर था जो डॉलर के विकल्प को तलाशने के लिए सक्रिय रूप से विचार कर रहा है। ट्रंप कोई कदम उठाने से अधिक, बाते बनाने के लिए जाने जाते है। आरबीआई के पूर्व प्रमुख ने पूछा, इस धमकी के मायने स्पष्ट नही है। अमेरिका यह निर्धारित करने के लिए किस पैमाने का इस्तेमाल करेगा कि कोई देश डॉलर के अलावा किसी अन्य मुद्रा मे व्यापार न करे? और क्या अमेरिकी कानून केवल इसलिए देशो पर प्रतिबंध लगाने की अनुमति देता है।

प्रतीक्षा सूची के यात्री ट्रेन के आरक्षित कोच में यात्रा के लिए अधिकृत नहीं: सरकार ने रास में कहा

नई दिल्ली। सरकार ने गत शुक्रवार को राज्यसभा को सूचित किया कि मौजूदा नियमों के अनुसार, प्रतीक्षा सूची वाले यात्री रेलगाड़ियो के आरक्षित डिब्बो मे यात्रा करने के लिए अधिकृत नही है। राज्यसभा सदस्य संजय सिंह द्वारा किए गए सवाल के लिखित जवाब में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा, अनारक्षित कोच मे यात्रा करने वाले प्रतीक्षा सूची वाले यात्रियों या आरक्षित कोच में अनधिकृत रूप से यात्रा करते पाए गए यात्रियो का विवरण नही रखा जाता है। सिंह ने मंत्री से पिछले तीन वर्षो मे देश मे उन यात्रियो की कुल संख्या का ब्योरा उपलब्ध कराने को कहा था, जिन्हे कन्फर्म टिकट उपलब्ध नही होने के कारण प्रतीक्षा सूची वाले टिकटों पर यात्रा करनी पड़ी। सिंह ने साथ ही प्रतीक्षा सूची वाले यात्रियो की सुविधा के लिए रेलवे द्वारा किए जा रहे प्रयासो के बारे मे भी जानकारी मांगी थी। वैष्णव ने बताया, भारतीय रेल के अंतर्गत संचालित सभी रेलगाड़ियो की प्रतीक्षा सूची की स्थिति की नियमित आधार पर निगरानी की जाती है। अतिरिक्त मांग को पूरा करने के लिए, भारतीय रेलवे त्योहारो, छुट्टियो आदि के दौरान विशेष रेलगाड़ियों का परिचालन भी करता है और यात्रियो के विभिन्न वर्गो के लिए रेलगाड़ियों मे स्थाई और अस्थाई दोनो स्तर पर अतिरिक्त सीट उपलब्ध करावाता है जिनमें शयनयान डिब्बे भी शामिल हैं। उन्होंने बताया, तदनुसार, वर्ष 2024 मे होली और गर्मी की छुट्टियो के दौरान यात्रियो की अतिरिक्त भीड़ को उनके गंतव्यो तक पहुंचाने के लिए विशेष ट्रेनो ने 13,523 फेरे लगाएं।

कार्बन कटौती के लिए टिकाऊ उपभोग के तरीकों को बढ़ावा देने की जरूरत: गोयल

नई दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने सोमवार को कार्बन उत्सर्जन में कटौती और पर्यावरण से जुड़े मुद्दो के समाधान के लिए टिकाऊउपभोग के तरीको को बढ़ावा देने का आह्वान किया। गोयल ने यहां उद्योग मंडल सीआईआई की तरफ से आयोजित भागीदारी शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि दुनिया के लोगों को ऐसे उत्पादों का उपभोग करने पर ध्यान केंद्रित करना होगा जो पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ हो। उन्होने कहा, "हमें अपनी मौजूदा जीवनशैली के कारण कचरे और कार्बन उत्सर्जन को लेकर सजग रहने की जरूरत है। यह दुनिया के बेहतर भविष्य का मूल होगा। जब तक हम उपभोग के तौर-तरीकों पर ध्यान नही देते है, हम स्थिरता और पर्यावरणीय चुनौतियो का समाधान नही कर पाएंगे। गोयल ने कहा कि पर्यावरणीय चुनौतियो का जन्म विनिर्माण के माध्यम से उत्सर्जित कार्बन की वजह से नही हुआ है। उन्होने कहा, "असल में यह हमारे उपभोग के कारण होने वाले कार्बन उत्सर्जन का नतीजा है। दरअसल उपभोग की मांग आने पर ही विनिर्माण होता है। उन्होने सुझाव दिया कि इस मांग को बेहतर और अधिक टिकाऊ तरीके से प्रबंधित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही गोयल ने कहा कि वैश्विक दक्षिण (कम विकसित और विकासशील देश) वैश्विक पर्यावरणीय क्षति के लिए जिम्मेदार नही है, बल्कि यह उन विकसित देशो के कारण हुआ है, जिन्होने कम लागत वाली ऊर्जा का लाभ उठाया है।

भोपाल गैस त्रासदी के 40 साल बाद खतरनाक अपशिष्ट के निपटारे का काम अब भी लंबित

भोपाल। दुनिया की सबसे भीषण औद्योगिक त्रासदी भोपाल गैस त्रासदी की घटना के 40 साल बाद अब बंद हो चुकी यूनियन कार्बाइड कंपनी के कारखाने के अंदर 337 मीट्रिक टन खतरनाक अपशिष्ट अभी पड़ा हुआ है, जबकि केंद्र सरकार इसके निपटान के लिए मध्यप्रदेश सरकार को पहले ही 126 करोड़ रुपए दे चुकी है। सामाजिक कार्यकर्ताओं ने सोमवार को यह जानकारी दी। वर्ष 1984 में दो-तीन दिसंबर की दरम्यानी रात को यूनियन कार्बाइड के कारखाने से अत्यधिक जहरीली गैस मिथाइल आइसोसाइनेट (एमआईसी) लीक हुई थी, जिससे 5,479 लोगों की मौत हो गई थी और पांच लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए थे। भोपाल गैस पीड़ति संघर्ष सहयोग समिति के सह-संयोजक और त्रासदी से जुड़ी एक रिट याचिका में हस्तक्षेपकर्ता एनडी जयप्रकाश ने कहा कि संयंत्र के अंदर और आसपास 1.1 मिलियन टन दूषित मिट्टी पड़ी हुई है, जिसके कारण जल स्रोत भी प्रभावित हुए है। उन्होंने कहा कि इस मामले की सुनवाई मंगलवार को होगी। इस साल 11 सितंबर को मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने 2004 में दायर एक रिट याचिका पर सुनवाई करते हुए कारखाने से खतरनाक कचरे को हटाने का काम शुरू करने मे हो रही देरी पर नाराजगी जताई थी। न्यायमूर्ति विवेक रूसिया और न्यायमूर्ति अवनीद्र कुमार सिंह की खंडपीठ ने मध्यप्रदेश प्रदूषण बोर्ड के अध्यक्ष को मामले को व्यक्तिगत रूप से देखने को कहा था।

पहली आई-क्लीन परियोजना का उद्घाटन

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के किसानों को सशक्त बनाने के दृष्टिकोण के साथ कदम मिलाते हुए, वाराणसी के बरौरा हाट बाजार को सिंजेंटा इंडिया की आई-क्लीन पहल के तहत विकसित किया गया। कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने इस नए रूप से तैयार किए गए बाजार का उद्घाटन किया। यह बाजार ग्रामीण परिवर्तन का एक मॉडल बनेगा, जहां किसानों, विक्रेताओं और स्थानीय समुदाय के लिए बेहतर सुविधाएं मिलेंगी।माननीय मंत्री ने सिंजेंटा को उसकी अनोखी पहल के लिए बधाई दी, और कहा कि यह उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए फायदेमंद साबित होगी।बरौरा हाट प्रोजेक्ट आई-क्लीन का उत्तर प्रदेश में पहला कदम है, जिसे कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री और एनजीओ हरितिका के सहयोग से पूरा किया गया है। इस परियोजना के तहत 8 नए शेड बनाए गए हैं, जिनमें उठे हुए प्लेटफॉर्म, शौचालय, सोलर लाइटिंग, बोरवेल, और फर्श की मरम्मत शामिल है। सिंजेंटा इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर और कंट्री हेड सुशील कुमार ने कहा, हम खुश हैं कि बरौरा हाट एक आर्थिक गतिविधि के केंद्र के रूप में उभर रहा है। आवश्यक सुविधाएं और बुनियादी ढांचा देकर, हम ग्रामीण समुदायों, खासकर किसानों, को विकास और समृद्धि के अवसर देना चाहते हैं।

हाइब्रिड फंड्स से होते है कई फायदे

मुंबई। जीवन में हमें अक्सर दो चरम सीमाओं के बीच चुनना होता है। इसी तरह निवेश के मामले में किसी को अक्सर उन परिसंपत्ति वर्गों के बीच चयन करने की दुविधा का सामना करना पड़ता है,जिसमें जोखिम के साथ रिटर्न वाले उच्च जोखिम वाली इक्विटी, कम जोखिम वाले डेट और महंगाई के खिलाफबचाव वाले विकल्प के तौर पर कमोडिटी सोना, चांदी आदि के खिलाफहेज शामिल है। लेकिन क्या हो अगर आप ग्रोथ और स्थिरता के बीच संतुलन बनाकर दोनों का लाभ उठाया जाए। इसके लिए हाइब्रिड फंड को चुनेंए जो एक बहुमुखी निवेश विकल्प है और यह एक सिंगल फंड में जोखिम और रिटर्न दोनों को संतुलित करता है। हाइब्रिड फंड म्यूचुअल फंड स्कीम्स हैंए जो परिसंपत्ति आवंटन और ग्रोथ के लिए इक्विटी स्टॉक डेट उपकरणों बॉन्ड, डिबेंचर, जमा प्रमाणपत्र, और सोना, चांदी आदि जैसी जिंसों में निवेश करती हैं। ये फंड विभिन्न जोखिम जरूरतों को पूरा करते हैं और नए निवेश करने वाले व अनुभवी निवेशकों दोनों के लिए उपयुक्त एक विविध और लचीला निवेश विकल्प मुहैया कराते हैं। हाइब्रिड फंड एक बहुमुखी निवेश विकल्प के रूप में सामने आते हैंए जो स्थिरता के साथ ग्रोथ क्षमता को संतुलित करते हैं। बाजार की अस्थिरता को रणनीतिक रूप से प्रबंधित करते हुएए हाइब्रिड फंड इक्विटी और ऋण दोनों से संभावित लाभ सुनिश्चित करते हुए जोखिमों को कम करते हैं।

धनखड़ ने विकसित भारत के लिए नवाचार की भूमिका पर मार्गदर्शन दिया

कानपुर। भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने आज आई आई टी कानपुर आगमन पर परिवर्तनकारी विषय भारत के विकास में नवाचार की भूमिका पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना और उत्तर प्रदेश के खादी, ग्रामोद्योग, रेशम उत्पादन और कपड़ा मंत्री राकेश सचान की गरिमामयी उपस्थिति रही। आईआईटी कानपुर के निदेशक प्रो. मणीन्द्र अग्रवाल, उप निदेशक प्रो. ब्रज भूषण, फैकल्टी, कर्मचारियों और छात्रों के साथ इस अवसर पर शामिल हुए, जिससे यह दूरदर्शी और शिक्षार्थियों का एक उल्लेखनीय संगम बन गया।माननीय उपराष्ट्रपति गदीप धनखड़ ने भारत के विकास में नवाचार की भूमिका पर अपने संबोधन में राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में नवाचार के महत्वपूर्ण महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे उत्कृष्टता का प्रतीक आईआईटी कानपुर, नवोन्मेषी दिमागों को पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जो दुनिया भर में परिवर्तनकारी बदलाव ला रहे हैं। प्रौद्योगिकी और संचार जैसे उद्योगों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले आईआईटी कानपुर के पूर्व छात्रों की सफलता का हवाला देते हुए, उन्होंने वैश्विक बाजारों, विशेष रूप से सिलिकॉन वैली जैसी जगहों पर आईआईटी स्नातकों के दूरगामी प्रभाव को रेखांकित किया।

गिनी में फुटबॉल मैच के दौरान भगदड़ में 56 लोगों की मौत

भाषा। कोनाक्री (गिनी)

दक्षिणी गिनी के एक फुटबॉल स्टेडियम में प्रशंसकों के बीच झड़प के बाद मची भगदड़ में 56 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। गिनी की सरकार ने सोमवार को यह जानकारी दी। संचार मंत्री फना सौमाह ने राष्ट्रीय टेलीविजन पर दिए गए एक बयान में कहा कि अधिकारी रविवार को हुई भगदड़ की इस घटना के लिए जिम्मेदार लोगों का पता लगाने के वास्ते जांच कर रहे हैं। अफ्रीकी देश गिनी के सबसे बड़े शहर में भीड़ से खचाखच भरे स्टेडियम में फुटबॉल मैच के दौरान हुई झड़प के बाद भगदड़ मचने से बच्चों समेत कई फुटबॉल प्रशंसकों की मौत हो गई तथा कई अन्य घायल हो गए। स्थानीय मीडिया और राजनीतिक पार्टियों के एक गठबंधन ने यह जानकारी दी। सुरक्षा बलों ने झड़प को शांत करने का प्रयास किया। गिनी के प्रधानमंत्री अमादौ ओरी बाह ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर बताया कि गिनी के सैन्य नेता मामादी डौम्बौया के सम्मान में रविवार दोपहर को आयोजित स्थानीय टूर्नामेंट के फाइनल के दौरान भगदड़ की यह घटना हुई। नेजेरेकोर शहर में लेबे और नेजेरेकोर की टीम के बीच यह मैच हो रहा था। बाह ने कहा, भगदड़ के दौरान पीड़ितों की संख्या दर्ज की गई थी। हालांकि उन्होंने मारे गए लोगों की संख्या के बारे में कुछ नहीं बताया। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय अधिकारी इलाके में शांति बहाल करने के लिए काम कर रहे हैं। नेशनल अलायंस फॉर अल्टरनेशन एंड डेमोक्रेसी नामक राजनीतिक दलों के गठबंधन ने एक बयान में कहा कि भगदड़ के कारण कई लोग मारे गए और घायल हुए। स्थानीय मीडिया ने बताया कि झड़प के कारण मची भगदड़ के बाद उत्पन्न अराजकता की स्थिति को काबू में करने तथा शांति की बहाली के लिए सुरक्षा बलों ने आंसूगैस का प्रयोग करने का प्रयास किया। स्थानीय मीडिया के अनुसार, इस कार्रवाई से फुटबॉल प्रशंसक नाराज हो गए और उन्होंने पत्थरबाजी शुरू कर दी। ी कारण सुरक्षा बलों ने आंसू गैस के गोले का इस्तेमाल किया। मीडिया गिनी ने बताया कि घटना में मारे गए लोगों में बच्चे भी शामिल हैं। वहीं अस्पताल में इलाज करा रहे कुछ घायलों की स्थिति गंभीर बताई जा रही है।

अमेरिकाः अलास्का के समुद्र में मछुआरों की नौका पलटी, पांच लोग लापता

वाशिंगटन। अलास्का की राजधानी जुनो के समीप खराब मौसम के बीच मछुआरों की एक नौका के समुद्र में पलट जाने से पांच लोग लापता हो गए और उनकी तलाश की जा रही है। अमेरिकी तटरक्षक बल ने रविवार को यह जानकारी दी तटरक्षक बल की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार, लगभग 50 फुट लंबी नौका विंड वॉकर के चालक दल ने रात 12 बजकर 10 मिनट पर संदेश भेजा कि उनकी नौका पलटने वाली है, लेकिन इसके अलावा और कुछ जानकारी नहीं दे पाया। बाद में पता चला कि विंड वॉकर , जूनो के दक्षिण-पश्चिम में पॉइंट कुवर्डन के पास पानी में पलट गई।विज्ञप्ति के अनुसार, एएमएचएस हबर्ड नौका के चालक दल ने यह संदेश सुना और वे घटनास्थल पर सबसे पहले पहुंचे। बचाव कार्य के लिए, तटरक्षक बल ने एक एमएच-60 जेहॉक हेलीकॉप्टर और एक नौका को मौके पर भेजा।

ऑस्ट्रेलिया में मछुआरों की नौका से 2.3 टन कोकीन जब्त, 13 लोग गिरफ्तार

वेलिंगटन। ऑस्ट्रेलिया में पुलिस ने क्वींसलैंड तट के पास क्षतिग्रस्त हुई संदिग्धों की एक नौका पर छापा मारकर करीब 2.3 टन कोकीन जब्त की और 13 लोगों को गिरफ्तार किया। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। संघीय पुलिस ने एक बयान में कहा कि इन मादक पदार्थों का बाजार मूल्य 76 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर था। जांच अधिकारियों ने ब्रिसबेन में पत्रकारों को बताया कि ए मादक पदार्थ किसी अज्ञात दक्षिण अमेरिकी देश से लाए गए थे। ऑस्ट्रेलियाई संघीय पुलिस कमांडर स्टीफन जे ने बताया कि कोमांचेरोस मोटरसाइकिल गिरोह द्वारा तस्करी की साजिश रचे जाने के संबंध में सूचना मिली थी और एक माह से की जा रही जांच के बाद शनिवार और रविवार को ए गिरफ्तारियां की गईं।

फ्रांस में स्की रिजॉर्ट के पास बस दुर्घटना में दो लोगों की मौत, 33 अन्य घायल

मैड्रिड। दक्षिणी फ्रांस के पिरेनी पर्वत श्रृंखला में मौजूद एक स्की रिजॉर्ट के पास रविवार शाम हुई एक बस दुर्घटनाग्रस्त में कम से कम दो लोगों की मौत हो गई और 33 अन्य घायल हो गए। स्थानीय अधिकारियों ने यह जानकारी दी।स्थानीय प्रशासन ने बताया कि पोर्टे-प्यूमोरेंस स्की रिजॉर्ट के पास जो बस दुर्घटनाग्रस्त हुई उसमें चालक सहित कुल 47 लोग सवार थे। सात लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने बताया कि शुरुआती जांच से पता चला है कि बस एक चट्टान से टकराने के कारण दुर्घटनाग्रस्त हुई, लेकिन फिलहाल हादसे का वास्तविक कारण ज्ञात नहीं है।स्थानीय अग्निशमन सेवा द्वारा जारी की गई तस्वीरों में बस को एक चट्टान पास देखा जा सकता है और टक्कर के कारण वाहन का दाहिना भाग आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त नजर आ रहा है तथा इसकी खिड़कियों के शीशे टूटकर बिखरे हुए थे। बचाव कार्य में 120 से अधिक कर्मियों को लगाया था, जिनमें पड़ोसी स्पेन के कैटेलोनिया और अंडोरा के लोग भी शामिल थे।

नेपाल सरकार ने चीन से दो करोड़ अमेरिकी डॉलर की अनुदान सहायता स्वीकार की

काठमांडू। नेपाल सरकार ने प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली की चीन यात्रा से पहले इस देश से अनुदान सहायता के रूप में दो करोड़ अमेरिकी डॉलर की परियोजनाएं स्वीकार कर ली हैं। प्रधानमंत्री के तौर पर चौथी बार पदभार ग्रहण करने के बाद यह ओली की पहली चीन यात्रा है। सूचना एवं संचार मंत्री पृथ्वी सुब्बा गुरुंग ने रविवार को संवाददाताओं से कहा कि मंत्रिपरिषद की बैठक में प्रधानमंत्री ओली की चीन यात्रा की सफलता की कामना की गई तथा चीन से अनुदान सहायता के रूप में दो करोड़ अमेरिकी डॉलर (लगभग 2.70 अरब नेपाली रुपए) की परियोजनाओं को स्वीकार करने का निर्णय लिया गया। सरकारी प्रवक्ता गुरुंग के अनुसार, इसके अलावा मंत्रिमंडल ने चीन सरकार द्वारा प्रस्तावित 5.60 अरब नेपाली रुपए मूल्य की परियोजनाओं के लिए 30 करोड़ चीनी युआन (लगभग 41 लाख अमेरिकी डॉलर) की राशि स्वीकार करने का भी निर्णय लिया। नेपाल के प्रधानमंत्री ओली सोमवार को चीन की चार दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर रवाना हुए।

कचरे के मूल्य पर 9वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

नई दिल्ली। कचरे से मूल्य निर्माण पर सीआईआई के 9वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत सरकार के पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव ने कहा कि हमें कचरे से मूल्य के सिद्धांत के माध्यम से प्रतिकूलता को अवसर में बदलने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। भारत सरकार के आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के माननीय राज्य मंत्री तोखन साहू ने कहाए कचरे से मूल्य पर सीआईआई के 9वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अपने संबोधन में, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेन्द्र यादव ने कहा कि जब हम विकसित भारत पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हमें हरित और टिकाऊ भारत पर भी ध्यान देने की जरूरत है। एक सर्कुलर इकनॉमी का लक्ष्य उत्पाद डिजाइन से लेकर जीवन के अंत तक प्रबंधन तक . हर चरण में रिसाइक्लिंग, पुनः उपयोग और कचरे को कम करने पर ध्यान केंद्रित करके कचरे को कम करना है। लक्ष्य शून्य कचरा प्राप्त करना और पर्यावरण.अनुकूल उत्पादन सुनिश्चित करना है। हमें ऐसे कुशल कार्यबल तैयार करने की जरूरत है जो प्रसंस्करण, रिसाइक्लिंग टेक्नोलॉजी व पर्यावरण अनुकूल उत्पाद डिजाइन में मदद करे। उन्होंने कचरे को बोझ नहीं बल्कि संसाधन मानने की भी अपील की। उन्होंने प्लास्टिक कचरा प्रबंधन नियमए निर्माण और विध्वंस कचरा प्रबंधन नियमए बैटरी कचरा प्रबंधन नियमए ई.कचरा प्रबंधन नियमए राख उपयोग अधिसूचना मोटर वाहन पंजीकरण और स्क्रैप नीति आदि सहित कचरे से मूल्य से संबंधित कई सरकारी नीतियों पर प्रकाश डाला।

दुनिया में आईटी स्टोरेज सॉल्यूशंस पर जोर

ग्लोबल। हुंडिया इन्फो सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, कंप्यूटिंग और मोबिलिटी उत्पादों के मुंबई में अग्रणी विक्रेता और आईटी स्टोरेज सॉल्यूशंस में अग्रणी ईवीएम ब्रांड ने एसएसडी, रैम और अन्य अत्याधुनिक समाधानों के लिए भारत के पहले मेड-इन-इंडिया स्टोरेज उत्पादों के लॉन्च की गर्व के साथ घोषणा की है। यह लॉन्च ऐतिहासिक रूप से मील का पत्थर है, क्योंकि ईवीएम स्थानीय रूप से विकसित और निर्मित मेड इन इंडिया स्टोरेज समाधान पेश करने वाला पहला भारतीय ब्रांड बन गया है।ईवीएम इंडिया के प्रबंध निदेशक कुणाल हुंडिया ने कहा कि यह एक उत्पाद लॉन्च से कहीं अधिक है, वैश्विक तकनीक क्षेत्र में भारत की क्षमता की घोषणा करना। ईवीएम आने वाले समय में अपने उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार करते हुए स्थानीय रूप से निर्मित स्टोरेज समाधानों को पेश करके इस गति को बनाने की योजना बना रहा है। ईवीएम इंडिया के सीईओ विशाल हुंडिया ने कहा कि ईवीएम का हमेशा से भारतीय उपभोक्ताओं को सशक्त बनाने का उद्देश्य रहा है। ये मेड-इन-इंडिया स्टोरेज समाधान इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारतीय नवाचार क्या हासिल कर सकते हैं। एक भारतीय ब्रांड के रूप में, हमें अन्य अंतरराष्ट्रीय ब्रांडों के समान गुणवत्ता के साथ भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप उच्च गुणवत्ता वाले स्टोरेज समाधान पेश करने पर गर्व है।यह एक बदलाव लाने के बारे में है।

नेपाल के पीएम ओली चीन की यात्रा पर रवाना

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली सोमवार को चीन की चार दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर रवाना हुए। इस यात्रा के दौरान उनका चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग के साथ आपसी हित के विभिन्न मुद्दों पर बातचीत करने का कार्यक्रम है। अपने कार्यकाल में ओली की किसी पड़ोसी देश की यह पहली यात्रा है। यहां विदेश मंत्रालय ने कहा कि ओली अपने चीनी समकक्ष ली क्विंग के निमंत्रण पर बीजिंग का दौरा कर रहे हैं। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि प्रधानमंत्री ओली दो से पांच दिसंबर की अपनी यात्रा के दौरान बीजिंग में चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग से मुलाकात करेंगे और आपसी हित के मामलों पर चर्चा करने के लिए प्रधानमंत्री ली के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। वह चीन में 39 सदस्ईय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे हैं। इस यात्रा पर उनकी पत्नी राधिका शाक्य भी उनके साथ हैं। ओली नेशनल पीपुल्स कांग्रेस की स्थाई समिति के अध्यक्ष झाओ लेजी से भी मुलाकात करेंगे और वह बीजिंग स्थित पेकिंग विश्वविद्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्य वक्ता होंगे।

पाकिस्तान के कुर्म में संघर्ष विराम हुआ

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में दो कबायली समूहों के बीच कई दिनों तक चली झड़पों के बाद संघर्ष विराम समझौता हो गया है। इन झड़पों में अशांत कुर्म जिले में 130 लोग मारे गए थे।कुर्म के उपायुक्त जावेदुल्ला महसूद ने रविवार को अशांत कुर्म जिले के संघर्ष वाले क्षेत्रों में शांति स्थापित होने की पुष्टि की।जिले में अलीजई और बागान कबायली समूहों के बीच संघर्ष 22 नवंबर को तब शुरू हुआ, जब पाराचिनार के पास एक दिन पहले यात्री वैन के काफिले पर हमला हुआ, जिसमें 47 लोग मारे गए थे। गंभीर रूप से घायल हुए कई यात्रियों ने बाद में दम तोड़ दिया, जिससे मरने वाले लोगों की संख्या बढ़कर 57 हो गई। कुर्म जिले में लगातार 11 वें दिन झड़प जारी रही, जिससे हिंसा में मरने वालों की संख्या बढ़कर 130 हो गई है। रविवार को ही कम से कम छह लोग मारे गए और आठ घायल हो गए थे।

माली के सैन्य शासन के ड्रोन हमले में आठ तुआरेग विद्रोहियों को मार गिराया

बमाको (माली)। माली के सैन्य शासन ने ड्रोन हमले में देश के उत्तरी भाग में स्थित तिनजाउतिन शहर में आठ तुआरेग विद्रोही नेताओं को मार गिराया। विद्रोही समूह के प्रवक्ता ने रविवार को यह जानकारी दी। वर्ष 2012 में विद्रोह शुरू होने के बाद यह पहली बार है जब एक ही हमले में इतनी संख्या में तुआरेग नेता मारे गए। प्रवक्ता मोहम्मद एल्माउलौद रमदान ने एक बयान में कहा, एक दिसंबर को अल्जीरियाई सीमा के पास तिनजाउतिन में कई समन्वित ड्रोन हमलों में कुछ अजावाद नेता शहीद हो गए। अजावाद शब्द का इस्तेमाल अलगाववादी नेता उत्तरी माली के लिए इस्तेमाल करते हैं। अलगाववादियों के बयान में आठ तुआरेग नेताओं के नाम का जिक्र है, जिनमें सबसे प्रमुख तुआरेग सशस्त्र समूह गैटिया के महासचिव फहाद एग अल महमूद का नाम शामिल है।

दुनिया में वैल्यू डेज के साथ सर्दियों का आनंद उठाएं

इंडियाना। 30 नवंबर से 8 दिसंबर तक चलने वाले अमेजन फ्रेश के सुपर वैल्यू डेज के साथ, ताजे फल और सब्जियां, स्नैक्स, पेय पदार्थ, और दैनिक आवश्यक वस्तुओं सहित उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला पर 50प्रतिशत तक की छूट के साथ जरूरी बचत का फायदा उठाएं। आगे आने वाले कड़ाके की ठंड के मौसम के साथ, अपने पसंदीदा समय पर स्लॉटेड डोरस्टेप डिलीवरी की सुविधा के साथ, अपनी पेंट्री स्टॉक को तैयार करने के लिए आशीर्वाद, वेदका, टाटा संपन्न, पारले, एनआईवीए, हिमालय, न्यूट्रोजेना और डव जैसे सर्दियों के पसंदीदा ब्रांड्स से खरीदारी करें। प्राइम कस्टमर्स 45प्रतिशत तक की छूट के साथ फ्लैट 400रुपए का कैशबैक और वीकेंड्स पर फल व सब्जियों पर अतिरिक्त 50रुपए का कैशबैक का फायदा उठा सकते हैं।

कुवैत में फंसे भारतीय यात्री मैनचेस्टर के लिए रवाना

कुवैत सिटी। मैनचेस्टर जाने वाली गल्फ एयर की उड़ान के कई भारतीय यात्री कुवैत हवाई अड्डे पर लगभग 20 घंटे तक फंसे रहने के बाद सोमवार सुबह गंतव्य के लिए रवाना हो गए। बहरीन से मैनचेस्टर जाने वाली गल्फ एयर की उड़ान को तकनीकी खराबी के चलते कुवैत की ओर मोड़ दिया गया था।खबर के अनुसार गल्फ एयर जीएफ5 ने एक दिसंबर को स्थानीय समय के अनुसार देर रात दो बजकर पांच मिनट पर बहरीन से उड़ान भरी, लेकिन विमान में कुछ खराबी आ जाने के कारण उसे सुबह चार बजकर एक मिनट पर कुवैत में उतारना पड़ा।

ब्रेन रोट है ऑक्सफोर्ड प्रेस का 2024 का शब्द

लंदन। कई लोगो ने ब्रेन रोट पढ़ा और सुना होगा, और अब यह आधिकारिक रूप से ऑक्सफोर्ड शब्दकोश का वर्ष 2024 का शब्द हो गया है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने सोमवार को कहा कि इस शब्द ने 2024 में, पहले की तुलना मे अधिक महत्व पाया, क्योंकि पिछले वर्ष की तुलना मे इसका इस्तेमाल 230 प्रतिशत बढ़ गया। ऑक्सफोर्ड ने ब्रेन रोट को किसी व्यक्ति की मानसिक या बौद्धिक स्थिति के कथित तौर पर खराब होने के रूप में परिभाषित किया है। वर्ष का शब्द एक ऐसा शब्द होता है, जो पिछले 12 महीनों से किसी विशेष स्थिति को अभिव्यक्त करने के लिए इस्तेमाल किया जाता हो। ब्रेन रोट ने पांच अन्य शब्दों को पछाड़ कर वर्ष के शब्द का यह दर्जा पाया। ऑक्सफोर्ड लैंग्वेजेज के प्रमुख कैस्पर ग्रैथवोहल ने कहा कि ब्रेन रोट आभासी जीवन के कथित खतरों मे से एक को और अपने खाली समय का हम उपयोग कैसे कर रहे हैं , उसे दर्शाता है।

खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री गंदापुर के रिश्तेदार की हत्या

पेशावर। खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंदापुर के एक रिश्तेदार की सोमवार को उत्तर पश्चिम पाकिस्तान में अज्ञात बंदूकधारियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि सरदार सकलैन खान गंदापुर की डेरा इस्माइल खान जिले मे गोली मारकर हत्या कर दी गई, जो मुख्यमंत्री का पैतृक स्थान है। सरदार सकलैन खान गंदापुर पूर्व स्थानीय सरकारी पदाधिकारी भी थे। लूनी मोड़ पर हुए इस हमले की तत्काल किसी समूह ने जिम्मेदारी नही ली है। यह ऐसा इलाका है जहां पाकिस्तानी तालिबान की खासी मौजूदगी है। अधिकारी ने बताया कि घटना की जांच शुरू कर दी गई है।

पाकिस्तान में खिलौना बम फटने से तीन बच्चों की मौत

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत उत्तर-पश्चिमी प्रांत खैबर पख्तूनख्वा मे सोमवार को खिलौना बम फटने से दो सगे भाई समेत कम से कम तीन बच्चो की मौत हो गई। यह घटना बन्नू के वजीर उपखंड के जानी खेल इलाके मे हुई।स्थानीय सूत्रों के अनुसार, बच्चे मदरसे से घर लौट रहे थे तभी मोर्टार के खोल मे विस्फोट हुआ और दो भाइयो समेत तीन छात्रों की मौत हो गई।मोर्टार का खोल एक सुनसान इलाके मे पड़ा था। बच्चो ने इसे खिलौना समझकर उठा लिया, जिससे भीषण धमाका हुआ।पूर्व मे भी कई बच्चे इस तरह के खिलौनो से खेलते समय अपनी जान गंवा चुके है। ए खिलौने जांच मे विस्फोटक उपकरण निकले। इस तरह की घटनाएं ज्यादातर उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान मे ही सामने आती रही है।

मध्य मेक्सिको में गोलीबारी में आठ लोगों की मौत

मेक्सिको सिटी। उत्तर-मध्य मेक्सिको मे सड़क किनारे एक दुकान के पास बंदूकधारियो ने ग्राहकों और राहगीरों पर गोलियां बरसा दी जिसमे आठ लोगो की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। अधिकारियो ने यह जानकारी दी। गुआनाजुआटो प्रांत के अभियोजकों ने बताया कि गोलीबारी शनिवार देर रात अपेसियो एल ग्रांडे शहर मे हुई। इस प्रांत मे गिरोहो के बीच गोलीबारी की घटनाएं सामने आती रहती है। लोग दुकान के ठीक बाहर खड़े थे। हमले मे एक पुरुष और एक महिला भी घायल हुई है, लेकिन उनकी हालत के बारे मे फिलहाल कोई जानकारी नही है। स्थानीय मीडिया की खबरो के अनुसार, गोलीबारी मे एक स्वास्थ्यकर्मी की भी मौत हो गई। सरकारी एम्बुलेंस एवं पैरामेडिक एजेंसी ने बताया कि शनिवार देर रात एक तकनीशियन की मौत हो गई। हालांकि, उसने इस बात की पुष्टि नही की कि वह हमले मे मारे गए लोगो मे से एक था या नही। सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो मे दुकान के बाहर खड़ी मोटरसाइकिल के बीच पुरुषो के शव देखे जा सकते है।

जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज यूक्रेन दौरे पर

कीव। जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज सोमवार को अपनी आधिकारिक यात्रा पर यूक्रेन पहुंचे। कुछ सप्ताह पहले ही यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ फोन पर बातचीत करने के लिए उनकी (शोल्ज की) आलोचना की थी। शोल्ज की यूक्रेन यात्रा ऐसे समय में हुई है जब इस बात को लेकर व्यापक अटकलें लगाई जा रही हैं कि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का नया प्रशासन यूक्रेन के लिए क्या मायने रखेगा, क्योंकि रिपब्लिकन नेता ने राष्ट्रपति चुनाव में जीत के बाद इस संघर्ष को समाप्त कराने का वादा किया है। इस बीच, जेलेंस्की ने शुक्रवार को कहा था कि यूक्रेन को नाटो की सदस्यता की पेशकश इस युद्ध की भयावहता को कम कर सकती है। शोल्ज की यात्रा, फरवरी में जर्मनी में होने वाले संभावित चुनाव से पहले हो रही है। चुनावी अभियान शुरू होने के साथ ही शोल्ज ने यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े आपूर्तिकर्ता के रूप में जर्मनी की स्थिति की ओर इशारा किया है। साथ ही युद्ध को बढ़ने से रोकने के लिए अपनी ओर से प्रयास करने और लंबी दूरी की क्रूज मिसाइल टॉरस देने से इनकार करने पर भी प्रकाश डाला है।

बाइडन ने अपने बेटे हंटर को माफी दी, कहा- आरोप राजनीति से प्रेरित थे

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका के निवर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडन ने अपने बेटे हंटर बाइडन के लिए रविवार को एक पूर्ण एवं बिना शर्त माफी जारी करते हुए कहा कि उन्हें सिर्फ इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि वह उनके बेटे हैं। बाइडन ने रविवार रात को एक बयान में कहा, अपने पूरे करियर में मैंने एक ही सिद्धांत का पालन किया है: अमेरिकी लोगों को सच बताएं। वे निष्पक्ष होकर सोचेंगे। सच यह है कि मैं न्याय प्रणाली में विश्वास करता हूं, लेकिन मैं इससे जूझ चुका हूं और मुझे यह भी लगता है कि अनुभवहीन राजनीति ने इस प्रक्रिया को संक्रमित कर दिया है जिससे न्याय का उपहास हुआ है। मैंने इस सप्ताहांत इस आशय का निर्णय लिया, ऐसे में इसमें देरी करने का कोई मतलब नहीं था। बाइडन ने अपने परिवार के सदस्यों के लाभ के लिए राष्ट्रपति पद की असाधारण शक्तियों का उपयोग नहीं करने के अपने पिछले वादों को पलटते हुए, रविवार रात बेटे हंटर को माफ कर दिया, जिससे वह संघीय गुंडागर्दी बंदूक और कर दोषों के लिए संभावित जेल की सजा से बच गए। हंटर बाइडन को इस वर्ष की शुरुआत में संघीय बंदूक और कर आरोपों में दोषी ठहराया गया था तथा उन्हें जल्द कैलिफोर्निया के डेलन में पेश होना था, जहां उन्हें लंबी, जेल की सजा हो सकती थी। जो बाइडन ने कहा, जिस दिन से मैंने पदभार संभाला है, मैंने यही कहा था कि मैं न्याय विभाग के निर्णय में हस्तक्षेप नहीं करूंगा और मैंने अपना वचन निभाया। मैंने यह भी देखा कि मेरे बेटे पर चुनिंदा और अनुचित तरीके से मुकदमा चलाया जा रहा है। डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति ने पहले कहा था कि वह अपने बेटे को डेलावेयर और कैलिफोर्निया के दो मामलों में दोषी ठहराए जाने के बाद उसे माफ नहीं करेंगे या उसकी सजा कम नहीं करेंगे। यह कदम हंटर बाइडन को बंदूक मामले में अपने मुकदमे की सजा और कर आरोपों पर दोष की स्वीकारोक्ति के बाद सजा मिलने से पहले और राष्ट्रपति पद के चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप के व्हाइट हाउस में लौटने से दो महीने से भी कम समय पहले आया है। राष्ट्रपति ने कहा, अपराध में इस्तेमाल, किसी के नाम पर एक या कई हथियार खरीदने जैसे गंभीर कारकों के बिना किसी पर सिर्फ इस आधार पर गुंडागर्दी के आरोपों में मुकदमा नहीं चलाया जा सकता कि उन्होंने बंदूक का फॉर्म कैसे भरा। जो लोग नशे की गंभीर लत के कारण अपने करों का भुगतान करने में देरी करते हैं, लेकिन बाद में ब्याज और दंड के साथ उन्हें वापस कर देते हैं, उन्हें आम तौर पर गैर-आपराधिक समाधान दिए जाते हैं। यह स्पष्ट है कि हंटर के साथ अलग व्यवहार किया गया। यह राष्ट्रपति के बेटे के लिए लंबे समय से चल रही कानूनी प्रक्रिया का समापन है, जिन्होंने दिसंबर 2020 में सार्वजनिक रूप से खुलासा किया था कि वह संघीय जांच के दायरे में हैं। एक माह बाद ही बाइडन ने राष्ट्रपति पद का चुनाव जीता था। उ

हसीना के समर्थकों की रैली पर ग्रेनेड हमला मामले में जिया के बेटे, 48 अन्य बरी हुए

ढाका। बांग्लादेश के उच्च न्यायालय ने 2004 में एक राजनीतिक रैली पर ग्रेनेड हमला मामले में अपने फैसले को पलटते हुए पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के बेटे तारीक रहमान और 48 अन्य को रविवार को बरी कर दिया।यह फैसला ऐसे समय में आया है जब बांग्लादेश में राजनीतिक उठापटक देखी जा रही है। इसी साल बांग्लादेश में बड़े पैमाने पर छात्रों के विद्रोह के बाद पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस संघर्ष में सैकड़ों लोग मारे गए थे।लंदन में स्व-निर्वासन के दौरान रहमान ने जिया की बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी के कार्यवाहक अध्यक्ष के तौर पर भी काम किया और उनकी पार्टी के सत्ता में आने पर वह बांग्लादेश के अगले नेता बन सकते हैं।रहमान और 48 अन्य को शेख हसीना के समर्थकों द्वारा आयोजित एक रैली पर ग्रेनेड से हमला करने के मामले में 2018 में दोषी ठहराया गया था। इस हमले में 24 लोगों की जान चली गई थी और लगभग 300 लोग घायल हो गए थे। उस समय हसीना विपक्ष में थीं। अदालत ने अपने फैसले में 19 दोषियों को मृत्यु दंड और रहमान को आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी।

संयुक्त राष्ट्र के शीर्ष न्यायालय में जलवायु परिवर्तन से संबंधित महत्वपूर्ण मामले की सुनवाई शुरू

भाषा। हेग (नीदरलैंड)

संयुक्त राष्ट्र के शीर्ष न्यायालय ने जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने और इसके विनाशकारी प्रभाव का अधिक सामना करने वाले देशों के लिए इससे निपटने के वास्ते कानूनन आवश्यक उपायों से जुड़े एक महत्वपूर्ण मामले की सुनवाई सोमवार को शुरू की। मामले की सुनवाई दो सप्ताह तक चलेगी और इसे अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा मामला बताया जा रहा है। समुद्र के बढ़ते जल स्तर के कारण विलुप्त हो सकने के खतरे का सामना कर रहे द्वीपीय राष्ट्रों के अपना अस्तित्व बचाने की वर्षों की कवायद के बाद, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने पिछले साल अंतरराष्ट्रीय न्यायालय से जलवायु परिवर्तन के संबंध में देशों के दायित्व पर विचार मांगा था। अदालत का कोई भी फैसला गैर-बाध्यकारी परामर्श हो सकता है और अमीर देशों को जलवायु परिवर्तन के खतरे का अत्यधिक सामना कर रहे राष्ट्रों को सीधे तौर पर मदद करने के लिए मजबूर कर सकता है। प्रशांत महासागर में स्थित द्वीपीय देश वनुआतु की कानूनी टीम का नेतृत्व कर रही मागरिटा वेवरींके सिंह ने कहा, हम चाहते हैं कि अदालत इस बात की पुष्टि करे कि जलवायु को प्रभावित करने वाली गतिविधियां गैर कानूनी हैं। मौजूदा दशक में, 2023 तक समुद्र स्तर वैश्विक स्तर पर 4.3 सेंटीमीटर बढ़ा है। प्रशांत महासागर के कुछ हिस्सों में जल स्तर कहीं अधिक बढ़ रहा है। जीवाश्म ईंधन के दहन के कारण विश्व पूर्व औद्योगिक काल से 1.3 डिग्री सेल्सियस गर्म हुआ है।

शिकागो में भारतीय वाणिज्य दूतावास ने तेलंगाना के युवक के हत्यारों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की

वाशिंगटन। शिकागो में भारत के महावाणिज्य दूतावास ने तेलंगाना के एक युवक की हत्या के लिए जिम्मेदार दोषियों के खिलाफ तत्काल कार्वाई की मांग की और कहा कि वह युवक के परिवार और दोस्तों को हर संभव मदद मुहैया कराएगा। तेलंगाना के खम्मम जिले के 22 वर्षीय साईं तेजा नुकारापु की शिकागो के पास उस गैस स्टेशन पर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी, जहां वह काम करता था। निर्वाचित प्रतिनिधि मधुसूदन थाथा ने अमेरिका से मिली प्रारंभिक जानकारी का हवाला देते हुए कहा कि हमलावरों ने साईं पर शनिवार तड़के हमला किया। शिकागो स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, हम भारतीय छात्र साईं तेजा नुकारापु की हत्या से अत्यंत दुखी और स्तब्ध हैं। हम दोषियों के खिलाफ तत्काल कार्वाई की मांग करते हैं। वाणिज्य दूतावास मृतक के परिवार और दोस्तों को हर संभव मदद देगा। साईं ने भारत में बीबीए की पढ़ाई की थी, जिसके बाद वह एमबीए के लिए अमेरिका चला गया था। उसके एक रिश्तेदार ने भारत में पत्रकारों को बताया कि वह शिकागो में अंशकालिक नौकरी कर रहा था। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि वह इस खबर से बहुत दुखी हैं। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, हमारा वाणिज्य दूतावास मृतक के परिवार को हर संभव सहायता प्रदान कर रहा है। तेलंगाना में भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के विधान परिषद सदस्य मधुसूदन ने कहा कि जब घटना घटी, तब साईं ड्यूटी पर नहीं था, बल्कि अपने एक दोस्त की मदद कर रहा था।

दीर्घकालिक कोविड लंबे संक्रमण की वजह से हो सकता है

भाषा। मेलबर्न

कोरोनो वायरस संक्रमण से ग्रस्त लगभग 5-10 प्रतिशत लोग लंबे समय तक कोविड का सामना करते हैं, जिसके लक्षण तीन महीने या उससे अधिक समय तक रहते हैं। अनुसंधानकर्ताओं ने लंबे समय तक कोविड रहने की व्याख्या करने के लिए कई जैव प्रणालियां प्रस्तावित की हैं। हालांकि, ऑस्ट्रेलिया के नवीनतम मेडिकल जर्नल में प्रकाशित एक आलेख में, हमारा तर्क है कि यदि सभी नहीं तो अधिकतर लोगों में लंबे समय तक कोविड का होना शरीर में वायरस के लंबे समय तक बने रहने से जुड़ा प्रतीत होता है। महामारी की अपेक्षाकृत शुरुआती अवधि से, यह मान्यता रही है कि कुछ लोगों में, सार्स-सीओवी-2 वायरस या कम से कम उसके अवशेष लंबे समय तक विभिन्न ऊतकों और अंगों में बने रह सकते हैं। इस सिद्धांत को वायरल परसिस्टेंस के रूप में जाना जाता है। कुछ लोगों के शरीर में वायरस के अवशेषों की दीर्घकालिक उपस्थिति की बात अच्छी तरह से प्रमाणित हो चुकी है, लेकिन कम निश्चित बात यह है कि क्या कोई जीवित वायरस लंबे समय तक बने रहता है और यदि ऐसा है, तो क्या यही लंबे समय तक कोविड का कारण है। यह भेद करना महत्वपूर्ण है क्योंकि जीवित वायरस को विशिष्ट एंटीवायरल तरीकों से लक्षित किया जा सकता है जबकि मृत वायरस अवशेषों के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता। वायरल परसिस्टेंस यानी विषाणु के बने रहने के दो महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। जब यह कुछ अत्यधिक प्रतिरक्षाविहीन लोगों में होता है, तो इसे नए और काफी अलग दिखने वाले स्वरूप का स्रोत माना जाता है, जैसे कि जेएन.1। दूसरा, इसमें व्यापक आबादी में कई लोगों में तीव्र बीमारी के बाद भी लक्षण पैदा करने की क्षमता होती है। दूसरे शब्दों में, लंबे समय तक संक्रमण के कारण दीर्घकालिक कोविड हो सकता है। अनुसंधान क्या कहता है? ऐसा कोई अध्ययन तो नहीं है जो पुष्टि करता हो कि लगातार वायरस का संक्रमण दीर्घकालिक कोविड का कारण है, लेकिन सामूहिक रूप से कई हालिया प्रमुख शोधपत्र इस संबंध में एक इशारा करते हैं। फरवरी में, नेचर पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि कोविड के हल्के लक्षणों वाले बहुत से लोगों में वायरस की आनुवंशिक सामग्री, तथाकथित वायरल आरएनए उनके श्वसन मार्ग से लंबे समय तक निकलते रहे। इस वायरल आरएनए के लगातार निकलने वाले लोगों में लंबे समय तक कोविड रहने का अधिक जोखिम था। अन्य प्रमुख शोधपत्रों में रोगियों के रक्त में उनके प्रारंभिक संक्रमण के कुछ वर्ष बाद वायरल आरएनए और प्रोटीन की प्रतिकृति का पता चला। यह संकेत है कि वायरस संभवत: शरीर में कुछ छिपे हुए हिस्सों में लंबे समय तक प्रतिकृति बना रहा है, जिसमें संभवत: रक्त कोशिकाएं भी शामिल हैं। एक अन्य अध्ययन में तीव्र संक्रमण के एक से चार महीने बाद दस अलग-अलग ऊतक स्थलों और रक्त के नमूनों में वायरल आरएनए होने का पता चला।

लीडलेस पेसमेकर से मरीज को मिलेगा लाभ

पहली बार एक मरीज को बिना लीड वाला पेसमेकर लगाया गया है। प्रयागराज के एक अस्पताल में 55 वर्षीय पुरुष मरीज के दिल में ष्एवीर वीआरष् नामक पेसमेकर का इम्प्लांट किया गया। सबसे खास बात यह है कि इस प्रक्रिया के लिए न तो सर्जरी की जरूरत पड़ी और न ही शरीर पर किसी तरह का चीरा लगाया गया।यह लीडलैस पेसमेकर, पारंपरिक पेसमेकर के मुकाबले लगभग 90 प्रतिशत छोटा है। पारंपरिक पेसमेकर में छाती पर चीरा लगाना पड़ता है और त्वचा के नीचे बड़े डिवाइस को फिट करना होता है। हालांकि लीडलैस पेसमेकर में इन परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता। इस तकनीक के जरि मरीज का दिल सामान्य तरीके से धड़कता है। इसके अलावाए इसकी बैटरी की लाइफभी लगभग 17 साल है जो इसे बेहद प्रभावी बनाती है। पेसमेकर उन मरीजों के लिए होता है जिनके दिल की गति धीमी हो जाती है। पारंपरिक पेसमेकर तार वाले होते हैंए जिनमें एक या दो तार हो सकते हैं। लेकिन यह नया पेसमेकर तार रहित हैए जिसे हम लीडलेस पेसमेकर कहते हैं। इसमें न तो किसी सर्जरी की ज़रूरत होती है और न ही टांके लगाने की। इसे सीधे पैर की नस के जरिए दिल में डाला जाता है और वहीं से यह काम करता है। इस पेसमेकर के कारण न तो सर्जरी की आवश्यकता होती हैए न अस्पताल में कुछ दिन रुकने कीए और न ही मरीज की गतिशीलता ;मोबिलिटीद्ध पर असर पड़ता है। डॉ. ओमर मुस्तफ ा हसन निदेशक.इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी इलाहबाद हार्ट सेंटर प्रयागराज ने यह जानकारी दी।मरीज को पहले एक पारंपरिक पेसमेकर लगाया गया था लेकिन लीड्स के कारण उन्हें संक्रमण हो गया था। इस समस्या के बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। लीडलैस पेसमेकर मात्र पांच ग्राम की एक छोटी सी चिप हैए जिसे सीधे दिल के अंदर फिट किया जाता है।

फ्रांस में स्की रिजॉर्ट के पास बस दुर्घटना में दो लोगों की मौत, 14 अन्य घायल

मैड्रिड। दक्षिणी फ्रांस में एक स्की रिजॉर्ट के पास रविवार शाम एक बस के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से कम से कम दो लोगों की मौत हो गई और 14 अन्य घायल हो गए। स्थानीय अधिकारियों ने यह जानकारी दी। स्थानीय प्रशासन ने बताया कि पोर्टे-प्यूमोरेंस स्की रिजॉर्ट के पास जो बस दुर्घटनाग्रस्त हुई उसमें चालक सहित कुल 47 लोग सवार थे। सात लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने बताया कि शुरुआती जांच से पता चला है कि बस एक चट्टान से टकराने के कारण दुर्घटनाग्रस्त हुई, लेकिन फिलहाल हादसे का वास्तविक कारण ज्ञात नहीं है। स्थानीय अग्निशमन सेवा द्वारा जारी की गई तस्वीरों में बस को एक चट्टान पास देखा जा सकता है और टक्कर के कारण वाहन का दाहिना भाग आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त नजर आ रहा है तथा इसकी खिड़कियों के शीशे टूटकर बिखरे हुए थे। राहत कार्य में पड़ोसी देश एंडोरा और स्पेन की भी मदद ली गई और हेलीकॉप्टर भी तैनात किए गए।

ऑस्ट्रेलिया के मौजूदा दौरे पर अश्विन पर नजर

● सब जगह क्या अंतिम एकादश में मिलेगा मौका?

भाषा। नई दिल्ली

भारत के दिग्गज स्पिनर रविचंद्रन अश्विन के नाम टेस्ट क्रिकेट में 536 विकेट है लेकिन बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गई टीम में वाशिंगटन सुंदर और रविंद्र जडेजा की मौजूदगी के कारण अंतिम एकादश में उनके लिए जगह बना पाना काफी मुश्किल दिख रहा है। श्रृंखला का पहला मैच पर्थ में खेला गया था। तेज गेंदबाजों की मददगार पिच को देखते हुए टीम ने अश्विन और अनुभवी जडेजा की जगह वाशिंगटन को बेहतर बल्लेबाजी के कारण अंतिम एकादश में शामिल किया था। पांच मैचों की इस श्रृंखला के आगामी मैचों में भी अगर पिच से तेज गेंदबाजों के लिए अधिक मदद हुई तो 38 साल के अश्विन के लिए टीम में जगह बनाना काफी मुश्किल होगा। यह तभी संभव है जब टीम को दो स्पिनरों की जरूरत हुई या वाशिंगटन की गेंदबाजी काफी खराब रही। पूर्व ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह ने अश्विन और जडेजा की जगह वाशिंगटन सुंदर को चुनने को बड़ा कदम बताया। इस पूर्व दिग्गज ने कहा, न्यूजीलैंड सीरीज के दौरान वाशिंगटन ने दिखा दिया था कि वह आने वाले दिनों में अश्विन से जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार है। ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका (एसईएनए) में प्रदर्शन को पैमाना बनाए तो एकादश में अश्विन से मजबूत दावेदारी जडेजा की दिखती है। जडेजा ने इन देशों में बेहतर बल्लेबाजी की है। भारतीय टीम के पूर्व चयनकर्ता देवांग गांधी ने मौजूदा प्रदर्शन का उदाहरण देते हुए पीटीआई-भाषा से कहा, मुझे लगता है कि मौजूदा फॉर्म को ध्यान में रखा गया है। भारतीय टीम प्रबंधन एक ऐसी टीम के साथ उतरना चाहता था जो आत्मविश्वास से भरी हो। प्रबंधन पिछले रिकॉर्ड को नहीं देख रहा है। उन्होंने कहा, वाशिंगटन ने न्यूजीलैंड के खिलाफ बेहतर गेंदबाजी की और वह निचले मध्यक्रम में भरोसेमंद बल्लेबाज है। उनका टीम में होना समझ में आता है। दिलचस्प बात यह है कि एसईएनए देशों में अश्विन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2021 में एडिलेड में खेले गए दिन-रात्रि टेस्ट में आया था।

मार्श ने दिन-रात्रि टेस्ट से पहले कहा, मैं खेलने के लिए तैयार हूं

एडीलेड। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर मिशेल मार्श ने अपनी चोट से जुड़ी चिंताओं को दूर करते हुए कहा है कि वह भारत के खिलाफ छह दिसंबर से यहां शुरू होने वाले गुलाबी गेंद के दूसरे दिन-रात्रि टेस्ट में खेलने के लिए तैयार है। तैंतीस साल के मार्श को शुरुआती टेस्ट में 19.3 ओवर गेंदबाजी करने के बाद असहजता महसूस हुई थी। ऑस्ट्रेलिया ने पर्थ में पहला टेस्ट 295 रन से गंवाया। मार्श ने हालांकि एडीलेड ओवल में होने वाले दूसरे टेस्ट से पहले अपनी फिटनेस की पुष्टि की। ऑस्ट्रेलिया ने मार्श की

दिन-रात्रि टेस्ट मैच अप्रत्याशित हो सकता है, बस पूरी तरह से तैयार रहना होगाः स्मिथ

एडिलेड। भारतीय टीम के बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के शुरुआती मैच में दबदबे वाले प्रदर्शन किया लेकिन ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज स्टीव स्मिथ ने दिन-रात्रि के दूसरे टेस्ट मैच को अप्रत्याशित करार देते हुए कहा कि उनकी टीम का ध्यान गुलाबी गेंद से खेले जाने वाले टेस्ट की चुनौतियों से निपटने पर है। पांच मैचों की श्रृंखला में पहला टेस्ट बड़े अंतर से गंवाने के बाद ऑस्ट्रेलिया दबाव में है। श्रृंखला का दूसरा टेस्ट शुक्रवार से यहां खेला जाएगा। स्टार स्पोर्ट्स द्वारा जारी वीडियो में स्मिथ ने कहा, गुलाबी गेंद से दिन या रात के अलग-अलग समय पर अलग तरह की चुनौती मिलती है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहां बल्लेबाजी कर रहे है। उस समय परिस्थितियां और गेंद की स्थिति के साथ अन्य चीजे कैसी है। उन्होंने कहा, मैं ऐसे में पूरी तरह से तैयार रहना चाहता हूं। गुलाबी गेंद कई बार अप्रत्याशित हरकत करती है। ऐसे में पूरी तरह से एकाग्र रहने पर ध्यान देना होता है। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने भी गुलाबी गेंद से टेस्ट खेलने की चुनौतियों पर बात की, लेकिन उनका मानना है कि खेल की मूल बातें वहीं रहेंगी।

गंभीर आज ऑस्ट्रेलिया में भारतीय टीम से जुड़ेंगे

एडीलेड। भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर एडीलेड ओवल में होने वाले दूसरे टेस्ट से पहले ऑस्ट्रेलिया में टीम से जुड़ने के लिए तैयार है। पर्थ में श्रृंखला के पहले मैच में भारतीय टीम की बड़ी जीत के बाद वह व्यक्तिगत कारणों से स्वदेश लौट आए थे। भारतीय टीम यहां मनुका ओवल में प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ दो दिवसीय अभ्यास मैच के दौरान भारतीय टीम के साथ नहीं थे। इस मैच को खराब मौसम के कारण 46 ओवर प्रति टीम का कर दिया गया था।

भारत ने अंडर-19 एशिया कप में जापान को 211 रन से हराया

भाषा। शारजाह

कप्तान मोहम्मद अमान की नाबाद शतकीय पारी के साथ केपी कार्तिकेय और सलामी बल्लेबाज आयुष म्हात्रे के अर्धशतकों से भारत ने अंडर-19 एशिया कप के ग्रुप ए मैच में सोमवार को यहां जापान को 211 रन के बड़े अंतर से शिकस्त दी। भारत ने छह विकेट पर 339 रन बनाने के बाद जापान को आठ विकेट पर 128 रन पर रोक दिया। अमान ने 118 गेंद की नाबाद शतकीय पारी में सात चौके की मदद से 122 रन बनाए। कार्तिकेय ने 49 गेंद में 57 रन की पारी के दौरान पांच चौके और एक छक्का लगाया जबकि म्हात्रे ने 29 गेंद की आक्रामक पारी में छह चौके और चार छक्के की मदद से 54 रन बनाए। पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने पर भारतीय टीम के लिए सी आंद्रे सिद्धार्थ (38), हार्दिक राज (नाबाद 25) और वैभव सूर्यवंशी (23) ने भी उपयोगी योगदान दिए। जापान के लिए ह्युगे केल्ले और किफर यामामोतो-लेक ने दो-दो विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए जापान की टीम आठ विकेट पर 128 रन ही बना सकी। भारतीय टीम हालांकि जापान को ऑल आउट करने में विफल रहने पर निराश होगी। दो विकेट लेने वाले केल्ले ने 111 गेंद में 50 रन बनाकर एक छोर संभाले रखा। चार्ल्स हिंजे 35 रन पर नाबाद रहे। भारत के लिए, कार्तिकेय, हार्दिक राज और चेतन शर्मा ने दो-दो विकेट लिए। भारत टूर्नामेंट के शुरुआती मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से 43 रनों से हार गया था। टीम बुधवार को ग्रुप चरण के आखिरी मैच में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) से खेलेगी। प्रत्येक समूह से शीर्ष दो टीमें छह दिसंबर को होने वाले सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेगी। टूर्नामेंट का फाइनल आठ दिसंबर को होगा।

रोहित ने प्रशंसक का ऑटोग्राफ का 10 साल का इंतजार खत्म किया

कैनबरा। रोहित शर्मा के एक उत्साही प्रशंसक ने मनुका ओवल में प्रवेश किया, कई बार उनका नाम पुकारा और फिर भारतीय कप्तान का ध्यान आकर्षित करने के लिए मुंबई चा राजा (मुंबई का राजा) का नारा लगाया और फिर उनका ऑटोग्राफ लिया जिसका उसे 10 साल से इंतजार था। प्रशंसक की सारी मेहनत और रणनीति सार्थक साबित हुई क्योंकि मुस्कुराते हुए रोहित ने रविवार को यहां प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ अभ्यास मैच में भारत की आसान जीत के बाद उसका दशक पुराना इंतजार खत्म करते हुए उसे ऑटोग्राफ दिया।प्रशंसक ने स्टैंड से गुहार लगाते हुए कहा, रोहित भाई प्लीज, 10 साल हो गए यार। रोहित भाई मुंबई चा राजा। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने भी इस पर ध्यान दिया।बीसीसीआई ने अपने सोशल मीडिया पेज पर इस वीडियो को साझा किया, अंततः एक दशक पुराना इंतजार खत्म हुआ। एक प्रशंसक ने रोहित शर्मा का ऑटोग्राफ लेने के लिए 10 साल इंतजार किया और वह उसका भाग्यशाली दिन था। बीसीसीआई द्वारा जारी किए गए वीडियो में रोहित प्रशंसकों से बातचीत करते हुए तथा बल्ले और जर्सी पर ऑटोग्राफ देते हुए दिखाई दे रहे थे जब तक कि इस प्रशंसक ने स्टेडियम में मौजूद सभी का ध्यान अपनी ओर नहीं खींच लिया।भारत ने अभ्यास मैच में प्रधानमंत्री एकादश को छह विकेट से हराया।

राष्ट्रीय हॉकी चैंपियनशिपः चंडीगढ़, मिजोरम, पंजाब और मणिपुर जीते

सिकंदराबाद। हॉकी चंडीगढ़, हॉकी मिजोरम, हॉकी पंजाब, मणिपुर हॉकी और हॉकी आंध्र प्रदेश ने सोमवार को यहां 14वी हॉकी इंडिया सब जूनियर महिला राष्ट्रीय चैंपियनशिप के छठे दिन जीत दर्ज की।हॉकी चंडीगढ़ ने पूल ई के मुकाबले में हॉकी अरुणाचल को 3-1 से हराया जबकि हॉकी मिजोरम ने केरल हॉकी को 7-0 से शिकस्त दी।पूल जी मे हॉकी पंजाब ने असम हॉकी को 9-0 से रौंदा जबकि मणिपुर हॉकी ने पूल ए मे दादरा एवं नगर हवेली तथा दमन एवं दीव को 5-1 से शिकस्त दी।पूल एच मे हॉकी आंध्र प्रदेश ने पुडुचेरी हॉकी को 26-1 से रौंद दिया।

ढिल्लों पैरालंपिक पदक के लिए प्रकाश पादुकोण अकादमी में प्रशिक्षण लेंगे

नई दिल्ली। तीन बार के विश्व चैम्पियन पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी तरुण ढिल्लों 2028 में लॉस एंजिल्स मे होने वाले पैरालंपिक खेलो में पदक जीतने के सपने को साकार करने के लिए बेंगलुरु स्थिति प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी मे प्रशिक्षण लेंगे। तीस साल के ढिल्लों एकल में एसएल4 वर्ग में चुनौती पेश करते है और उन्होंने पैरालंपिक पदक के अलावा इस खेल के लगभग सभी बड़े खिताब जीते है। ढिल्लों ने 2013, 2015 और 2019 विश्व चैम्पियनशिप के स्वर्ण पदक के अलावा कुमार नितेश के साथ हांगझोऊ एशियाई पैरा खेलों में एसएल3-एसएल4 वर्ग मे पुरुष युगल का स्वर्ण पदक जीता है।

उत्तराखंड राष्ट्रीय खेलों में चार प्रदर्शनी खेल शामिल होंगे

नई दिल्ली। उत्तराखंड में 28 जनवरी से 14 फरवरी 2025 तक होने वाले राष्ट्रीय खेलो के 38वे सत्र मे 32 मुख्य और चार प्रदर्शनी खेलो का आयोजन किया जाएगा जिसमें योगासन और मल्लखंभ भी शामिल है। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) और उत्तराखंड राज्य ओलंपिक संघ (यूएसओए) के बीच 2014 मे हस्ताक्षरित मूल सहमति पत्र (एमओयू) के अनुसार इन खेलो के दौरान 34 खेलो का आयोजन होना है। हालांकि आईओए की अध्यक्ष पीटी उषा और खेलो की तकनीकी संचालन समिति (जीटीसीसी) ने हाल में अपनी बैठक मे 32 मुख्य खेलो और चार प्रदर्शनी खेलो को स्वीकृति दी।

एमबापे ने गोल दागा, रियाल मैड्रिड ने मैच जीता

मैड्रिड। किलियन एमबापे आखिरकार गोल करने में सफल रहे जिससे रियाल मैड्रिड ने स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लिगा मे गेटाफे को 2-0 से हराया।एमबापे इस सत्र के शुरू मे रियाल मैड्रिड से जुड़े थे लेकिन अपने निराशाजनक प्रदर्शन के कारण वह आलोचकों के निशाने पर थे। उन्होंने सैंटियागो बर्नब्यू स्टेडियम मे 38 वे मिनट मे गोल किया। बुधवार को चैंपियंस लीग मे लिवरपूल के खिलाफ मैच मे एमबापे का प्रदर्शन निराशाजनक रहा था।

पूर्व विश्व स्नूकर चैंपियन टेरी ग्रिफिथ्स का निधन

वेल्स। क्वालीफायर के रूप में विश्व चैंपियनशिप जीतने वाले वेल्स के स्नूकर खिलाड़ी टेरी ग्रिफिथ्स का निधन हो गया। ग्रिफिथ्स 77 बरस के थे। उन्होंने स्टीफन हेंड्री और मार्क विलियम्स जैसे शीर्ष खिलाड़ियों को कोचिंग भी दी।विश्व स्नूकर ने सोमवार तड़के ग्रिफिथ्स के निधन की घोषणा की। उनके बेटे वेन ने फेसबुक पर एक पोस्ट मे लिखा कि उनके पिता का रविवार को उनके परिवार के सदस्यों की मौजूदगी मे निधन हो गया और वह डिमेंशिया रोग से जूझ रहे थे।

बुमराह महानतम तेज गेंदबाजों के रूप में जाने जाएंगेः हेड

भाषा। एडिलेड

ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाज ट्रैविस हेड को लगता है कि जसप्रीत बुमराह इस खेल के महानतम तेज गेंदबाजों में से एक के रूप में जाने जाएंगे और उन्होंने कहा कि वह बड़े गर्व से अपने पोते-पोतियों को भारतीय तेज गेंदबाज का सामना करने की कठिन चुनौती के बारे में बताएंगे। बुमराह ने बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के पर्थ में खेले गए पहले टेस्ट मैच में शानदार प्रदर्शन किया जिससे भारत यह मैच 295 रन से जीतने में सफल रहा। हेड ने सोमवार को यहां संवाददाताओं से कहा, जसप्रीत को शायद इस खेल को खेलने वाले सबसे महान तेज गेंदबाजों में से एक के रूप में जाना जाएगा। अभी हम यह पता लग रहे हैं कि वह हमारे लिए कितना चुनौती पूर्ण हो सकता है। उसके खिलाफ खेलना अच्छा है। उन्होंने कहा, जब मैं भविष्य में अपने करियर पर नजर डालूंगा तो बड़े गर्व से अपने पोते पोतियों को बताऊंगा कि मैंने उनका सामना किया था। इसलिए उनके खिलाफ खेलना बुरा नहीं है। उम्मीद है मुझे आगे भी उनके खिलाफ खेलने का मौका मिलेगा लेकिन उनका सामना करना चुनौती पूर्ण है। हेड पर्थ में अर्धशतक बनाने वाले एकमात्र ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज थे। शीर्ष क्रम के बल्लेबाज स्टीव स्मिथ, उस्मान ख्वाजा और मार्नस लाबुशेन रन बनाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, लेकिन मध्यक्रम के इस विस्फोटक बल्लेबाज को यकीन है कि उनके साथी टिप्स के लिए उनसे संपर्क नहीं करेंगे।उन्होंने कहा, यह निश्चित है कि वे मुझसे बल्लेबाजी के टिप्स नहीं लेंगे। प्रत्येक खिलाड़ी का खेलने काअपना तरीका होता है। दोनों टीमें अब शुक्रवार से एडिलेड में उसी स्थान पर गुलाबी गेंद का टेस्ट खेलेंगी जहां भारत 2020 में 36 रन पर आउट हो गया था। हेड ने उस मैच को याद करते हुए कहा, मुझे याद है कि वह मैच जल्दी समाप्त हो गया था। हमने उस मैच का भरपूर आनंद लिया था। फिर से ऐसा करना अच्छा होगा लेकिन मुझे नहीं लगता कि अगले मैच में ऐसा होगा। हेड ने इसके साथ ही कहा कि ऑस्ट्रेलिया की संघर्षरत बल्लेबाजी और गेंदबाजी इकाई के बीच किसी तरह का मतभेद नहीं है। पहले टेस्ट के दौरान जोश हेज़लवुड की एक टिप्पणी के बाद टीम के भीतर संभावित मतभेद की आशंका व्यक्त की जाने लगी थी। उन्होंने कहा, हमें दोनों विभाग (बल्लेबाजी और गेंदबाजी) से काफी उम्मीदें हैं और यह एक बहुत ही व्यक्तिगत खेल है।

बुमराह में अच्छा कप्तान बनने के सभी गुण : पुजारा

नई दिल्ली। स्टार बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा का मानना है कि तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह मे अच्छा कप्तान बनने के सभी गुण मौजूद है और भारत को रोहित शर्मा के इस पद से हटने के बाद उन्हें कप्तानी के दीर्घकालिक विकल्प के रूप में देखना चाहिए।बुमराह ने रोहित की अनुपस्थिति मे ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में अपने नेतृत्वकौशल का अच्छा नमूना पेश किया था और भारत को बड़ी जीत दिलाने मे अहम भूमिका निभाई थी।पुजारा ने ईएसपीएन क्रिकइंफो से कहा, इसमे कोई संदेह नही कि वह (दीर्घकालिक कप्तानी का व्यवहारिक विकल्प) है। भारत जब घरेलू धरती पर श्रृंखला मे करारी हार झेलने के बाद ऑस्ट्रेलिया मे पहला टेस्ट मैच खेल रहा था तब इन मुश्किल परिस्थितियो मे उन्होने अपने नेतृत्वकौशल की शानदार बानगी पेश की। उन्होंने कहा, मेरा मानना है कि उनमें टीम का नेतृत्व करने की क्षमता है और वह एक टीम मैन हैं। आप उन्हें देखिए, वह कभी भी केवल अपने बारे मे बात नही करते, वह टीम और अन्य खिलाड़ियों के बारे मे बात करते है। भारत को न्यूजीलैंड के हाथों घरेलू श्रृंखला मे 0-3 से हार का सामना करना पड़ा, जिससे लगातार तीसरी बार विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में जगह बनाने की उसकी उम्मीदों को भी काफी झटका लगा।पुजारा ने कहा, कई बार ऐसा होता है जब खिलाड़ियों को सलाह की ज़रूरत नही होती और वह इसे स्वीकार करते है। उनका मानना है कि अगर कोई अनुभवी खिलाड़ी है तो वह शांत रहेगा।

सिराज ने फॉर्म में वापसी का श्रेय बुमराह को दिया

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पर्थ टेस्ट मे भारत की शानदार जीत मे पांच विकेट लेने वाले मोहम्मद सिराज ने न्यूजीलैंड के खिलाफ लचर प्रदर्शन के बाद फॉर्म मे वापसी का श्रेय भारतीय तेज गेंदबाजी के अगुआ जसप्रीत बुमराह को दिया।यह 30 वर्षीय तेज गेंदबाज घरेलू सत्र मे विकेट लेने के लिए जूझ रहा था। उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाफ जो दो मैच खेले उनमें वह केवल दो विकेट ले पाए थे लेकिन वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट मैच मे वापसी करने मे सफल रहे। सिराज ने कहा कि पहले टेस्ट मे कार्यवाहक कप्तान और दुनिया के नंबर एक गेंदबाज बुमराह के साथ ऑस्ट्रेलिया के दौरे से पहले बात करने से उन्हें फायदा मिला।सिराज ने प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ अभ्यास मैच मे भारत की छह विकेट से जीत के बाद कहा, मै हमेशा जस्सी भाई (बुमराह) से बात करता रहता हूं।

क्विक न्यूज

एशियाई महिला हैंडबॉल चैंपियनशिप में हांगकांग के खिलाफ अभियान शुरू करेगा मेजबान भारत

नई दिल्ली। मेजबान भारत मंगलवार से यहां शुरू हो रही 20वी एशियाई महिला हैंडबॉल चैंपियनशिप मे अपने पहले मैच मे हांगकांग के खिलाफ उतरेगा तो उसकी नजरें प्रतियोगिता मे जीत के साथ शुरुआत करने पर टिकी होंगी।भारत पहली बार इस टूर्नामेंट की मेजबानी कर रहा है और दीक्षा कुमारी की कप्तानी वाली 25 सदस्ईय टीम को एशिया की कुछ शीर्ष टीमों के खिलाफ कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा। भारत को ग्रुप बी मे जापान, ईरान और हांगकांग जैसी मजबूत टीमों के साथ रखा गया है। हांगकांग के खिलाफ पहले मैच के बाद भारत यहां इंदिरा गांधी एरेना में चार दिसंबर को ईरान और फिर छह दिसंबर को जापान से भिड़ेगा।प्रत्येक ग्रुप से शीर्ष दो टीम सेमीफाइनल में जगह बनाएंगी। टूर्नामेंट की शीर्ष चार टीम को 2025 विश्व महिला हैंडबॉल चैंपियनशिप मे जगह मिलेगी।टीम ने मुख्य कोच सचिन चौधरी के मार्गदर्शन मे गुजरात के गांधीनगर मे एनसीओ साइ केंद्र मे कड़े ट्रेनिंग शिविर मे हिस्सा लेकर प्रतियोगिता की तैयारी की। एशिया महिला हैंडबॉल चैंपियनशिप 2022 मे भी भारत का मार्गदर्शन करने वाले सचिन ने एक विज्ञप्ति में कहा, ट्रेनिंग शिविर मे हमारा ध्यान अपने पिछले मुकाबलों की कमियों को दूर करने और एक एकजुट, एकीकृत टीम बनाने पर था।

द्रविड़ ने शुरू किया प्रेरक कैंपेन टुगेदर वी सोअर

मुंबई। देश की प्रमुख वित्तीय सेवा प्रदाताओं मे से एक श्रीराम ग्रुप की प्रमुख कंपनी श्रीराम फइनेंस ने टुगेदर वी सोअर शिर्षित एक बेहद प्रेरक ब्रांड कैंपेन प्रारंभ किया है। यह कैंपेन, परस्पर संबंध और एकता की ताकत पर प्रकाश डालते हुएए श्रीराम फाइनेंस की भारत की उम्मीदों के साथ साझेदारी की प्रतिबद्धता दर्शाता है।इस कैंपेन का उद्देश्य इस भावना का जश्न मनाना और राहुल द्रविड़ के अपने जीवन के एक अंश के साथ साझेदारी को आगे बढ़ने के साधन के रूप में दर्शाना है। संदेश स्पष्ट है टुगेदर वी सोअर अपने ग्राहकों के साथ संबंधों को मज़बूत बनाकर हम उन्हें अपनी शक्ति को पहचान कर अपने सपनों को हासिल करने में उनकी मदद करते हैं। श्रीराम फाइनेंस में मार्केटिंग की एग्ज़ेक्युटिव डायरेक्टर के रूप में कार्यरत एलिज़ाबेथ वेंकटरमन ने अभियान के बारे में जानकारी साझा करते हुए कहा टुगेदर वी सोअर हर भारतीय के साथ खड़े होने और उनकी आकांक्षाओं का समर्थन करने के हमारे वादे का प्रतीक है चाहे वह फिक्स्ड डेपॉज़िट्स हो वाहनों की फाइनेंसिंग हो छोटे व्यवसायों के लोन हों या गोल्ड या पर्सनल लोन आदि के माध्यम से धन तक त्वरित पहुँच प्रदान करना हो। सात भाषाओं में तैयार हमारा रचनात्मक दृष्टिकोण हमें पूरे देश में विविध दर्शकों के साथ गहराई से जुड़ने में मदद करेगा ।

डब्ल्यूएफआई ने रेलवे के पहलवानों को अपने राज्यों का प्रतिनिधित्व करने की छूट दी

नई दिल्ली। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) रेलवे के पहलवानो को आगामी राष्ट्रीय चैंपियनशिप मे अपने-अपने राज्यो का प्रतिनिधित्व करने की अनुमति देगा, क्योंकि इस विभागीय टीम ने वार्षिक प्रतियोगिता के लिए प्रविष्टियां नही भेजी है। डब्ल्यूएफआई रेलवे के इस फैसले पर अपनी एजीएम (वार्षिक आम बैठक) मे चर्चा करेगा। डब्ल्यूएफआई के महत्वपूर्ण संबद्ध निकायो में से एक रेलवे खेल संवर्धन बोर्ड (आरएसपीबी) का प्रतिनिधित्व अतीत मे कई प्रतिष्ठित पहलवानो ने किया है लेकिन छह दिसंबर से बेंगलुरु मे शुरू होने वाली राष्ट्रीय चैंपियनशिप के लिए कोई टीम नही चुनी गई, क्योंकि राष्ट्रीय महासंघ निलंबित है। फ्रीस्टाइल और ग्रीको रोमन सहित 81 पुरुष पहलवान रेलवे से जुड़े हुए है। इन पहलवानो के लिए एक कोचिंग शिविर वर्तमान मे कपूरथला मे चल रहा है लेकिन राष्ट्रीय चैंपियनशिप के लिए टीमो का चयन करने के लिए ट्रायल आयोजित नही किए गए जिससे एथलीट हैरान है।

सबसे बड़ी टैलेंट हंट देगा युवतियों को मौका

मुंबई। मिस दिवा 2024 ने खास तौर पर युवतियों के लिए भारत की सबसे बड़ी फैशन टैलेंट हंट प्रतियोगिता की घोषणा की है। यह अपनी तरह का ऐसा पहला आयोजन है जो इसके पहले भारत में देखने को नहीं मिला होगा। यह कॉन्टेस्ट फैशन इंडस्ट्री में युवतियों की प्रतिभा को सम्मानित करने और उसे मंच देकर आगे बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। इस प्रतिष्ठित मंच के सहारे प्रतिभाशाली युवतियांअपनी स्किल, क्रिएटिविटी और जुनून को सभी के सामने पेश कर सकती हैं। स्ट। मिस दिवा 2024 उन युवतियों को मंच देगा जो आगे बढ़ने के लिए इच्छुक हैं और तीन अहम कैटगरी में खुद को साबित करने के लिए तैयार हैं। ये तीन कैटगरी हैंरू टॉप मॉडल , मिस दिवा सुपरानेशनल 2024, फैशन डिज़ाइनर । मिस दिवा फैशन डिज़ाइनर 2024 और फैशन कॉन्टेन्ट क्रिएटर । मिस दिवा कॉन्टेन्ट क्रिएटर 2024। हर कैटगरी में भाग लेने वाली युवतियों को इंडस्ट्री के दिग्गज मेंटर करेंगे और इससे यह पक्का होगा कि सभी प्रतिभागियों को पूरा गाइडेंस और सपोर्ट मिले। इस शानदार पहल के जरिए हम भारत की प्रतिभाशाली युवतियों को मंच देकर और उन्हें चर्चा में लाकर भारत में फैशन इंडस्ट्री को नए सिरे से परिभाषित भी करना चाहते हैं।

सील्स ने 15.5 ओवर में पांच रन देकर चार विकेट लिए, वेस्टइंडीज मजबूत स्थिति में

किंग्स्टन (जमैका)। तेज गेंदबाज जेडन सील्स ने 15.5 ओवर मे केवल पांच रन देकर चार विकेट लिए जिससे वेस्टइंडीज ने बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे टेस्ट क्रिकेट मैच के दूसरे दिन अपना पलड़ा भारी रखा। सील्स ने कुल 10 मेडन ओवर फेंके और बांग्लादेश को पहली पारी मे 71.5 ओवर मे 164 रन पर आउट करने मे अहम भूमिका निभाई। वेस्टइंडीज ने इसके जवाब मे दूसरे दिन का खेल समाप्त होने तक अपनी पहली पारी मे एक विकेट पर 70 रन बनाए और वह बांग्लादेश से 94 रन पीछे है। स्टंप उखड़ने के समय कप्तान क्रैग ब्रैथवेट 33 रन और कीसी कार्टी 19 रन बनाकर खेल रहे थे। बांग्लादेश को एकमात्र सफलता मिकाइल लुइस के रूप मे मिली जिन्हें नाहिद राणा ने विकेट के पीछे कैच कराया।

मरे को इसलिए कोच नियुक्त किया क्योंकि मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता हूंः जोकोविच

ब्यूनस आयर्स। दिग्गज टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने कहा कि उन्होंने अपने पूर्व प्रतिद्वंद्वी एंडी मरे को इसलिए अपना कोच नियुक्त किया क्योंकि वह ब्रिटेन के इस पूर्व खिलाड़ी को अच्छी तरह से जानते है।पिछले छह महीने से बिना कोच के खेलने वाले जोकोविच अर्जेंटीना के स्टार खिलाड़ी जुआन मार्टिन डेल पोत्रो के लिए विदाई मैच खेलने के लिए यहां आए है। उन्होंने और मे ने पिछले सप्ताह घोषणा की थी कि वे जनवरी में ऑस्ट्रेलियाई ओपन के लिए एक साथ काम करने की योजना बना रहे है। जोकोविच ने डेल पोत्रो के खिलाफ मैच से पहले संवाददाता सम्मेलन मे स्पेनिश मे कहा, जब मै जूनियर वर्ग मे खेला करता था तब से मैंने उनके खिलाफ काफी टेनिस खेली है और ऐसे बहुत कम खिलाड़ी है जिन्होंने कई ग्रैंड स्लैम खिताब जीते है।

ड्रॉ की हैट्रिक के बाद गुकेश और लिरेन की निगाहें जीत पर

● विश्व शतरंज

सिंगापुर। भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश और गत चैंपियन डिंग लिरेन मंगलवार को यहां विश्व शतरंज चैंपियनशिप के सातवें दौर में जब आमने-सामने होंगे तो उनका लक्ष्य लगातार तीन बाजियां ड्रॉ खेलने के बाद जीत हासिल करना होगा। शतरंज के कई जानकारों की नजर में खिताब के प्रबल दावेदार 18 वर्षीय गुकेश अभी तक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाए हैं और उन्होंने अभी तक किसी तरह का जोखिम लेना उचित नहीं समझा है। दोनों खिलाड़ी अभी तीन अंक लेकर बराबरी पर हैं।गुकेश सफेद मोहरों से खेलने के बावजूद पहली बाजी हार गए थे लेकिन दूसरी बाजी इस भारतीय खिलाड़ी के लिए आत्मविश्वास बढ़ाने वाली थी क्योंकि चीन के खिलाड़ी ने जीत के लिए किसी तरह का प्रयास नहीं किया और आसान ड्रॉ होने दिया। गुकेश ने लिरेन की गलती का फायदा उठाकर तीसरी बाजी जीतकर अच्छी वापसी की लेकिन इसके बाद अगली तीन बाजियों में किसी भी खिलाड़ी ने जोखिम लेना उचित नहीं समझा और आपस में अंक बांटे। यह मुकाबला 14 दौर का है तथा जो भी खिलाड़ी पहले 7.5 अंक बनाएगा वह विश्व चैंपियन बनेगा।अभी तक दोनों खिलाड़ियों ने जिस तरह का खेल दिखाया है उसे देखते हुए किसी को भी प्रबल दावेदार नहीं माना जा सकता। गुकेश मंगलवार को सातवीं बाजी सफेद मोहरों से खेलेंगे। वह इसका फायदा उठाकर चीन के खिलाड़ी पर दबाव बनाना चाहेंगे। गुकेश अगली तीन बाजियों में से दो बाजी सफेद मोहरों से खेलेंगे और अगर उन्हें विश्व चैंपियन बनने की तरफ मजबूत कदम बढ़ाने हैं तो उन्हें इनमें अपना सर्वश्रेष्ठ खेल दिखाना होगा।

प्रज्ञानानंदा, एरिगैसी, वैशाली सहित पांच भारतीय फिडे की शीर्ष प्रतियोगिता मे भाग लेंगे

लुसाने। अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ (फिडे) ने सोमवार को कहा कि आगामी 2024 फिडे विश्व रैपिड और ब्लिट्ज चैंपियनशिप में आर प्रज्ञानानंदा, अर्जुन एरिगैसी और आर वैशाली सहित भारत के पांच खिलाड़ी चुनौती पेश करेंगे। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता 26-31 दिसंबर तक न्यूयॉर्क शहर मे आयोजित की जाएगी। पहली बार इस टूर्नामेंट का उत्तरी अमेरिका मे आयोजन हो रहा है। इसमे कोनेरू हम्पी और द्रोणावल्ली हरिका भी भारतीय चुनौती को पेश करेंगी। फिडे ने इसे अब तक का सबसे मजबूत सत्र करार देते हुए कहा कि इसमे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी भाग लेंगे। शीर्ष शतरंज संस्था ने एक्स पर लिखा कि विश्व के तीसरे नंबर के अमेरिका के ग्रैंड मास्टर हिकारू नाकामुरा ने भी टूर्नामेंट मे भाग लेने की पुष्टि की है। फिडे ने बताया, 26 से 31 दिसंबर तक दुनिया के 300 से ज़्यादा बेहतरीन खिलाड़ी न्यूयॉर्क शहर मे 1.5 मिलियन डॉलर की पुरस्कार राशि के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। इसमे भारत के शीर्ष खिलाड़ियों के अलावा, दुनिया भर

लखनऊ स्पोर्ट्स कॉलेज ने जीती चकई दादा स्मारक सब जूनियर हॉकी

लखनऊ। खिलाड़ियों के तालमेल भरे खेल की सहायता से लखनऊ स्पोर्ट्स कॉलेज ने प्रथम विजय मित्र द्विवेदी चकई दादा स्मारक सब जूनियर हॉकी प्रतियोगिता का खिताब जमन लाल शर्मा इलेवन को 7-1 से हराकर जीत लिया।केडी सिंह बाबू सोसायटी के तत्वावधान में सीबी गुप्त मैदान पर खेले गए फाइनल में लखनऊ स्पोर्ट्स कॉलेज की जीत में अब्दुल रहमान ने तीन गोल दागे। उन्होंने खेल के 42वेंए 55वें व 60वें मिनट में प्रतिद्वंद्वी के डिफेंस में सेंध लगाई।इससे पूर्व खेल शुरू होने के बाद अमन ने मैच का पहला गोल पांचवें मिनट में दागा। जवाब में जमन लाल शर्मा इलेवन को खेल के 10वें मिनट में मिले पेनाल्टी कार्नर पर आमिर ने गोल करते हुए बराबरी दिलाई।फिर स्पोर्ट्स कॉलेज ने प्रतिद्वंद्वी को गोल करने के मौके नहीं दिए। वहीं अमन ने खेल के 28वें मिनट में मिले पेनाल्टी कार्नर पर अपना दूसरा गोल दागा। जीत में अनस अंसारी ने 18वें व 47वें मिनट में मैदानी गोल किए। समापन समारोह में मुख्य अतिथि टीपी हवेलिया अध्यक्षए कराटे एसोसिएशन ऑफ यूपी के साथ विशिष्ट अतिथि यूजिन पाल ;सचिवए यूपी तलवारबाजी एसोसिएशनद्ध ने पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर ओलंपियन सैयद अली व सुजीत कुमार इंटरनेशनल प्लेयर रजिया जैदी, मुकुल लाल, संजय तिवारी, शीराज आलम, खुर्शीद अहमद, संजय द्विवेदी, राकेश टंडन भी मौजूद थे।

कॅरियर लायंस की जीत में अफसर सिद्दीकी का आतिशी शतक

लखनऊ। मैन ऑफ द मैच अफ्सर सिद्दीकी-101 के आतिशी शतक से कॅरियर लायंस ने तृतीय अधीर दुबे स्मारक टी-20 क्रिकेट टूर्नामेंट में स्मैश क्लब को 79 रन से हराया।पंडित रास बिहारी तिवारी स्टेडियम पर कॅरियर लायंस ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवर में 2 विकेट पर 200 रन बनाए। सलामी बल्लेबाज अफ्सर सिद्दीकी-101 ने आतिशी शतक लगाया। उनके जोड़ीदार नदीम ने 63 रन की पारी खेली। दोनों ने पहले विकेट के लिए 135 रन की शतकीय साझेदारी की। जवाब में स्मैश क्लब 7 विकेट पर 121 रन ही बना सका। गोल्डी सिंह 61 ने रन बनाए। कॅरियर लायंस से पुनीत वाधवानी ने 19 रन देकर चार विकेट की सफलता पाई। दूसरे मैच में तारिक क्रिकेट क्लब ने मैन ऑफद मैच जसविंदर सिंह-51 की अर्धशतकीय पारी की सहायता से लाइव टी एक्सप्रेस को 24 रन से शिकस्त दी। तारिक क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए आठ विकेट पर 181 रन बनाए। सलामी बल्लेबाज जसविंदर सिंह-51 रन, प्रियेश ने 24 व विनोद सिंह ने 19 रन जोड़े। जवाब में लाइव टीवी एक्सप्रेस निर्धारित ओवर में 157 रन पर आल आउट हो गया। साकेत मिश्रा 59 के अर्धशतक के अलावा पीयूष कुसुमवाल 32 व पीयूष 20 रन जोड़े। अमित पाठक, तारिक व अरुण ने दो-दो विकेट साझा किए।

100 साइकिलिस्ट लखनऊ से अयोध्या रवाना

लखनऊ। हरियाली, पर्यावरण संरक्षणए स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए साइकिलिंग अपनाने का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के संदेश के साथ 1700 किमी लंबी साइकिल रैली के अंतिम चरण की शुरुआत सोमवार को लखनऊ से हुई। पुणे से अयोध्या तक की 1700 किमी लंबी साइकिल रैली में शामिल 100 साइकिलिस्ट को सोमवार युबह लखनऊ के 1090 चौराहे पर स्पोर्ट्स नेटवर्क इंडिया के निदेशक व पेडलयात्री साइकिलिंग एसोसिएशन के महासचिव आनंद किशोर पांडेय ने हरी झंडी दिखाई। बताते चले कि 23 नवंबर को पुणे से शुरू हुई यह रैली 2 दिसंबर 2024 को दोपहर 2 बजे अयोध्या में पूरी हो गई। इस साल रैली में देश के कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों जैसे शिर्डी, उज्जैन,महेश्वरए झांसीए और लखनऊ को शामिल किया गया है। इस अवसर पर रैली के आयोजक इंडो एथलेटिक्स सोसायटी के संस्थापक सदस्य गजानन खरे ने कहा कि लखनऊ आकर हमें बेहद खुशी हो रही है। उन्होंने बताया कि संस्था के 35,000 सदस्य हैं और यह भारत की सबसे बड़ी स्वास्थ्य और खेल संस्थाओं में से एक है।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोनः 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादकः शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः विजय प्रकाश सिंह।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।